(उपन्यास - कहानी

प्रस्तावना

यह बात निर्विवादरूप से मानी जा चुकी है कि कथा-साहित्य के क्षेत्र में रूसी लेखक संसार के अन्य सब देशों के लेखकों से बढ़े-चढ़े रहे हैं, और रूसी लेखकों में भी डास्टाएवस्की, टाल्सटाय और टुर्गनेव का स्थान सबसे आगे है। प्रस्तुत रचना टाल्सटाय की सर्वश्रेष्ठ कृति 'आना केरेनिना' का संक्षिप्त छायानुवाद है। कुछ विद्वानों की सम्मति में 'आना केरेनिना' कला की दृष्टि से संसार का सर्वोत्तम उपन्यास है। आना के समान आदरणीय, रहस्यमयी नारी का जो मार्मिक, रोमाञ्चकारी मनोवैज्ञानिक और साथ ही जीवन की गहन वास्तविकता से ओत-प्रोत चरित्र-चित्रण टाल्सटाय ने किया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है।

सरस्वती-

१

आब्लान्सकी परिवार में बड़ी गड़बड़ी मची हुई थी। पत्नी को इस बात का पता लग गया था कि उन लोगों की भूतपूर्व फ्रेंच गवर्नेस के साथ उसके पति का अवैध सम्बन्ध स्थापित है। उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर स्पष्ट शब्दों में इस बात की घोषणा कर दी थी कि जिस मकान में उसका पति रहेगा, उस मकान में वह कदापि नहीं रहेगी। तीन दिन से यही परिस्थिति चली आ रही थी, जिसके कारण केवल पति-पत्नी ही नहीं, बल्कि घर के सब लोग कष्ट पा रहे थे। परिवार में रहनेवाले सभी व्यक्ति यह अनुभव कर रहे थे कि वे लोग किसी घर में नहीं, बल्कि एक मुसाफिरखाने में हैं। घर की मालकिन (आब्लान्सकी की पत्नी) सब समय अपने कमरे में बन्द पड़ी रहती थी, उसका पति दिन भर घर से बाहर रहता था; अँगरेज गवर्नेस घर के प्रबन्ध-कर्त्री से उलझती रहती थी, और उसने अपनी एक परिचित स्त्री को एक पत्र लिखकर उससे यह पूछा था कि किसी दूसरे स्थान में उसकी नौकरी का प्रबन्ध हो सकता है या नहीं। रसोइया दो दिन पहले ठीक रात्रि-भोजन के समय घर छोड़कर चला गया था, और अभी तक लौटा नहीं था। रसोई करनेवाली नौकरानी और कोचमैन ने नौकरी छोड़ने की नोटिस दे दी थी।

पत्नी से मनमुटाव होने के तीसरे दिन प्रिन्स स्टीफेन आर्का-देविच आब्लान्सकी उर्फ स्टीवा प्रातःकाल अपने नियमित समय पर—आठ बजे—सोकर उठा। आज वह अपनी पत्नी के पास सोया हुआ नहीं था, बल्कि अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में एक चमड़े से मढ़ी हुई स्प्रिंगदार आरामकोंची पर लेटा हुआ था। उसने करवट बदलकर, एक तकिये को बगल में दबाकर फिर एक बार सोने की चेष्टा की। पर सहसा उसने आँखें खोलीं और उठ बैठा।

उसने एक बड़ा 'मधुर' स्वप्न देखा था और उसकी अस्पष्ट स्मृति उसके मन में एक मीठी भावना का संचार कर रही थी। स्वप्न की

१

आब्लान्स्की परिवार में बड़ी गड़बड़ी मची हुई थी। पत्नी को इस बात का पता लग गया था कि उन लोगों की भूतपूर्व फ्रेंच गवर्नेस के साथ उसके पति का अवैध सम्बन्ध स्थापित है। उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर स्पष्ट शब्दों में इस बात की घोषणा कर दी थी कि जिस मकान में उसका पति रहेगा, उस मकान में वह कदापि नहीं रहेगी। तीन दिन से यही परिस्थिति चली आ रही थी, जिसके कारण केवल पति-पत्नी ही नहीं, बल्कि घर के सब लोग कष्ट पा रहे थे। परिवार में रहनेवाले सभी व्यक्ति यह अनुभव कर रहे थे कि वे लोग किसी घर में नहीं, बल्कि एक मुसाफिरखाने में हैं। घर की मालकिन (आब्लान्स्की की पत्नी) सब समय अपने कमरे में बन्द पड़ी रहती थी, उसका पति दिन भर घर से बाहर रहता था; अँगरेज गवर्नेस घर की प्रबन्ध-कर्त्री से उलझती रहती थी, और उसने अपनी एक परिचित स्त्री को एक पत्र लिखकर उससे यह पूछा था कि किसी दूसरे स्थान में उसकी नौकरी का प्रबन्ध हो सकता है या नहीं। रसोइया दो दिन पहले ठीक रात्रि-भोजन के समय घर छोड़कर चला गया था, और अभी तक लौटा नहीं था। रसोई करनेवाली नौकरानी और कोचमैन ने नौकरी छोड़ने की नोटिस दे दी थी।

पत्नी से मनमुटाव होने के तीसरे दिन प्रिन्स स्टीफेन आर्काडेविच आब्लान्स्की उर्फ स्टीवा प्रातःकाल अपने निर्दिष्ट समय पर—आठ बजे—सोकर उठा। आज वह अपनी पत्नी के पास सोया हुआ नहीं था, बल्कि अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में चमड़े से मँढ़ी हुई स्प्रिंगदार आरामकुर्सी पर लेटा हुआ था। उसने करवट बदलकर, एक तकिये को बगल में दबाकर फिर एक बार सोने की चेष्टा की। पर सहसा उसने आँखें खोलीं और उठ बैठा।

उसने एक बड़ा 'मधुर' स्वप्न देखा था और उसकी अस्पष्ट स्मृति उसके मन में एक मीठी भावना का सञ्चार कर रही थी। स्वप्न की

प्रत्येक घटना को ठीक तरह से याद करने की चेष्टा करता हुआ वह मन ही मन कहने लगा—"हाँ, तो वह स्वप्न क्या था, जो मैंने देखा ? हाँ, हाँ, ठीक है, याद आगया—अलाबिन डार्मस्टाड में एक भोज दे रहा था—नहीं, अमेरिका में दे रहा था। हाँ, हाँ, ठीक है, डार्मस्टाड स्वप्न में अमेरिका के ही अन्तर्गत आगया था। शीशे के टेबिलो पर बढ़िया-बढ़िया व्यञ्जनो की तश्तरियाँ करीने से लगाई जा रही थी। टेबिल सजीव प्राणियो के समान एक बड़ा सुन्दर प्रेम-रस-पूर्ण गीत गा रहे थे। शराब से चमकते हुए स्फटिक-पात्र भी सजाकर रक्खे गये थे। वे स्फटिक-पात्र छोटी-छोटी सुन्दरी कुमारियों के समान सजीव बनकर नाचने लगे थे और उनके विभ्रम-विलास और हाव-भाव से उपस्थित जनता प्रेमाकुल हो रही थी। और भी बहुत-सी सुन्दर-सुन्दर चीजे मैंने स्वप्न मे देखी थी, जो अब याद नहीं आती।"

स्वप्न की स्मृति से उसकी आँखे एक पुलक-भरे हर्ष के कारण चमकने लगी। इतने में पर्दे के भीतर से होकर प्रकाश की एक किरण-रेखा उसके मुख पर आ लगी। पाँव नीचे लटकाकर उसने स्लीपर पहने—वे स्लीपर जिन पर उसकी स्त्री ने अपने हाथ से काम किया था—और नौ वर्ष के नियमित अभ्यास के अनुसार उसने ड्रेसिंग-गाउन के लिए हाथ बढ़ाया, जिसे उसकी स्त्री उसके पलँग के पास ही टाँगकर रख दिया करती थी। पर जब उसे ड्रेसिंग-गाउन न मिला, तो अकस्मात् उसे याद आया कि वह अपनी पत्नी के कमरे मे नहीं, बल्कि अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में सोया हुआ था। स्वप्न की शेष स्मृति के कारण जो मुसकान उसके ओठो में खेल रही थी, वह तत्काल लुप्त हो गई, और उसे याद आया कि अपनी पत्नी से उसका मनमुटाव हो गया है।

वह व्याकुल वेदना से कराह उठा—"उफ! उफ! उफ!" अपनी तत्कालीन जटिल परिस्थिति-सम्बन्धी सब बाते उसके मन में एक-एक करके जग उठी, और अपने अपराध की कल्पना से वह अत्यन्त दुखित हो उठा। वह सोचने लगा—"नहीं, वह मुझे अब किसी प्रकार भी क्षमा नहीं करेगी। मेरा अपराध स्पष्ट प्रमाणित हो चुका है। फिर भी—फिर भी मैं दोषी नहीं हूँ! उफ! उफ!" उसे झगड़े से सम्बन्ध रखनेवाली छोटी से छोटी बात भी स्पष्ट रूप से स्मरण होने लगी। वह थियेटर देखकर अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक जब घर लौटकर आया, तब साथ में अपनी पत्नी के लिए एक बहुत बड़ी नाशपाती था। पर उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब उसने

न तो ड्राइंग-रूम में और न लिखने-पढ़ने के कमरे में ही उसे देखा। इधर-उधर खोजने के बाद अन्त में वह सोने के कमरे में बैठी मिली। उसके हाथ में वह मनहूस पत्र था जिसने उसके गुप्त प्रेम का सारा भेद उसकी पत्नी के आगे खोल दिया था।

सदा चिन्ता के भार से ग्रस्त और पारिवारिक काम-धंधों में व्यस्त रहनेवाली उसकी वह सरला पत्नी—डाली—उस पत्र को हाथ में लेकर स्तब्धभाव से बैठी थी। उसके हताश मुख में भय और क्रोध के चिह्न एक साथ प्रकट हो रहे थे। पति को देखते ही वह गरम पड़ी। उसने पत्र की ओर संकेत करके उससे पूछा—"यह क्या है, यह? बताओ?"

आब्लान्सकी ने उस संगीन प्रश्न का उत्तर जिस ढंग से दिया था उसकी ग्लानि अभी तक उसके मन में वैसी ही बनी हुई थी। पत्नी के उस प्रश्न पर न तो उसने किसी प्रकार की आपत्ति का भाव प्रकट किया, न उस अपराध को उसने अस्वीकार किया जो उस पर संकेत-द्वारा आरोपित किया जा रहा था। किसी बहानेबाजी से वह उस बात को टाल भी न सका। पश्चात्ताप प्रकट करके उसने क्षमा-याचना भी नहीं की। वह केवल अपनी स्वाभाविक, नरम और सदय मुसकान मुख में झलकाकर चुप हो रहा। उस मूर्खतापूर्ण मुसकान के कारण वह अत्यन्त दुःखित और लज्जित हो रहा था। डाली उस मुसकान में अपराध की स्वीकृति का स्पष्ट चिह्न देखकर आतंक से काँप उठी और तीव्र वेदना से विह्वल हो उठी। भयंकर, निष्ठुर शब्दों में पति का तिरस्कार करके वह कमरे से बाहर निकल गई। तब से उसने अपने पति से मिलना एकदम छोड़ दिया था।

आब्लान्सकी सोचने लगा—"सारा दोष मेरी उस मूर्खतापूर्ण मुसकान का था। पर अब मुझे क्या करना चाहिए? मैं क्या कर सकता हूँ?" पर उसके अन्तःकरण ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया।

२

आब्लान्सकी मे कम से कम इतनी सचाई अवश्य थी कि वह अपने आपको धोखा नही दे सकता था। पारिवारिक परिस्थिति की जटिलता के कारण उसे दुख भले ही हो रहा हो, पर अपने आचरण के लिए उसके मन म किसी प्रकार का पश्चात्ताप नही हो रहा था। इस बात के लिए उसे तनिक भी ग्लानि नही हो रही थी कि उसके समान सुन्दर, स्वस्थ और रसिक व्यक्ति अपनी पत्नी से प्रेम नही करता— अपनी उस पत्नी से, जो आयु मे उससे केवल एक वर्ष छोटी थी (अर्थात् तैंतीस वर्ष पार कर चुकी थी), और जो दो मृत तथा पांच जीवित बच्चो की मा बन चुकी थी। उसे दुख केवल इस बात का था कि वह अपने आचरण को अपनी स्त्री से छिपाने मे असमर्थ रहा। यह होते पर भी, अपनी स्त्री और बाल-बच्चो के प्रति उसके मन में बड़ी करुणा जग रही थी, और स्वय अपने ऊपर उसे तरस आ रहा था। उसे यदि यह मालूम होता कि उसकी पत्नी उसके पर-स्त्री-प्रेम का भेद खुल जाने से इतनी दुखी होगी, तो वह पहले से ही इस सम्बन्ध मे विशेष सावधानता से काम लेता। पर उसकी यह धारणा थी कि डाली उसके गुप्त प्रेम से अपरिचित नही है, और बीच-बीच मे इस सम्बन्ध में परोक्ष रूप से कटाक्ष भी करती जाती है। किन्तु यह उसका भ्रम निकला, डाली को पहले अपने पति के प्रति तनिक भी सन्देह नही था। इसी कारण प्रथम बार जब उसके आगे भेद खुला, तब उसे बड़ा भयंकर धक्का पहुँचा। आब्लान्सकी अपनी पत्नी को केवल अपने बच्चो की आदर्श माता, और अपने परिवार की आदर्श गृहकर्त्री के अतिरिक्त और कुछ नही समझता था। वह सोचता था कि डाली अब एक प्रकार से बुड्ढी हो चली है, उसका स्वास्थ्य और सौन्दर्य नष्ट हो गया है, और घर के काम-धन्धा के अतिरिक्त और किसी विषय का ज्ञान उसे नही है, इसलिए उसे स्वभावत अपने पति के प्रति उदार होना चाहिए, और उसका कोई भी आचरण चाहे नैतिक दृष्टि से कैसा ही निन्दनीय क्यो न हो, उसे चुपचाप सहन कर लेना चाहिए। पर अब उसने जाना कि डाली का मनोभाव इसका बिल्कुल उल्टा है।

हताश होकर वह मन ही मन कहने लगा—"उफ, कैसी भयकर परिस्थिति है ! आज तक कैसे सुख और शान्ति से हमारा पारिवारिक जीवन बीत रहा था ! वह अपने बाल-बच्चो को लेकर प्रसन्न और सन्तुष्ट थी, और घर के काम-धन्धो मे व्यस्त रहकर अपने जीवन को सफल समझती थी, मैं उसके किसी भी काम मे बाधा नही डालता था, और घर की ओर से निश्चिन्त होकर रग-रसपूर्ण सामाजिक जीवन बिताया करता था। इसमे सन्देह नही कि उस फ्रेंच सुन्दरी का हमारे घर मे बच्चो की गवर्नेस बनकर आना अच्छा नही हुआ। अपने यहाँ की गवर्नेस के साथ प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करना किसी भी सम्मानित व्यक्ति के लिए लज्जा की बात है। पर यदि उसकी अनुपम सुन्दर कटीली आँखो ने मेरा मन मोह लिया, तो इसमे क्या मेरा अपराध है ? इसके अतिरिक्त जब तक वह हमारे घर मे रही तब तक मैंने उसके साथ किसी प्रकार का भी अनुचित सम्बन्ध स्थापित नही किया। पर जो होना था सो हुआ; प्रश्न यह है कि अब क्या किया जाय ? उफ !" वह जितना ही सोचता था उतना ही चक्कर मे पड जाता था, और अपनी रूठी पत्नी को मनाने का कोई भी उपाय उसे नही सूझता था।

वह उठ खडा हुआ और कमरे के एक कोने में टँगे हुए ड्रेसिंग-गाउन को उठाकर पहनने लगा। उसके बाद उसने बडे जोर से घटी बजाई, जिसे सुनकर उसका पुराना सेवक मैथ्यू उसके कपडे, जूते और एक तार लेकर तत्काल आ पहुँचा। उसके पीछे घर का नाई भी दाढी बनाने का सामान हाथ में लिये चला आया।

आब्लान्सकी तार हाथ में लेकर बडे शीशे के सामने बैठ गया। मैथ्यू से उसने पूछा—"आफिस से कुछ कागजात भी आये है ?"

"वे आपकी मेज़ पर रख दिये गये है।"

आब्लान्सकी ने तार खोलकर पढा। पढते ही उसके मुख पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। उसने कहा—"मैथ्यू, मेरी बहन आना आर्काडिवना कल यहाँ आ रही है।"

मैथ्यू बोला—"ईश्वर को धन्यवाद है।" इस उत्तर से उसने स्पष्ट ही यह सूचित किया कि वर्तमान परिस्थिति मे आना का आगमन कितना महत्वपूर्ण है, इस बात को वह भी आब्लान्सकी की तरह ही भली भाँति जानता है। उसने कुछ देर ठहरकर फिर पूछा—"क्या वे अकेली आ रही है, या अपने पति के साथ ?"

आब्लान्सकी उस समय उत्तर न दे सका, क्योंकि नाई ने उस समय उसका ऊपरी ओठ हाथ से दबा रखा था। उसने केवल एक उंगली उठाकर यह जताया कि आना अकेली आ रही है। जब नाई ने अपना हाथ उसके ओठ पर से हटा लिया तब मैथ्यू ने कहा—"क्या ऊपर की मंजिल में एक कमरा आना के लिए ठीक कर दिया जाय?"

"डार्या अलेग्जेन्ड्रोवना (डाली) से पूछो।"

मैथ्यू को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सन्देह के स्वर मे कहा—"डार्या अलेग्जेन्ड्रोवना से पूछने को आप कह रहे हैं?"

"हाँ। उसके हाथ में तार देकर उससे पूछो।"

मैथ्यू शङ्कित पगों से चला गया। आब्लान्सकी की दाढी जब बन चुकी तब उसने हाथ-मुंह धोकर कपड़े पहनने की तैयारी की। इतने में मैथ्यू ने वापस आकर कहा—"डार्या अलेग्जेन्ड्रोवना ने मुझसे यह कहा है कि वे कहीं बाहर जा रही हैं। उनका यह भी कहना है कि "मुझसे पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है, जिसका जैसा जी चाहे वैसा करे।"

मैथ्यू की आँखों में एक व्यंग्यपूर्ण मुसकान झलक उठी। पर आब्लान्सकी के मुख पर एक सकरुण निराशा छा गई, यद्यपि उसने एक नीरस मुसकान मुख पर झलकाने की चेष्टा की। उसने क्षीण स्वर मे केवल इतना कहा—"मैथ्यू, उफ!"

"कुछ चिन्ता न करे, अपने आप सब ठीक हो जायगा!"

"अपने आप ठीक हो जायगा? तुम्हारा क्या यह पक्का विश्वास है, मैथ्यू? कौन है?"

एक नौकरानी ने दरवाजे पर से क्षीण स्वर मे कहा—"मैं हूँ, सरकार!"

आब्लान्सकी उसके पास जाकर बोला—"मात्रेना, क्या बात है?"

"एक बार आप डार्या अलेग्जेन्ड्रोवना के पास नहीं जायेंगे सरकार? आपके जाने से, भगवान् ने चाहा तो, सब बातें फिर से सुधर सकती हैं। वे बेचारी बहुत व्याकुल हैं। उनके मुख पर ऐसी भयंकर उदासी छाई हुई है कि उनकी ओर मुझसे देखा तक नहीं जाता, देखने से रुलाई आ जाती है। इसके अलावा, घर का सारा कारोबार चौपट हो गया है। आपको कम से कम बच्चों का ध्यान तो रखना चाहिए! एक बार सरकार डार्या अलेग्जेन्ड्रोवना से मिल लीजिए!"

"पर जब मुझे मिलने की आज्ञा दे, तब तो!"

"आप अपना कर्तव्य कीजिए, सरकार। फिर ईश्वर मालिक है। ईश्वर का नाम लेकर चले जाइए।"

"अच्छी बात है, मैं एक बार अवश्य प्रयत्न करूँगा।" यह कहकर आब्लान्सकी मैथ्यू की सहायता से कपडे पहनने लगा।

कपडे पहनकर, एसेन्स की सुगन्धि से तर होकर जब आब्लान्सकी बन-ठनकर तैयार हुआ, तो अपनी तत्कालीन संकटपूर्ण स्थिति में भी वह सुन्दर, स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई देने लगा। भोजन के कमरे में 'काफी' तैयार रक्खी थी। उसी टेबिल पर आफिस के कागजात, चिट्ठियाँ और संवाद-पत्र आदि भी रक्खे हुए थे। उसने पहले चिट्ठियाँ खोलकर पढी। फिर आफिस की 'फाइलों' को खोलकर, विशेष-विशेष कागजों में स्थान-स्थान पर पेन्सिल से कुछ नोट लिखकर, उन्हें फिर से बन्द करके रख दिया। इसके बाद वह एक संवाद-पत्र को उठाकर पढने लगा।

आब्लान्सकी एक लिबरल-पत्र का ग्राहक था। वह अपने निजी अनुभवों और स्वतन्त्र विचारों के कारण लिबरल-दल का पक्षपाती नहीं बना था, बल्कि इसलिए बना था कि बहुसंख्यक जनता उक्त दल के प्रति श्रद्धा रखती थी। वह अपने समाज के प्रत्येक फैशन को अपनाना अपना कर्त्तव्य समझता था और लिबरल-दल का पक्षपाती बनना भी वह एक फैशन ही मानता था। इसके अतिरिक्त, संयोगवश लिबरल-दल के विचार उसकी जीवन-धारा के साथ अच्छा मेल खाते थे। उदाहरण के लिए, लिबरल-दल का यह कहना था कि रूस की प्रत्येक बात बुरी है, आब्लान्सकी इस बात को अपनी आर्थिक स्थिति की कसौटी पर कसकर सत्य पाता था। वास्तव में उसे बहुत कर्ज हो गया था, और उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। लिबरल दल की यह सम्मति थी कि विवाह-प्रथा बहुत पुरानी और प्रक्षिप्त हो चली है, और उसमें मूलत सुधार करने की आवश्यकता है, और यह बात सच थी कि आब्लान्सकी को पारिवारिक जीवन के बन्धन से कुछ भी सुख प्राप्त नहीं होता था। लिबरल दल का यह विचार था कि धर्म मूर्खों और अनपढ लोगों को दासता की शृंखला से जकडे रहने का एक साधन-मात्र है, और आब्लान्सकी को गिर्जे में जाकर खडे रहने से बडा कष्ट होता था, और यह बात उसकी समझ में न आती थी कि लोग परलोक में सुख प्राप्त करने की अनिश्चित आशा से इस जीवन के प्रत्यक्ष रागरंगों से क्यों वञ्चित रहना चाहते हैं।

इन्हीं सब कारणों से आब्लान्सकी ने 'लिबरलिज्म' को अपना लिया था, और प्रतिदिन प्रात काल एक लिबरल-पत्र को पढ़ना वह अपना कर्त्तव्य समझता था।

पत्र पढकर वह उठा। उस समय उसके मुख में मुक्त और सन्तो की एक झलक दिखाई दे रही थी। पर ज्यों ही उसे यह स्मरण आया कि उसे अपनी पत्नी से जाकर मिलना है, त्यों ही वह फिर चिन्ता मे पड गया। दरवाजे के बाहर दो बच्चों के खेलने का शब्द सुनाई दे रहा था। उनमे से एक आब्लान्सकी की लड़की टान्या थी, दूसरा उसका लडका ग्रीशा। दोनो किसी चीज को घसीटकर ले जा रहे थे और बडा ऊधम मचा रहे थे। आब्लान्सकी को यह सोचकर दुःख हुआ कि डाली की देख-रेख के बिना केवल तीन ही दिन के भीतर बच्चे निर्द्वन्द्व हो उठे हैं। उसने टान्या को अपने पास बुलाकर पूछा—"अम्मा का क्या हाल है?"

"वह ऊपर बैठी है।"

"पर मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या वह प्रसन्न है या उदास है?"

लडकी से यह बात छिपी नही थी कि उसके मा-बाप के बीच किसी कारण से मनमुटाव हो गया है, और स्वभावत वह प्रसन्न नहीं हो सकती। वह यह भी जानती थी कि उसके पिता जान-बूझकर बनना चाहते हैं। उसने सिर नीचा करके उत्तर दिया—"मैं कुछ नहीं जानती। उसने हमसे यह कहा है कि हमे मिस हल (अँगरेज गवर्नेस) के साथ नानी के यहाँ जाना होगा।"

आब्लान्सकी ने एक लम्बी साँस ली। लडकी के हाथ में कुछ मिठाई देकर उसने उसे जाने की आज्ञा दी। टान्या के चले जाने पर वह सोचने लगा—"डाली के पास जाऊँ या क्या करूँ?" कुछ देर तक उसके भीतर अन्तर्द्वन्द्व चलता रहा। अन्त में उसने जाने का ही निश्चय किया, और ड्राइंग-रूम को पार करके अपनी स्त्री के कमरे का दरवाजा खोलकर उसने धीरे से भीतर प्रवेश किया।

२

डार्या अलेग्ज़ेन्ड्रोवना का मुख एकदम सूखा हुआ था। कमरे मे सब चीजे अस्त-व्यस्त अवस्था मे इधर-उधर बिखरी पडी थी। नीचे नये और पुराने कपडो का ढेर लगा हुआ था। वह उन्ही के ऊपर खड़ी थी और एक आलमारी से बच्चो के पहनने के कपडे चुन-चुनकर बाहर निकाल रही थी। बच्चो को अपने साथ मायके ले चलने के उद्देश्य से वह ऐसा कर रही थी। पर यही काम इधर तीन दिनो के भीतर वह प्रायः दस बार कर चुकी थी। वह एक बार आवेश में आकर कपडे बाहर निकालती थी और फिर कुछ ही देर बाद जब वास्तविकता की ओर दृष्टि डालती, तो हताश होकर रह जाती, और फिर कपडों को भीतर सँभालने लगती। अपने अन्तस्तल मे वह जानती थी कि बच्चो को मायके ले जाना बडे झंझट का काम है। पर साथ ही पति के साथ रहना भी घोर अपमानजनक और अनुचित है। इस अव्यवस्थित और अनिश्चित मानसिक अवस्था में वह कोई भी बात ठीक तौर से सोच नही पाती थी।

उसके निश्चय में जो बात सबसे अधिक रुकावट डाल रही थी वह यह थी कि इतने वर्षो से जिस व्यक्ति को पति-रूप मे जानने और अपने हृदय का पूर्ण प्रेम न्योछावर करने का अभ्यास उसे हो गया था, उसे सदा के लिए छोडने की कल्पना उसे असम्भव-सी लग रही थी। उसका भीतरी मन जानता था कि उसके पति ने चाहे कैसा ही भयकर धोखा क्यो न दिया हो, उससे अलग होकर वह रह नहीं सकेगी। फिर भी वह अपने आपको ठग रही थी, और यह भाव दिखा रही थी कि वह वास्तव मे पति का घर छोड़कर चली जायगी।

अपने पति को ज्यो ही उसने भीतर प्रवेश करते देखा, त्यो ही उसने उसकी ओर पीठ फेर ली और एक दराज के भीतर हाथ डालकर यह भाव दिखाने लगी कि वह कुछ चीज निकालना चाहती है। पर जब आब्लान्स्की उसके एकदम निकट आ खडा हुआ, तो उसने उसकी ओर मुँह करके देखा। उसने यह निश्चय कर

रखा था कि पति के आने पर वह कठोर दृढ़ता का भाव प्रकट करेगी, पर लाख चेष्टा करने पर भी वह अपने मुख पर विकल, विह्वल वेदना के अतिरिक्त और कोई दूसरा भाव व्यक्त न कर सकी।

आब्लान्सकी ने धीर, कम्पित स्वर में कहा—"डाली।" उसने अपना सिर नीचा कर लिया था, और वह अत्यन्त सकरुण और विनम्र भाव अपने मुख पर झलकाने की चेष्टा कर रहा था। पर इस प्रयत्न का कोई फल नहीं हो रहा था, क्योंकि वह उस समय भी सदा के समान स्वस्थ और सुन्दर दिखाई देता था। डाली ने एक सरसरी दृष्टि से उसे देखते हुए अपने मन मे कहा—"यह निश्चित है कि वह आत्म-सन्तुष्ट और सुखी है, और उसके मन में अपने किये कर्म के लिए किसी प्रकार का दुःख नहीं हो रहा है। उसका यह सौजन्य, जिसकी लोग इतनी प्रशंसा करते हैं मुझे अत्यन्त घृणित मालूम होता है। हाँ, मैं उससे घृणा करती हूँ, घृणा!"

"तुम क्या चाहते हो?"—झिड़ककर डाली ने कहा।

"डाली, आज आना आ रही है।"

"तो मैं क्या करूँ? मैं उसका स्वागत नहीं कर सकती।"

"पर डाली, फिर भी तुम्हें उसका स्वागत करना ही चाहिए!"

"जाओ! जाओ! मेरे सामने से हट जाओ!"

डाली के कण्ठस्वर मे ऐसा जान पड़ता था, जैसे वह किसी भारी पीड़ा से कराह रही हो। आब्लान्सकी उसके शीर्ण और वेदना-क्लान्त मुख का निपट हताशभाव देखकर स्वयं भी बहुत विकल हो उठा। उसका गला रुँध आया, और उसकी आँखों के कोनों में आँसू चमकने लगे।

"हे भगवान्! मैंने क्या किया! डाली, देखो—उफ! मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ! मुझे क्षमा कर दो, डाली! हमारे नौ वर्षों का विवाहित जीवन क्या मेरी एक क्षणिक मूर्खता के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा?"

आब्लान्सकी और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, पर आँ[illegible] [illegible] हुआ गला उसका साथ नहीं दे रहा था।

डाली ने प्रायः चीख मारकर कहा—"जाओ! जाओ! [illegible] मूर्खता के सम्बन्ध की बीभत्स बातें मेरे आगे न करो[illegible]

[illegible] बाहर चली जाना चाहती थी, पर उसके पाँव काँप[illegible],

और भ्रान्ति के कारण लडखडा रहे थे। एक कुर्सी का सहारा लेकर वह खडी रही।

आब्लान्सकी के दवे हुए आँसू फूट पडे। वह प्राय सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा—"डाली, ईश्वर के लिए तनिक वच्चो की वात तो सोचो! उन्होने क्या अपराध किया है? मुझे जैसा जी चाहे, दण्ड दो। अपने पाप का फल भोगने को मैं तैयार हूँ। मैं दोषी हूँ, मुझसे निस्सन्देह भयकर अपराध हुआ है। पर डाली, मुझे यदि तुम क्षमा न करोगी, तो कौन करेगा? और वच्चे!—"

डाली की साँस वडी तेजी से चल रही थी और खडे रहने की शक्ति उसमे नही रह गई थी। वह कुर्सी पर वैठ गई और वार-वार तीखे शब्दो मे अपने पति की बात का उत्तर देने का प्रयत्न करने लगी, पर दम फलने के कारण वह कुछ वोल नही पाती थी। जव कुछ सुस्ता चु[illegible]ी, तव उसने कहा—"तुम वच्चो की वात तव सोचते हो जव तुम उनसे हँसना-खेलना और अपना जी वहलाना चाहते हो, पर मैं सव समय उनकी चिन्ता करती रहती हूँ। मैं जानती हूँ कि अव उनका कहीं कोई ठिकाना न रहा। मैं हर हालत मे उन्हे विनाश से वचाना चाहती हूँ। पर कैसे वचाऊँ? या तो उन्हे उनके वाप से सदा के लिए छुडा देना होगा, या उस दुश्चरित्र—हाँ, घोर दुश्चरित्र पिता की देख-रेख में छोड देना पडेगा। तुमने जो कुछ किया है, उसका पता लग जाने पर मै कैसे तुम्हारे साथ रह सकती हूँ! यह कैसे सम्भव हो सकता है, वताओ! वताओ!" उसका कण्ठस्वर तीव्र से तीव्रतर होता चला जाता था।

आब्लान्सकी अपना सिर झुकाकर अत्यन्त करुण स्वर में केवल यही कहता चला गया—"पर अव इसका क्या उपाय है! क्या उपाय है!"

डाली प्राय चिल्लाती हुई वोली—"तुम अत्यन्त घृणित और भ्रष्ट हो! तुम्हारे ये आँसू केवल पानी की वूँदे हैं, इनका कोई मूल्य नही है। तुमने कभी मुझे नही चाहा; तुम्हारे हृदय है ही नहीं, न तुम्हें प्रतिष्ठा की कुछ पर[illegible]ा है। तुम अत्यन्त हीन और नीच हो; मेरे लिए तुम अव एक अपरिचित पुरुष के समान हो!" उसके एक-एक शब्द मे भयकर कटुता भरी थी।

आब्लान्सकी ने एक वार सिर उठाकर अपनी पत्नी की ओर देखा। उसके मुख पर घृणा और क्रोध की प्रगाढ छाया देखकर वह वास्तव में घवरा उठा। डाली इस हद तक उससे घृणा कर सकती है, इस वात की कल्पना उसने पहले नही की थी। वह मन ही मन

लगा—"नहीं, डाली अब मुझे किसी तरह भी क्षमा करने को तैयार नहीं है। उफ! यह कैसी भयंकर बात है!"

इतने में बगलवाले कमरे से एक बच्चे के रोने का शब्द सुनाई दिया। बच्चा शायद नीचे गिर पड़ा था। डार्या अलेक्जेन्ड्रोवना का ध्यान तत्काल उस ओर चला गया। कुछ देर तक वह शान्त होकर सुनती रही, जैसे उसकी समझ ही में न आ रहा हो कि वह उस कमरे में अपने पति के साथ क्यों खड़ी है। जब वह कुछ स्थिर हुई, तब अत्यन्त शीघ्रता से उठकर उस कमरे में चली गई, जिसमें बच्चा रो रहा था।

आब्लान्सकी ने सोचा—"कुछ भी हो, यह निश्चित है कि वह मेरे बच्चों से अभी तक वैसा ही प्रेम करती है। पर मेरे बच्चों को चाहने पर भी मुझसे इतनी घृणा क्यों करती है?"

वह अपनी पत्नी के पीछे-पीछे हो लिया और कहने लगा—"डाली, मेरी एक बात तो सुन लो।"

"यदि तुम इस प्रकार मेरा पीछा करोगे, तो मैं चिल्लाकर सब नौकरों और बच्चों को यहाँ बुलाऊँगी। मैं सबको यह जता दूँगी कि तुम बदमाश और नीच हो। मैं आज ही यह घर छोड़कर चली जा रही हूँ, मेरे जाने के बाद तुम सुखपूर्वक अपनी प्रेमिका के साथ रहना।" यह कहकर डार्या अलेक्जेन्ड्रोवना ने जोर से धक्का देकर भीतर से किवाड़ बन्द कर दिया। आब्लान्सकी बाहर ही खड़ा रह गया। एक लम्बी साँस लेकर और रूमाल से अपनी आँखें और मुँह पोंछकर वह धीरे-धीरे कमरा छोड़कर चला गया।

बाहर गाड़ी तैयार थी। आब्लान्सकी मैथ्यू को आना के लिए किसी एक कमरे का प्रबन्ध कर रखने का आदेश देकर और उसके हाथ में घर के खर्च के लिए कुछ रुपये देकर गाड़ी में चढ़ बैठा।

डार्या अलेक्जेन्ड्रोवना ने गाड़ी के पहियों के शब्द से जान लिया कि उसका पति चला गया है, तब बच्चे को मनाकर वह फिर अपने सोने के कमरे में वापस चली आई। यही एक स्थान था जहाँ घर की चिन्ताओं से वह अपने को थोड़ा-बहुत मुक्त पाती थी।

वह उस कमरे में अकेली बैठी हुई सोचने लगी—"क्या अब भी उस फ्रेन्च स्त्री के साथ उसका (आब्लान्सकी का) सम्बन्ध है? क्या अब भी वह उससे मिलता है? असम्भव है! उसने अब

मेल किसी भी दशा में नहीं हो सकता। यदि अब हम दोनो एक ही घर में रहे भी, तो भी एक-दूसरे से चिर-अपरिचित के समान हमे जीवन बिताना होगा। पर इसके पहले मै उसे कितना चाहती थी! और—और—सच बात तो यह है कि इस समय भी मै उसे चाहती हूँ। मै उससे घृणा करना चाहती हूँ, पर कर नही पाती हूँ। उफ! मै कैसी विकट परिस्थिति के फेर में पड़ गई हूँ।"

इतने मे एक नौकरानी भीतर घुस आई, और डार्या अलेग्जेन्ड्रोवना घर की जिन रात-दिन की चिन्ताओ से कुछ समय के लिए मुक्ति पाना चाहती थी, उन्हे एक-एक करके याद दिलाने लगी। बच्चो के लिए दूध नही है, रसोइया चला गया है, दूसरे रसोइये का क्या प्रबन्ध होगा, आदि प्रश्नो को सुलझाने मे कुछ समय के लिए वह अपने पति की बात भी भूल गई।

४

आब्लान्सकी यद्यपि स्वभावतः एक योग्य व्यक्ति था, तथापि [illegible]
बड़ा आलसी और विलासी था। इस कारण उच्च कक्षाओं की
परीक्षाओं में वह विशेषता नहीं प्राप्त कर सका था। फिर भी उसका
भाग्य अच्छा निकला। मास्को के एक सरकारी विभाग के प्रधान
कर्मचारी का पद उसे प्राप्त हो गया था। यह पद उसे अपने
बहनोई आना के पति अलेक्सिस अलेक्जेन्ड्रोविच केरेनिन की चेष्टा से
मिला था। केरेनिन पीटर्सबर्ग के मन्त्रिमण्डल का एक विशेष प्र-
तिष्ठित व्यक्ति था। पर स्टीवा (आब्लान्सकी) को यदि केरेनिन
की सहायता न मिलती, तो भी वह अपने असंख्य बन्धु-बान्धवों में से
किसी न किसी की कृपा प्राप्त करके अवश्य अपना काम निकाल लेता।
वह बहुत ही मधुर स्वभाव का, मिलनसार और व्यवहार-कुशल व्यक्ति
था। उससे प्रायः सभी सगे-सम्बन्धी और मित्र उससे प्रसन्न रहते थे,
और अपने समाज में वह बहुत लोक-प्रिय हो उठा था। उसके आफिस
के सब कर्मचारी उसका बड़ा आदर करते थे।

आफिस का काम समाप्त करके जब वह अपने दो-एक सहकारियों
के साथ तत्कालीन राजनीतिक विषयों पर बातें करते हुए [illegible]
सिगरेट पी रहा था, तब चौकीदार ने आकर उसे सूचना दी कि
एक व्यक्ति बहुत देर से उसकी प्रतीक्षा में खड़ा है।

"वह शायद हॉल में चला गया होगा, सरकार! अभी तक
इसी के आसपास चक्कर लगा रहा था। वह देखिए, वह आ रहा है।"

वास्तव में एक चौड़े कन्धेवाला व्यक्ति, जिसकी दाढ़ी के बाल
घुँघराले थे, भेड़ की खाल की टोपी बिना उतारे ही, सीढ़ियों से
होकर ऊपर को चला आ रहा था। आब्लान्सकी सीढ़ियों की बगल में
खड़ा था। नवागत व्यक्ति को पहचानते ही उसका मुख अह्लादित [illegible]
[illegible] उठा।

उसने एक प्रकार व्यंग्य की मुसकान मुख में झलकाते हुए [illegible]
"क्यों लेविन, अन्त में तुम फिर यहाँ आ ही गये! आज तुमने [illegible]
इस गन्दे अड्डे में पधारने की कृपा कैसे की?" यह कहकर [illegible]

केवल उससे हाथ ही नहीं मिलाया, वल्कि स्नेहपूर्वक उसके गले मिला। फिर वोला—"यहाँ कब आये ?"

लेविन ने सकोच-भरी दृष्टि से एक वार चारो ओर देखकर कहा—"मैं अभी आ रहा हूँ। तुमसे मिलने के लिए मै विशेष उत्सुक था।"

"अच्छी वात है, मेरे 'प्राइवेट' कमरे मे चलो।" यह कहकर वह अपने सकोचशील मित्र का हाथ पकडकर ले गया।

लेविन तथा आब्लान्सकी प्राय समवयस्क थे। यो तो आब्लान्सकी जिस व्यक्ति के साथ एक वार 'शैम्पेन' पी लेता था, उसी को अपना घनिष्ठ मित्र वना लेता था; पर लेविन के साथ केवल 'हम-प्याला' होने के कारण ही उसकी मित्रता नही हुई थी, वल्कि दोनो लडकपन के साथी थे और प्रारम्भ से ही एक दूसरे को पसन्द करने लगे थे। तब से दोनो की घनिष्ठता वढती चली गई, और यद्यपि दोनो के स्वभाव और विचारो मे वडा अन्तर था, तथापि उनकी मित्रता मे इस कारण से कभी किसी प्रकार की कमी नही आने पाई थी। इसमें सन्देह नही कि दोनो एक-दूसरे की रहन-सहन को घृणा की दृष्टि से देखते थे। लेविन उस विलासितामय नागरिक जीवन से वहुत चिढता था, जिसके विना आब्लान्सकी एक क्षण जी नही सकता था, और आब्लान्सकी लेविन के 'आदर्श देहाती जीवन' को अत्यन्त हास्यास्पद समझता था। फिर भी दोनो में पारस्परिक अटूट स्नेह था।

अपने 'प्राइवेट' कमरे मे पहुँचकर आब्लान्सकी ने कहा—"तुम्हे देखकर मुझे जो प्रसन्नता हुई है, उसका वर्णन नहीं हो सकता। हम लोग वहुत दिनों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे।"

आब्लान्सकी के उस कमरे मे उसके दो साथी पहले से ही बैठे हुए थे। उन अपरिचित व्यक्तियो को देखकर लेविन सकोच में पडा हुआ था। आब्लान्सकी ने उन दोनो से लेविन का परिचय कराते हुए उसके सम्वन्ध मे कहा कि वह ज़िला कौंसिल का एक योग्य सदस्य है। लेविन ने इस बात का खण्डन किया और कहा कि उसने ज़िला कौंसिल से सव प्रकार का सम्वन्ध त्याग दिया है। इसका कारण उसने यह वताया कि ज़िला कौंसिलो के अधिकाश सदस्य जनता का वास्तविक हित ध्यान मे रखकर वहाँ नही जाते, वल्कि इसलिए जाते है कि वहाँ उनका मनोविनोद होता है, और वाद-विवाद में उनका समय कट जाता है।

४

आब्लान्सकी यद्यपि स्वभावत एक योग्य व्यक्ति था, तथापि
बडा आलसी और विलासी था। इस कारण उच्च कक्षाओं
परीक्षाओ मे वह विशेषता नही प्राप्त कर सका था। फिर भी
भाग्य अच्छा निकला। मास्को के एक सरकारी विभाग के
कर्मचारी का पद उसे प्राप्त हो गया था। यह पद उसे
बहन आना के पति अलेक्सिस अलेग्जेन्ड्रोविच केरेनिन की
मिला था। केरेनिन पीटर्सबर्ग के मन्त्रिमण्डल का एक विशेष
ष्ठित व्यक्ति था। पर स्टीवा (आब्लान्सकी) को यदि
की सहायता न मिलती, तो भी वह अपने असख्य बन्धु-बान्धवो
किसी न किसी की कृपा प्राप्त करके अवश्य अपना काम निकाल लेता
वह बहुत ही मधुर स्वभाव का, मिलनसार और व्यवहार-कुशल
था। उसके प्राय सभी सगे-सम्बन्धी और मित्र उससे प्रसन्न रहते
और अपने समाज मे वह बहुत लोक-प्रिय हो उठा था। उसके
के सब कर्मचारी उसका बडा आदर करते थे।

आफिस का काम समाप्त करके जब वह अपने दो-एक सहयोगियों
के साथ तत्कालीन राजनीतिक विषयो पर बातें करते हुए
सिगरेट पी रहा था, तब चौकीदार ने आकर उसे सूचना दी
एक व्यक्ति बहुत देर से उसकी प्रतीक्षा में खडा है।

"वह शायद हॉल मे चला गया होगा, सरकार! अभी तक
उसी के आस-पास चक्कर लगा रहा था। वह देखिए, वह आ रहा है!"

वास्तव मे एक चौडे कन्धेवाला व्यक्ति, जिसकी दाढी के
घुंघराले थे, भेड की खाल की टोपी बिना उतारे ही, सीढियों
होकर ऊपर को चला आ रहा था। आब्लान्सकी सीढियों की
रहा था। नवागत व्यक्ति को पहचानते ही उसका मुख अकस्मात्
प्रसन्नता से चमक उठा।

उसने एक मधुर व्यग्य की मुसकान मुख मे झलकाते हुए
'हलो लेविन, आखिर तुम फिर यहाँ आ ही गये! आज तुमने
इस गन्दे 'अड्डे' मे आगमन की कृपा कैसे की?" यह कह

केवल उससे हाथ ही नही मिलाया, वल्कि स्नेहपूर्वक उसके गले मिला। फिर वोला—"यहाँ कव आये ?"

लेविन ने सकोच-भरी दृष्टि से एक वार चारो ओर देखकर कहा—"मैं अभी आ रहा हूँ। तुमसे मिलने के लिए मैं विशेष उत्सुक था।"

"अच्छी वात है, मेरे 'प्राइवेट' कमरे में चलो।" यह कहकर वह अपने सकोचशील मित्र का हाथ पकडकर ले गया।

लेविन तया आब्लान्सकी प्राय समवयस्क थे। यो तो आब्लान्सकी जिस व्यक्ति के साथ एक वार 'शैम्पेन' पी लेता था, उसी को अपना घनिष्ठ मित्र वना लेता था; पर लेविन के साथ केवल 'हम-प्याला' होने के कारण ही उसकी मित्रता नही हुई थी, वल्कि दोनो लडकपन के साथी थे और प्रारम्भ से ही एक दूसरे को पसन्द करने लगे थे। तव से दोनो की घनिष्ठता वढती चली गई, और यद्यपि दोनो के स्वभाव और विचारो मे वडा अन्तर था, तथापि उनकी मित्रता में इस कारण से कभी किसी प्रकार की कमी नहीं आने पाई थी। इसमें सन्देह नही कि दोनो एक-दूसरे की रहन-सहन को घृणा की दृष्टि से देखते थे। लेविन उस विलासितामय नागरिक जीवन से वहुत चिढता था, जिसके विना आब्लान्सकी एक क्षण जी नही सकता था; और आब्लान्सकी लेविन के 'आदर्श देहाती जीवन' को अत्यन्त हास्यास्पद समझता था। फिर भी दोनो मे पारस्परिक अटूट स्नेह था।

अपने 'प्राइवेट' कमरे में पहुँचकर आब्लान्सकी ने कहा—"तुम्हें देखकर मुझे जो प्रसन्नता हुई है, उसका वर्णन नही हो सकता। हम लोग वहुत दिनो से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे।"

आब्लान्सकी के उस कमरे मे उसके दो साथी पहले से ही वैठे हुए थे। उन अपरिचित व्यक्तियो को देखकर लेविन सकोच मे पडा हुआ था। आब्लान्सकी ने उन दोनो से लेविन का परिचय कराते हुए उसके सम्वन्ध मे कहा कि वह जिला कौंसिल का एक योग्य सदस्य है। लेविन ने इस वात का खण्डन किया और कहा कि उसने जिला कौंसिल से सव प्रकार का सम्वन्ध त्याग दिया है। इसका कारण उसने यह वताया कि जिला कौंसिलो के अधिकाश सदस्य जनता का वास्तविक हित ध्यान मे रखकर वहाँ नही जाते, वल्कि इसलिए जाते है कि वहाँ उनका मनोविनोद होता है, और वाद-विवाद में उनका समय कट जाता है।

आब्लान्स्की ने उसकी इस बात पर एक व्यंग्यपूर्ण छींटा कसते हुए कहा—"तुम अब 'कजर्वेटिव' दल के पक्षपाती बनने लगे हो। खैर, इस सम्बन्ध मे फिर बाते होगी।"

"हाँ, फिर कभी। पर इस समय मैं तुमसे दो-एक विशेष बातें करना चाहता हूँ।" यह कहकर उसने दोनो नवपरिचित व्यक्तियो की ओर तीखी दृष्टि से देखा।

आब्लान्स्की अपने मित्र की भडकीली पोशाक की ओर दृष्टि डालकर बोला—"तुम तो कहा करते थे कि तुम पश्चिम योरप के किसी दर्जी की सिली हुई पोशाक कभी नही पहनोगे, पर आज तो तुमने निश्चय ही यह पोशाक किसी फ्रेंच दर्जी से सिलवाई है। आखिर ऐसा कौन-सा नया कारण आ पडा है?"

लेविन एक स्कूली लडके की तरह लज्जित हो उठा और उसका मुँह लाल हो गया। उसने उस बात को टालते हुए कहा—"मैं तुमसे बहुत आवश्यक बातें करना चाहता हूँ। यह बताओ कि किस स्थान मे हम दोनो का मिलना ठीक रहेगा?"

आब्लान्स्की ने कुछ सोचकर कहा—"अच्छा, एक काम क्यों न किया जाय—हम दोनो इसी समय गुरिन के होटल मे मध्याह्न-भोजन के लिए चले। वहाँ एकान्त मे बाते करेंगे।"

लेविन बोला—"नही, मुझे कही दूसरी जगह जाना है।"

"अच्छी बात है, तब सध्या को हम दोनो एक साथ भोजन करें, क्यो?"

"पर कुछ लम्बी-चौडी बाते तो करनी नही हैं। केवल दो एक बाते तुमसे पूछनी है।"

"अच्छी बात है। दो-एक बाते तुम अभी कर सकते हो; शेष बातें सध्या को भोजन के समय होती रहेगी।"

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि—पर वह कोई आवश्यक बात नही है, जाने दो।" स्पष्ट ही वह अत्यन्त सकोच के कारण अपनी बात कह नही पाता। कुछ समय अपना सकोच दूर करने का भरपूर प्रयत्न करते हुए कहा—"मैं पूछना चाहता था कि श्चरबैट्स्की-परिवार का क्या हाल है। वे लोग सब मजे मे तो हैं?"

आब्लान्स्की बहुत पहले से इस बात से परिचित था कि लेविन उसकी साली—प्रिन्स श्चरबैट्स्की की छोटी लडकी किटी—से प्रेम करता है। इसलिए लेविन का पूर्वोक्त प्रश्न सुनकर एक मीठी मुस्कान उसके होठों पर खेल गई। उसने कहा—"तुमने तो 'दो शब्दों' में अपनी

वात कह डाली, पर मैं दो शब्दो मे इसका उत्तर नही दे सकता।—एक मिनट के लिए क्षमा करना।"

आब्लान्सकी का सेक्रेटरी कुछ कागज-पत्र लेकर आया हुआ था। उसे समझा-बुझाकर आब्लान्सकी ने उसे विदा किया। लेविन इस वीच मे अपना सकोच बहुत कुछ दूर करने मे समर्थ हो चुका था। उसने सहज स्वर मे कहा—"हाँ, तो तुमने मेरे प्रश्न का कुछ उत्तर अभी तक नही दिया।"

आब्लान्सकी ने कुछ गम्भीर होकर कहा—"जव से तुम गये थे, तव से कोई विशेष परिवर्तन मेरे ससुर के परिवार म नही हुआ। पर यह दु ख की वात अवश्य है कि इतने दिनो तक तुम छिपे रहे।"

"दु ख की वात क्यो कहते हो?" यह प्रश्न करते समय लेविन का गला कुछ काँप उठा था।

"यो ही। इस सम्वन्ध मे फिर वाते करेंगे। कुछ भी हो, मैं तुमस अपने यहाँ आने के लिए प्रार्थना करता; पर वात यह हो गई है कि मेरी स्त्री का जी ठीक नही है। यदि तुम मेरी ससुरालवालो से मिलना चाहो, तो जुओलाजिकल गार्डन्स मे चार और पाँच के वीच मे मिल सकते हो। किटी वहाँ नित्य स्केटिंग करने जाती है। वहाँ जाओ, और फिर सध्या को तुम हम दोनो कही साथ ही भोजन करेंगे।"

"अच्छी वात है। अच्छा, तो इस समय मैं जाता हूँ।" यह कहकर लेविन चला गया।

लेविन के चले जाने पर आब्लान्सकी के एक साथी ने कहा—"आपका मित्र वडा स्वस्थ और चुस्त दिखाई देता है।"

आब्लान्सकी वोला—"इसमें क्या सन्देह है! वह वडा भाग्य-शाली है। काराजिन जिले में वह प्राय आठ हजार एकड जमीन का मालिक है। इसके अतिरिक्त वह अभी पूर्ण युवक है, और अधिकतर देहात में जीवन विताने के कारण वडा हृष्ट-पुष्ट भी है।"

वात कह डाली, पर मैं दो शब्दो में इसका उत्तर नही दे सकता।—एक मिनट के लिए क्षमा करना।"

आब्लान्सकी का सेक्रेटरी कुछ कागज-पत्र लेकर आया हुआ था। उसे समझा-बुझाकर आब्लान्सकी ने उसे बिदा किया। लेविन इस बीच मे अपना सकोच बहुत कुछ दूर करने मे समर्थ हो चुका था। उसने सहज स्वर मे कहा—"हाँ, तो तुमने मेरे प्रश्न का कुछ उत्तर अभी तक नही दिया!"

आब्लान्सकी ने कुछ गम्भीर होकर कहा—"जब से तुम गये थे, तब से कोई विशेष परिवर्तन मेरे ससुर के परिवार म नही हुआ। पर यह दु ख की वात अवश्य है कि इतने दिनो तक तुम छिपे रहे।"

"दु ख की बात क्यो कहते हो?" यह प्रश्न करते समय लेविन का गला कुछ काँप उठा था।

"यो ही। इस सम्बन्ध मे फिर बातें करेंगे। कुछ भी हो, मैं तुमस अपने यहाँ आने के लिए प्रार्थना करता; पर बात यह हो गई है कि मेरी स्त्री का जी ठीक नही है। यदि तुम मेरी ससुरालवालो से मिलना चाहो, तो जुओलाजिकल गार्डन्स में चार और पाँच के बीच मे मिल सकते हो। किटी वहाँ नित्य स्केटिंग करने जाती है। वहाँ जाओ, और फिर सध्या को तुम हम दोनो कही साथ ही भोजन करेंगे।"

"अच्छी बात है। अच्छा, तो इस समय मैं जाता हूँ।" यह कहकर लेविन चला गया।

लेविन के चले जाने पर आब्लान्सकी के एक साथी ने कहा—"आपका मित्र वडा स्वस्थ और चुस्त दिखाई देता है।"

आब्लान्सकी बोला—"इसमे क्या सन्देह है! वह वडा भाग्य-शाली है। काराजिन जिले में वह प्राय. आठ हजार एकड जमीन का मालिक है! इसके अतिरिक्त वह अभी पूर्ण युवक है, और अधिकतर देहात मे जीवन बिताने के कारण वडा हृष्ट-पुष्ट भी है।"

५

लेविन आब्लान्सकी को अपने आने का स्पष्ट कारण नहीं बता सका
था। बात यह थी कि वह आब्लान्सकी की साली किटी से विवाह
का प्रस्ताव करने आया हुआ था, और संकोच के कारण अपने उद्देश्य
को किसी के आगे प्रकट करने में वह अपने को असमर्थ पा रहा था।
लेविन और श्चरबैट्सकी-परिवारों में पुश्तों से घनिष्ठ
मित्रता चली आती थी। दोनों परिवार प्राचीन, सम्भ्रान्त और प्रति-
ष्ठित थे। लेविन जब मास्को-विश्वविद्यालय में पढ़ा करता था, तब
बूढ़े प्रिन्स श्चरबैट्सकी का लड़का उसका सहपाठी होने के कारण
उसका प्रधान साथी बन गया था। धीरे-धीरे श्चरबैट्सकी-परिवार के
सब लोगों से लेविन की घनिष्ठता हो गई। उस समय डाली (आब्ला-
न्सकी की स्त्री) भी अविवाहित थी। तीनों बहनें—डाली, नाटाली
और किटी—लेविन को अत्यन्त सुन्दर लगती थीं और एक अव-
र्णनीय काव्यमय रहस्य से घिरी हुई जान पड़ती थीं। उनके यहाँ का
सारा पारिवारिक वातावरण उसे अत्यन्त सम्मोहक और सुखकर
लगता था। लेविन जब बहुत छोटा था तभी उसकी मा मर
चुकी थी, और उसके पिता का भी देहान्त हो चुका था। इसलिए
माता-पिता के स्नेह से वञ्चित होने के कारण पारिवारिक शान्ति,
शृङ्खला और सुख से वह अपरिचित था। श्चरबैट्सकी-परिवार के
घनिष्ठ सम्पर्क में आने पर प्रथम बार उसने यह जाना कि पारिवारिक
जीवन की विशेषता क्या है।
इस सुशिक्षित और सुसंस्कृत परिवार की सभी बातें लेविन को
रहस्यमय जान पड़ती थीं। अपने विद्यार्थी-जीवन में वह प्रिन्स
श्चरबैट्सकी की सबसे बड़ी लड़की डाली पर मुग्ध था। पर
जब डाली का आब्लान्सकी के साथ डाली का विवाह हो गया, उसके
बाद वह दूसरी लड़की नाटाली को चाहने लगा। पर नाटाली का
विवाह भी कुछ ही समय बाद किसी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से हो
गया। लेविन ने जिस समय विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त की, उस
समय किटी बहुत छोटी थी। उसके कुछ ही समय बाद उसका
भाई कुमार श्चरबैट्सकी नौसेना में भर्ती होने के बाद बाल्टि-

सागर मे डूबकर मर गया। तब से श्चरबँट्सकी-परिवार मे लेविन का आना-जाना कम हो गया। पर जब इस बार जाडो के प्रारम्भ मे वह मास्को आया, तब किटी को देखकर और उससे मिलकर वह समझ गया कि वास्तव मे वही एक ऐसी लडकी है जिसे वह सच्चे हृदय से प्यार कर सकता है।

लेविन के समान सभ्रान्तवशीय, धनी और स्वस्थ युवक (३२ वर्ष की अवस्था होने पर भी वह अभी पूर्ण युवा था) यदि कुछ भी प्रयत्न करता, तो किटी से उसका विवाह होने मे सम्भवत कोई कठिनाई न पडती। पर चूँकि वह अपनी सम्पूर्ण आत्मा से किटी के प्रेम में निमग्न हो गया था, इसलिए वह उसे एक स्वर्गीय स्वप्नमयी कल्पना-सी लग रही थी, जो उसके समान मर्त्यवासी पुरुष के लिए एकदम दुष्प्राप्य थी। दो महीने तक किटी से प्राय प्रतिदिन मिलते रहने पर भी उससे विवाह का प्रस्ताव करने का साहस उसे न हुआ। अन्त मे अकारण ही यह सोचकर कि उसकी आकाक्षा सफल नही हो सकती, वह एक दिन सहसा भाग खडा हुआ और देहात मे, अपने घर, वापस चला गया।

लेविन की यह धारणा थी कि चूँकि समाज मे उसे कोई विशेष पद प्राप्त नहीं है, और उसके व्यक्तित्व मे भी कोई विशेषता नही है, इसलिए किटी के माता-पिता स्वभावत उसे अपनी लडकी के योग्य नही समझेंगे। उसके प्राय सभी साथी महत्वपूर्ण सरकारी विभागो में एक से एक उच्च पदो पर प्रतिष्ठित हो चुके थे, पर वह एक धनी जमीदार होने पर भी केवल एक साधारण देहाती के अतिरिक्त और कुछ नही बन पाया था। इसलिए वह सोचा करता था कि न तो किटी उसके प्रति आकर्षित हो सकती है, न उसके मा-बाप ही उसे पसन्द कर सकते है।

पर इस बार जब वह घर मे दो महीने अकेला पडा रहा, तब उसके [म]न में यह निश्चित धारणा जम गई कि किटी के प्रति उसका प्रेम उसके [छा]त्र-जीवन की-सी भावुकता नही है; वह अत्यन्त तीव्र और गहन [है], और दिन पर दिन उसे अधिकाधिक विकल करता चला जाता है। [इ]सलिए आज वह यह निश्चय करके मास्को आया हुआ था कि किटी [से] एक बार विवाह का प्रस्ताव करके ही छोडेगा—चाहे उसका कैसा [ही] परिणाम क्यो न हो।

लेविन मास्को मे अपने सौतेले भाई सर्जियस काज़्नीशेव के यहाँ [ठ]हरा हुआ था। काज़्नीशेव मास्को की विद्वन्मण्डली

५

लेविन आल्लान्सकी को अपने आने का स्पष्ट कारण नहीं बता सका था। बात यह थी कि वह आब्लान्सकी की साली किटी से विवाह का प्रस्ताव करने आया हुआ था, और सकोच के कारण अपने उद्देश्य को किसी के आगे प्रकट करने में वह अपने को असमर्थ पा रहा था।

लेविन और श्चरबैट्सकी-परिवारों में पुश्तों से घनिष्ठ मित्रता चली आती थी। दोनों परिवार प्राचीन, सम्भ्रान्त और प्रतिष्ठित थे। लेविन जब मास्को-विश्वविद्यालय में पढ़ा करता था, तब बूढ़े प्रिन्स श्चरबैट्सकी का लड़का उसका सहपाठी होने के कारण उसका प्रधान साथी बन गया था। धीरे-धीरे श्चरबैट्सकी-परिवार के सब लोगों से लेविन की घनिष्ठता हो गई। उस समय डाली (आब्लान्सकी की स्त्री) भी अविवाहित थी। तीनों बहनें—डाली, नाटाली और किटी—लेविन को अत्यन्त सुन्दर लगती थीं और एक अवर्णनीय रहस्यमय रहस्य में घिरी हुई जान पड़ती थीं। उनके यहाँ का सारा पारिवारिक वातावरण उसे अत्यन्त सम्मोहक और सुखकर लगता था। लेविन जब बहुत छोटा था तभी उसकी मां मर चुकी थी, और उसके पिता का भी देहान्त हो चुका था। इसलिए माता-पिता के स्नेह से वञ्चित होने के कारण पारिवारिक शान्ति, आराम और सुख से वह अपरिचित था। श्चरबैट्सकी-परिवार के घनिष्ठ सम्पर्क में आने पर प्रथम बार उसने यह जाना कि पारिवारिक जीवन की विशेषता क्या है।

इस सुशिक्षित और सुसंस्कृत परिवार की सभी बातें लेविन को अत्यन्त सुन्दर जान पड़ती थीं। अपने विद्यार्थी-जीवन में वह प्रिन्स श्चरबैट्सकी की सबसे बड़ी लड़की डाली पर मुग्ध था। पर जब डाली का आब्लान्सकी के साथ शादी का विवाह हो गया, उसी समय से वह मँझली लड़की नाटाली को चाहने लगा। पर नाटाली का भी विवाह कुछ ही समय बाद किसी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से हो गया। लेविन ने जिस समय विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त की, उस समय किटी बहुत छोटी थी। उसके कुछ ही समय बाद [illegible] युवक श्चरबैट्सकी नौसेना में भर्ती होने के बाद बाल्टि[illegible]

समझा जाता था वैसा ही राजनीतिक समाज में भी। लेविन आयु में उससे छोटा था। काजनीशेव लेविन को एक साधारण स्कूली लड़के के समान कच्चीबुद्धि और अपरिपक्व विचारवाला व्यक्ति समझकर उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखता था। इसलिए लेविन उसके आगे अपने हृदय की कोई गुप्त बात कहना पसन्द नहीं करता था। उसने उसे यह नहीं जताया कि वह किस उद्देश्य से मास्को आया है।

चार बजे के समय लेविन जुओलाजिकल गार्डन्स पहुँचा। वहाँ किराय की गाड़ी पर से उतरकर वह बर्फीली पहाड़ी के नीचे उस तालाब के पास पहुँचा, जहाँ का पानी जमकर बर्फ के समान कड़ा हो गया था। तालाब के चारों ओर प्रतिष्ठित दर्शकों की भीड़ लगी हुई थी, और बीच में लोग 'स्केटिंग' कर रहे थे। लेविन ने दूर ही से किटी का स्केटिंग करते हुए देख लिया था, और उसका चिर-परिचित तथापि चिर-नूतन सौन्दर्य देखकर उसका हृदय धड़कने लगा था। लेविन को ऐसा जान पड़ता कि सारी भीड़ किटी की मधुर मुसकान से आलोकित और पुलकित हो रही है। उसके लिए सारी जनता कांटेदार झाड़ी के समान थी जिसके बीच में किटी एक उत्फुल्ल गुलाब के समान शोभित हो रही थी। जितने भी लोग किटी के आस-पास 'स्केटिंग' कर रहे थे, वे लेविन को बड़े सौभाग्यशाली जान पड़ते थे। जब कोई 'स्केटर' किटी से पांव फिसलने के डर से उसे बचाने के उद्देश्य से उसका हाथ पकड़ लेता तो लेविन के कलेजे पर सांप लोटने लगते। किटी को स्पर्श करना उसके लिए सप्तम स्वर्ग में पहुँचने के सुख से भी बढ़कर था।

लेविन सोचने लगा कि उसे भी 'स्केट्स' पहनकर मैदान में उतरना चाहिए या नहीं? इतने में किटी के चचेरे भाई निकोलस श्चेर्बात्स्की ने, जो स्वयं 'स्केट्स' पहने था, उसे पुकारते हुए कहा—"हलो, रूस के चैम्पियन स्केटर! तुम कब आये? चलो, बर्फ बड़ी चिकनी है, 'स्केट्स' पहन लो।"

लेविन ने सकुचाते हुए उत्तर दिया—"मेरे पास 'स्केट्स' नहीं हैं।" वह यद्यपि किटी की ओर आँखें किये हुए नहीं था, तथापि स्पष्टतः वह सब प्रकार उसे देख रहा था। अकस्मात् उसे ऐसा जान पड़ा कि किटी 'स्केटिंग' करती हुई उसी की ओर चली आ रही है। वह [illegible] और [illegible] हुए पगों से आगे को बढ़ी चली आ रही थी।

[illegible] किटी अपने चचेरे भाई के पास आकर [illegible] [illegible] और लेविन की ओर देखा

मुसकराई। लेविन ने इस बार उसे जब निकट से देखा तब वह और अधिक सुन्दर जान पडी। उसके मुख पर सदा की भाँति बच्चो की-सी वही सहज, सरल प्रफुल्लता और सुमधुर तथा स्निग्ध भाव वर्तमान था। उसकी तरल आँखो मे जो शान्त निश्छलता छलक रही थी, वह लेविन को सबसे अधिक आकर्षक जान पडती थी। उसकी मृदु-मन्द मुसकान लेविन को एक अपूर्व रहस्यमय परी-लोक मे पहुँचा देती थी।

लेविन से हाथ मिलाते हुए किटी ने अपनी उसी चिर-परिचित सहज, समद मुसकान के साथ कहा—"क्या आपको यहाँ आये कुछ दिन हो गये है ?"

"मैं ? जी नही, मैं कल—नही, आज ही पहुँचा हूँ। मैं आपसे मिलना चाहता था। मुझे पता नहीं था कि आप भी 'स्केटिंग' करती है, और इतने अच्छे ढग से !"

किटी बहुत ही ध्यानपूर्वक उसकी ओर देख रही थी। सम्भवत वह उसकी घबराहट का यथार्थ कारण मालूम करने की चेष्टा कर रही थी।

"धन्यवाद ! आपकी प्रशसा का महत्त्व मैं मानती हूँ, क्योकि यहाँ के लोगो का विश्वास है कि आप सबसे अच्छे 'स्केटर' है।" यह कहकर किटी अपने एक काले दस्ताने से लगे हुए हिमकणो को हटाने लगी।

"जी हाँ, 'स्केटिंग' से मेरा विशेष प्रेम रहता था। मेरी बडी इच्छा रही है कि मैं इसमें पूर्णता प्राप्त करूँ।"

"आप प्रत्येक काम को प्रेमपूर्वक और पूर्णता के साथ करना चाहते हैं।" यह कहकर किटी मुसकराई। फिर बोली—"चलिए, 'स्केट्स' पहनिए, हम दोनो साथ ही 'स्केटिंग' करेंगे।"

लेविन उसकी ओर भ्रान्तभाव से देखकर सोचने लगा—"साथ ही स्केटिंग करेंगे ! क्या यह मैं स्वप्न तो नही देख रहा हूँ ?"

तत्काल एक जोडा 'स्केट्स' किराये पर लेकर वह पहनने लगा। जो व्यक्ति उसे 'स्केट्स' पहनने मे सहायता कर रहा था, उसने कहा—"आप आज बहुत दिनो बाद आ रहे है, सरकार ! जब से आप गये, तब से कोई दूसरा व्यक्ति आपके समान 'स्केटिंग' कर सकनेवाला यहाँ नही आया !"

तैयार होकर वह किटी के पास आया। वह अभी तक घबरा रहा था, पर किटी की मन्द-मधुर मुसकान ने उसे बहुत-कुछ सान्त्वना

दी। किटी ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया, और लेविन ने उसे पकड़ लिया। दोनों एक साथ 'स्केटिंग' करने लगे। लेविन धीरे-धीरे चाल बढ़ाता चला जाता था, और ज्यों-ज्यों चाल तेज होती जाती थी, त्यों-त्यों किटी अधिक जोर से उसका हाथ दबाती थी—इस डर से कि कहीं गिर न पड़े।

किटी ने कहा—"आपके साथ 'स्केटिंग' करने से मैं भी इस कला मे निपुण हो जाऊँगी। आपके साथ मैं विश्वासपूर्वक चल पाती हूँ।"

"और जब आप मेरे साथ रहती हैं, तो मेरा आत्म-विश्वास भी जग जाता है।" यह कहते ही लेविन अपनी बात से स्वयं घबरा उठा, और उसका मुँह लज्जा से कुछ लाल हो आया। वास्तव मे उसकी इस तरह की बात सुनकर किटी के मुख का भाव भी कुछ रूखा हो गया था, उसके चिकने मस्तक पर बल पड़ने लगा था।

लेविन ने पूछा—"क्या आपको कुछ कष्ट हो रहा है? पर मुझे यह पूछने का अधिकार भी तो नहीं है।"

"क्या? नहीं, कष्ट की कोई बात नहीं हुई है। क्या आप मादमाजेल लिनों से मिल चुके हैं?" उसके स्वर मे विशेष रुखाई थी।

लेविन ने सोचा—"निश्चय ही मेरी बात से उसका जी बुरा गया। ओ भगवान्! मेरी रक्षा करो!"

किटी की बुढ़िया फ्रेंच गवर्नेस किनारे के एक बेंच पर बैठी हुई थी। लेविन उसी की ओर आगे बढ़ा। उससे मिलकर दो-एक बातें करके वह फिर किटी के पास वापस चला आया। तब किटी के मुख से रूखापन चला गया था, और वह पहले की ही तरह मन्द-मधुर भाव से मुस्करा रही थी।

कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद किटी ने पूछा—"क्या आप इस बार यहाँ काफी समय के लिए ठहरेंगे?"

लेविन ने उत्तर दिया—"मैं स्वयं नहीं जानता।"

"आप नहीं जानते! यह क्यों?"

"मेरा यहाँ और ठहरना या न ठहरना आप पर निर्भर करता है।" यह कहते ही वह फिर अपनी बात से स्वयं भीत हो उठा।

किटी ने ऐसा भाव दिखाया जैसे उसने लेविन की बात सुनी न हो, और वह लेविन का हाथ छोड़कर धीरे-धीरे मादमाजेल लिनों की ओर स्केटिंग करती हुई चली गई।

"हे भगवान! मैंने न जाने इस बार कैसी नासमझी की बात कह [illegible]। [illegible] सहायता करो और मेरी बुद्धि ठिकाने लगाओ!"

अपने मन की दुश्चिन्ता को दूर करने के उद्देश्य से वह अकेले 'स्केटिंग' करता हुआ वर्फ पर गोल वृत्ताकार घेरे बनाने लगा। इतने मे एक 'स्केटर' ऊपर पहाडी की ढलवाँ जमीन पर से 'स्केटिग' करता हुआ इस सहज गति से नीचे उतरा कि न तो उसने कमर झुकाई और न हाथ हिलाये।

लेविन ने देखा कि यह नये ढग की कलाबाजी है। वह तत्काल ऊपर चढ़ा और पूर्वोक्त विधि से नीचे उतरने की चेष्टा करने लगा। पर इस नई कला का अभ्यास न होने से उसके पाँव फिसल पडे और वह मुँह के वल गिरा ही चाहता था कि प्रवल चेष्टा से उसने अपने को सँभाल लिया और फिर वडे जोर से हँसता हुआ नीचे आकर वर्फ पर रपटने लगा।

किटी दूर ही से वडी घवराहट के साथ उसे देख रही थी। ज्यो ही लेविन ने अपने को सँभाला, त्यो ही उसने मन ही मन कहा—"शावाश! खूब वचाया!" इसके वाद किटी सोचने लगी—"न जाने क्यो उसे देखकर मुझे वडी प्रसन्नता होती है। मैं जानती हूँ कि मैं उससे प्रेम नही करती, फिर भी उसका मग मुझे इतना क्यो भाता है?"

कुछ देर वाद लेविन 'स्केट्स' उतारकर वापस जाने लगा। किटी अपनी मा के साथ चली जा रही थी। 'गार्डन्स' के फाटक पर लेविन उनसे मिला। किटी की मा ने उसे देखकर कहा—"तुम्हे देखकर वडी प्रसन्नता हुई। हम लोग वृहस्पतिवार को मिला करते है।"

"आज ही वृहस्पतिवार है।"

"तुमसे मिलकर हमे वडी प्रसन्नता होगी।" पर उसके कहने का ढग वडा रूखा था। किटी ने अपनी मा की इस रुखाई का भाव किसी हद तक मिटाने के उद्देश्य से लेविन की ओर देखकर स्निग्ध मुसकान के साथ कहा—"फिर मिलेगे?"

इतने मे आव्लान्सकी वहाँ आ पहुँचा। उसकी सास ने जव डाली के स्वास्थ्य का हाल पूछा तव उसने अत्यन्त खिन्नभाव से एक अपराधी की तरह उस प्रश्न का उत्तर दिया। इसके वाद लेविन का हाथ पकडकर वह उसे अपने साथ ले गया। दोनो 'आँग्लतेर' (इँगलैंड) नामक होटल मे भोजन करने चले गये।

पड गया। किटी की मा उसे बहुत पसन्द करती है। फिर भी मेरा
श्वास है कि तुम्हारे प्रस्ताव के स्वीकृत होने की पूरी सम्भावना है।
र अब तुम्हे इस सम्बन्ध मे अधिक देर न करनी चाहिए।"

जब वे लोग खा-पी चुके, तब एक तातारी नौकर ने बिल पेश किया।
कुल मिलाकर अट्ठाईस रूबल (प्राय छप्पन रुपये) का बिल था। दोनो
ने मिलकर उसे चुकाया। इसके बाद दोनो एक दूसरे से विदा हुए।

लेविन ने डेरे पर पहुँचकर किटी के यहाँ जाने की तैयारी की।
प्राय साढे सात बजे वह प्रिन्स श्चरबैट्सकी के मकान मे पहुँचा।
किटी सध्या से ही बडी घबराहट मे पडी हुई थी। वह 'स्केटिग' के
समय ही भाँप गई थी कि लेविन उससे विवाह का प्रस्ताव करन आया
हुआ है। उस प्रस्ताव को अस्वीकार करने से लेविन के मर्म मे अत्यन्त
निष्ठुर आघात पहुँचेगा, यह बात वह निश्चित रूप से जानती थी। वह
वास्तव में लेविन को चाहती थी, पर इस हद तक नही चाहती थी कि
वह उसके साथ विवाह करने को राजी हो जाय। साथ ही वह
यह भी नही चाहती थी कि उसके कारण लेविन को मर्मपीडा पहुँचे। वह
इसी कारण घबरा रही थी और असमजस मे पडी हुई थी।

किटी का सौन्दर्य दिन पर दिन चन्द्र-कला के समान बढता चला
जा रहा था। मास्को के प्राय सभी सम्भ्रान्तवशीय युवको की आँखें
उसकी ओर लगी हुई थी। नाच-पार्टियो में उसके साथ नाचने की
इच्छा रखनेवाले व्यक्तियो की सख्या बहुत अधिक थी। पर उसके माता-
पिता का ध्यान विशेष करके दो युवको की ओर आकर्षित हुआ था—
एक लेविन और दूसरा कौन्ट व्रान्सकी। लेविन जब जाडो के प्रारम्भ में
किटी से घनिष्ठता बढाने की चेष्टा कर रहा था, उस समय किटी के माता
और पिता के बीच इस सम्बन्ध में वाद-विवाद चलने लगा था कि लेविन
किटी के योग्य पात्र है या नही। बूढा प्रिन्स लेविन का पक्षपाती था,
पर उसकी पत्नी ने किटी के योग्य जिस प्रकार के वर की कल्पना कर
रक्खी थी, लेविन उस आदर्श से बहुत नीचे उतरता था। इसलिए वह
अपने पति की बात को टालती चली जाती थी। लेविन के चले जाने
के कुछ ही समय बाद जब कौन्ट व्रान्सकी पीटर्सबर्ग से आया और
किटी के प्रति अपना प्रेमभाव प्रदर्शित करने लगा, तब किटी की मा
प्रिन्सेस श्चरबैट्सकाया, बहुत प्रसन्न हो उठी और अपने पति से कहने
लगी—'देखा! मैं ऐसा ही वर किटी के लिए चाहती थी।" वास्तव
मे कौन्ट व्रान्स्की मे वे सब गुण वर्त्तमान थे जिन्हे किटी की मा चाहती
थी। वह बहुत धनी, चतुर, प्रतिष्ठित, सभ्य और रूपवान् था; स्वय जार

की सभा में उसे एक विशिष्ट पद प्राप्त था, और सैनिक विभाग में वह उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा था।

पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उसके सुन्दर व्यक्तित्व ने किटी का हृदय जीत लिया था। व्रान्सकी मास्को में आते ही किटी के प्रति आकर्षित हो उठा था; और नाच-पार्टियो में उसके साथ नाचकर, प्रिन्स श्चरबैट्सकी के यहाँ आना-जाना जारी रखकर, उसने किटी के साथ यथेष्ट हेल-मेल बढा लिया था। बूढी प्रिन्सेस श्चरबैट्सकाया को इस सम्बन्ध में कोई सन्देह नही रह गया था कि व्रान्सकी उसकी लडकी से विवाह करने को उत्सुक है। किटी का भी यही विश्वास था, और वह इस बात से बहुत प्रसन्न थी। पर बूढा प्रिन्स (किटी का पिता) प्रारम्भ से ही व्रान्सकी को घृणा की दृष्टि से देखने लगा था। उसका यह विश्वास था कि वह किटी के प्रति प्रेम प्रदर्शित करके केवल अपना मनोविनोद करना चाहता है, वास्तव में उससे विवाह करने का विचार वह नही रखता। पर अपनी पत्नी की किसी बात में दखल देकर झगडा खडा करना वह नही चाहता था, इसलिए वह केवल कुढकर रह जाता था। लेविन से वह बहुत प्रसन्न था। उसका विश्वास था कि लेविन प्रेम को एक अत्यन्त गम्भीर विषय समझता है, जिसकी परिणति केवल विवाह में ही हो सकती है।

पर किटी की मा लेविन से बहुत चिढती थी। इसलिए आज जब लेविन को उसने देखा, तब उसके मन में तनिक भी प्रसन्नता नहीं हुई, बल्कि वह आशंकित हो उठी। उसकी आशंका का कारण यह था कि किटी लेविन से बहुत प्रसन्न रहती थी, बुढिया यह बात भली भाँति जानती थी। वह इस बात से डर रही थी कि लेविन के प्रति किटी की प्रसन्नता के भाव को कहीं प्रेम में परिणत न कर डाले! कहीं किटी भावुकता के फेर में पडकर उससे विवाह के प्रस्ताव का स्वीकृत न कर बैठे! इस चिन्ता से ग्रस्त होकर उसने किटी के पास जाकर उसे लेविन के सम्बन्ध में और सावधान कर दिया।

लेविन निश्चित समय से पहले ही किटी के यहाँ पहुँच गया। [illegible] नौकर ने किटी को लेविन के आने की सूचना दी, तब वह आशंका से धडकने लगी। इस बात की [illegible] उसे [illegible] कि [illegible] लेविन के मुँह पर उसे कहना पडेगा कि वह उससे विवाह करना नहीं चाहती। [illegible] उत्सुकता से [illegible] आता [illegible] — बहुत [illegible] और भला आदमी! कैसा सच्चा उसका हृदय है, कैसा

ही गहरा उसका प्रेम है!—यह बात 'स्केटिंग' के समय उसकी आँखो का भाव देखकर किटी भली भाँति जान गई थी। फिर तत्काल उसे व्रान्सकी का स्मरण हो आया। कैसा सुन्दर, सुघड उसका व्यक्तित्व है! उसकी प्रत्येक बात मे, प्रत्येक व्यवहार मे क्या जादू है! नही, लेविन से स्पष्ट कह देना होगा कि वह उसे नही, किसी दूसरे को चाहती है। पर यह भी कैसे सम्भव हो सकता है! इसी प्रकार के विचारो की उलझन मे वह पडी हुई थी, इतने में लेविन ने भीतर प्रवेश किया।

आते ही उसने कहा—"मै नियमित समय से पहले आ पहुँचा हूँ, ऐसा जान पडता है। अच्छा ही हुआ, क्योकि मैं आपसे एकान्त मे एक बहुत आवश्यक बात कहना चाहता था।"

उसने देखा कि किटी की आँखो में और मुख पर लज्जा और सकोच की प्रगाढ़ छाया अकित हो गई है। पर चूँकि वह यह निश्चय करके आया हुआ था कि वह हर हालत में अपने मन की बात कह-कर ही रहेगा, इसलिए उसने कहा—"मैने आपसे कहा है कि मै यहाँ कब तक ठहरूँगा, यह बात आप पर निर्भर करती है।"

किटी का सिर नीचे को झुकता चला जा रहा था, क्योकि वह जानती थी कि लेविन क्या प्रश्न करेगा और उसे क्या उत्तर देना होगा।

लेविन कहता चला गया—"मै—मेरा आशय यह था—यह है कि—कि—आप मेरी पत्नी—मैं आपसे विवाह करना चाहता हूँ।" बडी कठिनाई से, काँपते हुए गले से, लेविन अन्त में अपने मन की बात कह पाया।

किटी की सारी आत्मा लेविन के इस प्रस्ताव को सुनकर पुलकाकुल हो उठी। वह नही जानती थी कि लेविन की बात का ऐसा हर्षोत्पादक प्रभाव उस पर पडेगा। पर फिर व्रान्सकी की मूर्त्ति उसके मन मे जाग पडी। अपनी स्वच्छ, तरल और निश्छल आँखो से लेविन की ओर देखकर उसने सकरुण स्वर में कहा—"यह असम्भव है—मुझे क्षमा कीजिए!"

एक क्षण पहले किटी लेविन के हृदय-राज्य के कितने निकट थी! कितनी घनिष्ठता से उसके प्राणो से जडित थी! और अब? अब वह उससे एकदम विच्छिन्न होकर दूर—बहुत दूर चली गई थी!

"ठीक ही है! मै जानता था कि होगा यही, जो हुआ है!" यह कहकर लेविन चलने लगा। पर ठीक उसी समय किटी की मा वहाँ आकर खड़ी हो गई, इसलिए उसे रुक जाना पडा।

७

लेविन के साथ किटी को एकान्त मे देखकर क्षण भर के लिए बूढ़ी प्रिन्सेस के मन मे भय का भाव समा गया। पर किटी के मुख का भाव देखकर उसे यह ताड़ने मे देर न लगी कि उसने लेविन के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया है। वह मन ही मन भगवान् को धन्यवाद देने लगी। इसके बाद लेविन के पास बैठकर वह उससे उसके देहाती जीवन के सम्बन्ध की बात पूछने लगी।

कुछ ही समय बाद एक-एक करके अतिथियो का आना आरम्भ हो गया। पहले कौन्टेस नार्ड्सटन आई, जो लेविन से बहुत चिढ़ती थी। उसने आते ही कहा—"ओह मिस्टर लेविन! आखिर आप हम लोगों की 'पापपुरी' म फिर चले आये!"

लेविन मास्को को 'पापपुरी' कहा करता था। कौन्टेस ने फिर कहा—"क्या 'पापपुरी' मे अब सुधार हो गया है या तुम्हारा ही पतन हो गया है?" यह कहकर वह एक बार व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से किटी की ओर देखकर मुसकराई।

लेविन ने उत्तर दिया—"मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप मेरे शब्दों को भूलती नहीं।"

कुछ देर बाद एक दूसरी महिला ने भीतर प्रवेश किया और उसके पीछे एक रूपवान् और सुडौल सैनिक अफसर आ पहुँचा। उसे देखते ही लेविन के मन म यह विश्वास हो गया कि व्रान्स्की वही होगा, जिसकी [illegible] न की थी। ठीक है, किटी का प्रेमिक यही है। इसी के कारण किटी ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। वह [illegible] का अनुमान कर रहा था। अफसर को देखते ही उसके मन म जो एक तीव्र ईर्ष्या का भाव भड़क उठा था, उसमे रह-रह [illegible] लेविन के मन से जाता रहा। लेविन के मन म व्रान्स्की का [illegible] न जानने का कौतूहल जगा, और वह उठकर [illegible] का विचार त्यागकर उधर बैठ गया।

[illegible] व्रान्स्की से लेविन का परिचय कराते हुए दोनों के [illegible] — [illegible]।'

परिचय होते ही व्रान्सकी बडी शालीनता के साथ उठ खडा हुआ और सुमधुर मुसकान से लेविन की ओर देखते हुए बहुत ही प्रेम-पूर्वक उसने उससे हाथ मिलाया और बोला—"मैंने सुना था कि आप जाडो के प्रारम्भ में यहाँ आये हुए थे, पर मेरे यहाँ पहुँचने के पहले ही आप अकस्मात् देहात चले गये थे, इस कारण उस समय आपके दर्शनो का सौभाग्य मुझे प्राप्त नही हो सका था।"

इस पर कौंटेस नार्ड्सटन ने फिर एक बार 'पापपुरी' से लेविन की घृणा का उल्लेख किया। व्रान्सकी बिना किसी द्वेष-भाव के मन्द-मन्द मुसकराने लगा।

व्रान्सकी के इतने ही परिचय से लेविन को इस बात का पता लग गया कि व्रान्सकी के प्रति किटी क्यो आकर्षित हुई है। उसके प्रत्येक रग-ढग, बोल-चाल और पोशाक-पहनावे मे एक सभ्रान्त सरलता और साथ ही सुन्दर शालीनता पाई जाती थी। उसका व्यवहार सरल, स्वाभाविक और मधुर था।

व्रान्सकी ने लेविन का पक्ष लेते हुए कहा—"देहाती जीवन मुझे भी बहुत पसन्द है। विशेषकर जब मै विदेशो मे जाता हूँ तब मुझे रूस की ग्रामीण जनता के बीच में जाकर रहने की उत्कट इच्छा हो आती है।" यह बात कहते हुए वह एक बार लेविन की ओर स्नेह-भरी दृष्टि से देखता था और एक बार किटी की ओर।

उपस्थित मडली मे कुछ देर तक इधर-उधर की बाते होती रही। अन्त मे प्रेतात्माओ को टेबिल पर बुलाने की चर्चा चल पडी। कौंटेस नार्ड्सटन इस विद्या में विशेषज्ञ समझी जाती थी। व्रान्सकी ने अपनी सहज मुसकान से कौंटेस से यह प्रार्थना की कि वह 'अलौकिक प्राणियो' के साथ उसका भी परिचय कराये।

"अच्छी बात है, शनिवार को प्रयोग किया जायगा।" यह कहकर कौंटेस ने लेविन की ओर मुँह करके पूछा—"आप प्रेतात्माओ के अस्तित्व पर विश्वास करते है या नही?"

लेविन ने उत्तर दिया—"मेरी यह राय है कि हमारे देश की तथाकथित सुशिक्षित जनता जो टेबिलो पर मृतात्माओ को बुलाने की बात पर विश्वास करती है, उन अपढ किसानो से कुछ भी अधिक समझदार नही है, जो जादू-टोने में विश्वास करते है।"

इस पर कौंटेस ने एक कटु व्यग्य किया। किटी प्रारम्भ से ही अत्यन्त सदय दृष्टि से लेविन की ओर देख रही थी, और उसकी प्रत्येक बात पर ध्यान दे रही थी। कौंटेस की कड़ी बात सुनकर उसने

तत्काल लेविन का पक्ष लिया और उसकी ओर से स्वयं उत्तर देने लगी।

विवाद जब कुछ ठंडा पड़ा, तो व्रान्स्की ने प्रस्ताव किया कि 'टेबिल-टर्निंग' का प्रयोग उसी समय वहीं पर किया जाय। काउन्ट नार्ड्स्टन ने अपने स्वाभाविक व्यंग्य के साथ उपस्थित जनता को यह सुझाया कि लेविन को माध्यम बनाया जाय। व्रान्स्की के कहने पर किटी एक मेज लाने गई। ठीक इसी समय लेविन से उसकी आँखें मिलीं। उसकी आँखों में करुणापूर्ण प्रसन्नता का भाव वर्तमान था। सारी उपस्थित मंडली में केवल वही जानती थी कि लेविन के हृदय की क्या दशा हो रही है। उसकी आँखें लेविन से कह रही थीं—"मेरे कारण आपको मार्मिक कष्ट पहुँचा है, इसके लिए मैं अपने हृदय से क्षमा चाहती हूँ। मैं आज सुखी हूँ—बहुत सुखी! मेरा प्रेमिक मेरे निकट है। अपने इस सुख के कारण मैं लज्जित हूँ—पर इसमें मेरा वश नहीं है।"

लेविन की आँखें जैसे कहती थीं—"मैं तुमको, अपने को—सारे संसार को घृणा की दृष्टि से देखने लगा हूँ।"

लेविन अपना टोप हाथ में लेकर जाने के लिए उठा। पर ठीक उसी समय बूढ़े प्रिंस श्चरबैट्स्की ने कमरे में प्रवेश किया। लेविन को देखकर उन्होंने हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की, पर व्रान्स्की की ओर उसने आँख उठाकर भी न देखा, यद्यपि व्रान्स्की उससे मिलने के लिए उठ खड़ा हुआ था। व्रान्स्की के प्रति पिता के इस व्यवहार से किटी को बहुत दुख हो रहा था। अन्त में प्रिंस ने बड़ी रुखाई से व्रान्स्की के अभिवादन का उत्तर दिया। प्रिंस की आँखें बचाकर लेविन चुपचाप वहाँ से चल दिया।

८

व्रान्सकी पारिवारिक जीवन से कभी परिचित नही रहा। जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी, तब वह बहुत छोटा था। उसकी मा पीटर्स-वर्ग के सम्भ्रान्त समाज मे एक प्रसिद्ध महिला थी, और बहुत से विशिष्ट व्यक्तियो के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध रह चुका था।

व्रान्सकी सैनिक शिक्षा प्राप्त करके एक प्रतिष्ठित अफसर का पद पाने के बाद पीटर्सबर्ग के धनी सैनिक समाज के उच्छृखल जीवन-प्रवाह में बहने लगा था। सम्भ्रान्त-समाज की महिलाओ मे उसका परिचय होने पर भी उसका प्रेम-सम्बन्ध किसी दूसरे ही समाज मे चलता था। इसलिए इस बार मास्को आने पर जब एक कुलीन घराने की लडकी से घनिष्ठता होने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ था, तब अपने पिछले उच्छृखल जीवन से इस शान्त स्निग्धतामय जीवन के वातावरण की तुलना करने पर उसे एक निराला ही अनुभव हुआ। ऐसी सुखकर, पवित्र अनुभूति इससे पहले उसे और कभी नहीं हुई थी। पर यह विचार एक क्षण के लिए भी उसके मन में उदित नही हुआ कि किटी के समान शुद्ध-हृदय और निष्पाप-प्रवृत्ति लडकी से हेलमेल बढाने और प्रेम प्रदर्शित करने का अर्थ केवल यही समझा जायगा कि वह उससे विवाह करना चाहता है।

वास्तव में अपने समाज के अन्य व्यक्तियो की तरह व्रान्सकी भी विवाहित जीवन से घृणा करता था। वह केवल एक मधुलोभी भ्रमर के समान नये-नये कुसुमो का रस ग्रहण करते रहने मे ही जीवन की सार्थकता समझता था, और प्रेम के किसी भी बन्धन मे अधिक समय तक बँधना नही चाहता था। किटी के पवित्र हृदय का निष्कलुष प्रेम पाकर उसके हृदय में एक नई अनुभूति जगी थी, इसमें सन्देह नहीं; पर उसकी परिणति केवल विवाह के ही रूप मे होनी चाहिए, किटी और उसके मा-बाप उससे केवल यही आशा रखते होगे, इस बात की कल्पना उसके मन मे किसी भी रूप मे उत्पन्न नहीं हुई।

किटी के पास से परम प्रसन्न होकर जब वह घर लौटा, तब पलँग पर लेटते ही गाढ निद्रा मे मग्न हो गया। दूसरे दिन प्रात काल जब वह जगा, तब चित्त मे एक सुन्दर सुखमय शान्ति का अनुभव कर रहा था।

तत्काल लेविन का पक्ष लिया और उसकी ओर से स्वयं उत्तर देने लगी।

विवाद जब कुछ ठंडा पड़ा, तो व्रान्स्की ने प्रस्ताव किया कि 'टेबिल-टर्निंग' का प्रयोग उसी समय वहीं पर किया जाय। काउंट नार्ड्सटन ने अपने स्वाभाविक व्यंग्य के साथ उपस्थित जनता को यह सुझाया कि लेविन को माध्यम बनाया जाय। व्रान्स्की के कहने पर किटी एक मेज लाने गई। ठीक इसी समय लेविन से उसकी आँखें मिलीं। उसकी आँखों में करुणापूर्ण प्रसन्नता का भाव वर्तमान था। सारी उपस्थित मंडली में केवल वही जानती थी कि लेविन के हृदय की क्या दशा हो रही है। उसकी आँखें लेविन से कह रही थीं—"मेरे कारण आपको मार्मिक कष्ट पहुँचा है, इसके लिए मैं अपने हृदय से क्षमा चाहती हूँ। मैं आज सुखी हूँ—बहुत सुखी! मेरा प्रतिबिम्ब मेरे निकट है। अपने इस सुख के कारण मैं लज्जित हूँ—पर इसमें मेरा वश नहीं है।"

लेविन की आँखें जैसे कहती थीं—"मैं तुमको, अपने को—सारे संसार को घृणा की दृष्टि से देखने लगा हूँ।"

लेविन अपना टोप हाथ में लेकर जाने के लिए उठा। पर ठीक उसी समय बूढ़े प्रिंस श्चरबात्स्की ने कमरे में प्रवेश किया। लेविन को देखकर उन्होंने हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की, पर व्रान्स्की की ओर उन्होंने आँख उठाकर भी न देखा, यद्यपि व्रान्स्की उनसे मिलने के लिए उठ खड़ा हुआ था। व्रान्स्की के प्रति प्रिंस के इस व्यवहार से किटी का चेहरा सुर्ख हो गया था। अन्त में प्रिंस ने बड़ी रुखाई से व्रान्स्की के अभिवादन का उत्तर दिया। प्रिंस की आँख बचाकर लेविन चुपचाप वहाँ से चल दिया।

८

व्रान्सकी पारिवारिक जीवन से कभी परिचित नही रहा। जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी, तब वह बहुत छोटा था। उसकी मा पीटर्स-वर्ग के सम्भ्रान्त समाज मे एक प्रसिद्ध महिला थी, और बहुत से विशिष्ट व्यक्तियो के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध रह चुका था।

व्रान्सकी सैनिक शिक्षा प्राप्त करके एक प्रतिष्ठित अफसर का पद पाने के बाद पीटर्सबर्ग के धनी सैनिक समाज के उच्छृखल जीवन-प्रवाह में बहने लगा था। सम्भ्रान्त-समाज की महिलाओ से उसका परिचय होने पर भी उसका प्रेम-सम्बन्ध किसी दूसरे ही समाज में चलता था। इसलिए इस बार मास्को आने पर जब एक कुलीन घराने की लड़की से घनिष्ठता होने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ था, तब अपने पिछले उच्छृखल जीवन से इस शान्त स्निग्धतामय जीवन के वातावरण की तुलना करने पर उसे एक निराला ही अनुभव हुआ। ऐसी सुखकर, पवित्र अनुभूति इससे पहले उसे और कभी नहीं हुई थी। पर यह विचार एक क्षण के लिए भी उसके मन में उदित नही हुआ कि किटी के समान शुद्ध-हृदय और निष्पाप-प्रवृत्ति लडकी से हेलमेल बढाने और प्रेम प्रदर्शित करने का अर्थ केवल यही समझा जायगा कि वह उससे विवाह करना चाहता है।

वास्तव में अपने समाज के अन्य व्यक्तियो की तरह व्रान्सकी भी विवाहित जीवन से घृणा करता था। वह केवल एक मधुलोभी भ्रमर के समान नये-नये कुसुमो का रस ग्रहण करते रहने मे ही जीवन की सार्थकता समझता था, और प्रेम के किसी भी बन्धन में अधिक समय तक बँधना नही चाहता था। किटी के पवित्र हृदय का निष्कलुष प्रेम पाकर उसके हृदय में एक नई अनुभूति जगी थी, इसमें सन्देह नहीं; पर उसकी परिणति केवल विवाह के ही रूप में होनी चाहिए, किटी और उसके मा-बाप उससे केवल यही आशा रखते होंगे, इस बात की कल्पना उसके मन में किसी भी रूप मे उत्पन्न नही हुई।

किटी के पास से परम प्रसन्न होकर जब वह घर लौटा, तब पलँग पर लेटते ही गाढ निद्रा मे मग्न हो गया। दूसरे दिन प्रातःकाल जब वह जगा, तब चित्त में एक सुन्दर सुखमय शान्ति का अनुभव कर रहा था।

उसकी मा उसी दिन पीटर्सबर्ग से आनेवाली थी। सब कामों से निवृत्त होकर वह जब स्टेशन जाने को तैयार हुआ तब ग्यारह बजे का समय हो चुका था। मास्को स्टेशन में पहुचते ही उसे आब्लान्स्की दिखाई दिया। आब्लान्स्की ने परम प्रसन्नतापूर्वक कहा—"हैं, श्रीमान्! आप भी आ पहुँचे! आप किसके लिए आये हैं?"

व्रान्स्की ने मुसकराकर उससे हाथ मिलाते हुए उत्तर दिया—"मैं अपनी मा के लिए आया हूँ। वे पीटर्सबर्ग से आ रही हैं। और आप?"

"मैं? मैं एक युवती महिला को लिवा लाने आया हूँ।"

"अच्छा! यह बात है!"

"कोई बुरी कल्पना मन में न लाइएगा। मेरी बहन आना आ रही है।"

"ओह! श्रीमती केरेनिना!"

"जी हां। श्रीमान् शायद उसे जानते हैं?"

"सम्भव है, जानता होऊँ। उनके पति को तो मैं अवश्य जानता हूँ। केवल मैं ही नहीं, सारा पीटर्सबर्ग उन्हें जानता है। वे बड़े विद्वान्, कुशल राजनीतिज्ञ और धार्मिक हैं। पर आप जानते हैं, इन सब बातों से मेरा कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहता।"

ये लोग बातें कर ही रहे थे कि इतने में एक कुली ने आकर सूचना दी कि 'सिगनल डाउन' हो चुका है। जितने भी लोग प्लेटफार्म पर खड़े थे, सब बड़ी उत्सुकता से गाड़ी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस बीच आब्लान्स्की ने लेविन की चर्चा छेड़ दी थी। व्रान्स्की ने उसके स्वभाव की विचित्रता के सम्बन्ध में गौर किया। आब्लान्स्की ने लेविन की प्रशंसा के पुल बांध दिए और साथ ही यह भी कह दिया कि किटी ने सम्भवतः उसके विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया है। [illegible] उसकी बातों से [illegible] आ गया था।

इतने में इंजन की सीटी सुनाई दी, और पल भर [illegible] की तरह हांफती हुई गाड़ी प्लेटफार्म पर आ लगी। व्रान्स्की [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उस महिला के देखते ही व्रान्सकी की अनुभवी आँखे यह जान गई कि वह एक प्रतिष्ठित और कुलीन घराने की है। जब वह बाहर निकल गई, तब व्रान्सकी ने भीतर प्रवेश करने के पहले फिर एक बार लौटकर बडे ध्यानपूर्वक उसकी ओर देखा। वह केवल अपूर्व सुन्दरी ही नही थी, परन्तु उसकी प्रत्येक गति से एक आश्चर्यजनक शालीनता व्यक्त हो रही थी, जैसी व्रान्सकी ने इसके पहले कभी किसी महिला में नही देखी थी। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात व्रान्सकी को यह मालूम हुई कि उस महिला ने अपनी मार्मिक आँखो के स्निग्ध और सहृदय कटाक्ष से एक बार उसकी ओर देखा था, जैसे वह उसे पहचान रही हो। बाद को भीड मे वह किसी की खोज मे चली गई।

व्रान्सकी भीतर अपनी मा से जाकर मिला और दोनो एक-दूसरे से कुशल-समाचार पूछने लगे। पर व्रान्सकी अन्यमनस्क हो रहा था, और उसके कान दरवाजे के बाहर एक सुमधुर कण्ठस्वर की ओर लगे हुए थे। वह जान गया था कि वह कण्ठस्वर उसी महिला का है, जो अभी उस डिब्बे से बाहर निकली है। वह किसी एक व्यक्ति को सम्बोधित करके कह रही थी—"ईवान पेट्रोविच, यदि आप कही मेरे भाई को देख पावे, तो उसे यहाँ भेज देने की कृपा कीजिएगा।" यह कहकर वह फिर डिब्बे के भीतर चली आई।

व्रान्सकी की मा ने उससे पूछा—"क्या आपके भाई से आपकी भेंट हो गई?"

व्रान्सकी तत्काल समझ गया कि वह महिला आब्लान्सकी की बहन—श्रीमती केरेनिना है। उसने कहा—"आपका भाई यही है। क्षमा कीजिएगा, मैंने आपको पहले नहीं पहचाना। पीटर्सबर्ग मे हम लोगो का परिचय इतना क्षणिक रहा है कि मुझे पूरा विश्वास है, आप भी मुझे पहचान न पाई होगी।"

"मैं आपको कैसे न पहचानती जब कि रास्ते भर आपकी मा मुझसे केवल आपके विषय की ही बाते करती रहीं!" यह कहते हुए महिला के मुख मे उमग और उत्साह का भाव मधुर मुसकान के रूप में झलक उठा। इस समय तक वह उस भाव को छिपाने का प्रबल प्रयत्न कर रही थी जो व्रान्सकी को प्रथम बार देखने से उसके मन मे जगने लगा था। फिर उसने कहा—"पर मेरा भाई यहाँ नहीं दिखता!" व्रान्सकी तत्काल बाहर प्लेटफार्म पर चला गया और पुकारकर कहने लगा—"आब्लान्सकी, यहाँ!"

पूर्वक व्रान्सकी का हाथ पकडकर हिलाया। व्रान्सकी का रोयाँ-रोयाँ उस झटके से विकल हो उठा। इसके बाद वह आश्चर्यमयी महिला अत्यन्त शालीनता के साथ, सहज-सुन्दर गति से बाहर चली गई। व्रान्सकी की आँखे उसी का अनुसरण करती रही।

जब व्रान्सकी अपनी मा का हाथ पकडकर गाडी से नीचे उतरा, तब उसने देखा कि प्लेटफार्म पर बडी हडबडी मची हुई है और लोग घबराये हुए-से चले जा रहे है। स्पष्ट ही कही कोई दुर्घटना घट गई थी। आब्लान्सकी अपनी बहन का हाथ पकडे पीछे को लौट आया। महिलाये फिर से गाडी के भीतर चली गई। व्रान्सकी और आब्लान्सकी लोगो की घबराहट का कारण जानने के लिए चले गये। उनके लौटने से पहले ही महिलाओ को दुर्घटना का हाल मालूम हो गया था। एक व्यक्ति गाडी से कटकर मर गया था। आब्लान्सकी बहुत ही दुखित हो रहा था। वह कहने लगा—"उफ! आना, यदि तुम उसे देख पाती! बडा ही भयकर दृश्य है! उफ कौन्टेस! आप यदि देखती तो आपका हृदय दहल उठता! उसकी स्त्री अपना सिर पीट-पीटकर रो रही है। कहते है कि वह अपने कुटुम्ब का एकमात्र आधार था! उफ, कैसी भयानक दुर्घटना है!"

व्रान्सकी अत्यन्त गम्भीरभाव से मौन खडा था। श्रीमती केरेनिना बडी घबराहट-भरे शब्दो से प्राय फुसफुसाती हुई बोली—"क्या उसकी स्त्री की सहायता का कोई प्रबन्ध नही किया जा सकता?"

व्रान्सकी ने एक बार सुगम्भीर, मौन दृष्टि से उसकी ओर देखा, और "मैं अभी आया, मा!" कहकर बाहर चला गया। थोडी देर बाद जब वह लौटकर आया, तब आब्लान्सकी उस समय कौन्टेस के आगे एक नई अभिनेत्री के गुणो का बखान कर रहा था। व्रान्सकी ने कहा—"मा, अब चलना चाहिए!"

चारो व्यक्ति प्राय साथ-साथ चले। व्रान्सकी अपनी मा का हाथ पकडे था और आब्लान्सकी अपनी बहन का। फाटक के पास स्टेशन-मास्टर ने उन लोगो को रोका और व्रान्सकी से कहा—"आपने मेरे सहकारी को दो सौ रूबल (प्राय चार सौ रुपये) दिये है। कृपा करके यह बता दीजिए कि वे रुपये आपने किसके लिए दिये है।"

व्रान्सकी ने कुछ रुखाई के साथ उत्तर दिया—"विधवा के लिए। मेरी समझ मे नही आता कि इस प्रश्न की आवश्यकता ही क्यो आ पड़ी!"

अन्त में आना ने सकरुण स्वर में कहा—"प्यारी डाली, मुझे स[illegible] बातें मालूम हैं।" डाली ने रुखाई के साथ एक बार उसकी ओर देखकर आँखें नीची कर लीं।

आना कहती चली गई—"डाली, मैं तुम्हारे दुख की [illegible] का अनुभव भली भाँति कर रही हूँ और अपने भाई का पक्ष लेकर तुम्हें झूठी सान्त्वना देने का ढोंग नहीं रचना चाहती। मैं हृदय से तुम्हारे लिए दुःखित हूँ, प्यारी डाली!" यह कहकर वह वास्तव में रोने लगी।

पर डाली की रुखाई में इस बात से कोई अन्तर न पड़ा। उसने कहा—"मुझे कोई सान्त्वना नहीं दे सकता। बिगड़ी हुई बात अब किसी प्रकार बन नहीं सकती। सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो चुका है।"

"पर डाली, कोई ऐसा उपाय अवश्य सोच निकालना है, जिससे इस भयानक स्थिति से तुम्हारी भी रक्षा हो और घर की भी।"

"अब कोई उपाय नहीं हो सकता, सब कुछ समाप्त हो गया है।"

"अच्छा डाली, मैं तुम्हारे मुह से सारा हाल सुनना और समझना चाहती हूँ। उसे जो कुछ कहना था वह कह चुका, अब तुम कह सुनाओ।"

"तो सुनो। तुम्हें मालूम है, मेरा विवाह हुए प्राय नौ वर्ष हो गये, और इतने वर्षों तक मेरा यह विश्वास बना रहा कि स्टीवा—स्टीफेन आर्केडिच मुझे छोड़कर और किसी दूसरी स्त्री से सम्बन्ध नहीं रखता। पर अकस्मात् मुझे जब उसके एक पत्र से पता लगा कि वह हमारे घर की भूतपूर्व फ्रेंच गवर्नेस से—ओ भगवान्! यह कैसी भयंकर बात है, तनिक तुम्हीं अपने मन में सोचो! उफ्!" यह कहकर वह सिसक-सिसककर रोने लगी।

आना ने भी आँसू गिराते हुए कहा—"मैं खूब समझती हूँ, प्यारी डाली, तुम्हारे मन की पीड़ा का अनुभव मैं भली भाँति कर रही हूँ।"

"पर उसके हृदय में अपने घृणित कर्म के लिए तनिक भी पश्चात्ताप नहीं हो रहा है।"

आना ने इस बात का उत्तर मुस्कराते हुए कहा—"नहीं डाली, ऐसा न कहो। उसके पश्चात्ताप का अन्त नहीं है। उसके हृदय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो रहा है। तुम जानती हो, वह चाहे कैसी ही [illegible] कुछ कहो न कहे, पर उसका हृदय बहुत ही कोमल है। वह [illegible] [illegible] [illegible] से [illegible] है, डाली! मेरी एक बात तुम्हें मान[illegible]

चटी मालूम होगी, पर मैं बिलकुल सच कह रही हूँ। तुम विश्वास करो, वह सदा तुम्हे अपने अन्त करण से चाहता रहा है, और तुम्हारा आदर करता आया है। वह अत्यन्त करुणा के साथ मुझसे कहता था—"डाली स्त्री नही, एक देवी है, पर वह अब मुझे किसी प्रकार क्षमा नही करेगी !"

डाली का हृदय आना की इस तरह की बातो से बहुत-कुछ पिघल गया। पर फिर कुछ सोचकर वह आवेग के साथ कहने लगी—"फ्रेंच गवर्नेस बहुत स्वस्थ और सुन्दर है, और मेरा रूप और यौवन एकदम नष्ट हो चुका है। पर किसकी खातिर मेरी यह दशा हुई है? केवल उसके (डाली के पति के) और उसके बच्चो के लिए। क्या उसने कभी इस बात पर भी विचार किया है? घर का सारा जमा-जमाया कारोबार उखडने जा रहा है, पर मैं क्या करूँ! इसमे मेरा क्या अपराध है! बेचारे बच्चो की क्या दशा होगी! उफ, आना! मुझसे अब रहा नही जाता; तुम्ही कोई उपाय बताओ!" यह कहकर वह फिर बिलख-बिलखकर रोने लगी।

"डाली, तुम्हे ससार का अनुभव नही है, पर मैं जानती हूँ कि स्टीवा (आब्लान्सकी) के स्वभाव के व्यक्तियो का आचरण बाहर चाहे कैसा ही क्यो न हो, पर घर की स्त्री के प्रति उनके हृदय मे श्रद्धा और आदर का भाव रहता है। यदि तुम्हारे हृदय मे स्टीवा के प्रति प्रेम का एक कण भी शेष रह गया हो, तो मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम पिछली बातो को एकदम भूल जाओ और उसे क्षमा—हाँ, क्षमा कर दो !"

डाली आना की बातो पर कुछ देर तक मौनभाव से विचार करती रही। इसके बाद आँसे पोछकर बोली—"चलो, तुम्हे तुम्हारा कमरा दिखा दिया जाय।"

दोनों पति-पत्नी के बीच इस तरह की बातें होती देखकर [illegible] समझ गई कि अब खतरे की कोई बात नही रही।

प्राय साढे नौ बजे के समय अचानक व्रान्सकी आ पहुँचा। [illegible] देखकर आना के मन मे हर्ष, विस्मय और भय के भाव एक [illegible] उत्पन्न हुए। व्रान्सकी के अभिवादन के उत्तर में आना [illegible] हिलाकर भीतर चली गई। व्रान्सकी भीतर नही आया। [illegible] के साथ थोड़ी देर तक खड़े-खडे बाते करके और उसे एक भोज [illegible] निमत्रण देकर वह चला गया। किटी उस समय वहीं थी। [illegible] सोचा कि व्रान्सकी निश्चय ही उससे मिलने आया था और [illegible] को देखकर सकोच के कारण नहीं मिला। पर आना का हृदय [illegible] दूसरी ही बात उसके कानों में कह रहा था।

११

जिस विराट् नृत्योत्सव का उल्लेख किटी ने आना से किया था, उसकी प्रतीक्षा वह (किटी) प्रतिदिन, प्रतिपल वडी उत्सुकता से कर रही थी। उसे पूरा विश्वास था कि उसी नाच मे उसके भाग्य का निर्णय होगा।

अन्त मे वह दीर्घ-प्रत्याशित दिन आ ही पहुँचा। किटी ने उस दिन कई घंटे अपने सजाव-शृगार मे व्यतीत किये थे। जब वह बन-ठनकर अपनी मा के साथ नृत्य-भवन में पहुँची, तब नाच को आरम्भ हुए थोडी ही देर हुई थी। अभी तक बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्ति नही आ पाये थे।

उस दिन किटी के स्वच्छ और स्वस्थ सौन्दर्य के साथ उसकी मनोहर वेशभूषा का ऐसा अच्छा मेल हो रहा था कि जो नृत्य-कला-विशेषज्ञ पुरुष वहाँ आये हुए थे, वे सब उसे मुग्ध दृष्टि से देख रहे थे। प्रधान सञ्चालक जार्ज कोर्सुन्सकी अभी एक कौन्टेस के साथ नाच चुका था। किटी को देखते ही वह उसके पास गया और उससे नाचने का प्रस्ताव करके उसकी पतली कमर में हाथ डालकर सहज स्वाभाविक गति से नाचते हुए झाड-फानूसो से आलोकित उस विशाल हॉल का चक्कर लगाने लगा। कोर्सुन्सकी बीच-बीच में किटी के रूप-गुण और नृत्य-कला की प्रशसा करता जाता था। किटी का मन आज यो ही उल्लसित हो रहा था, इसलिए वह कोर्सुन्सकी की बाते सुनकर प्रसन्नतापूर्वक मुसकरा रही थी।

जब दोनों काफी नाच चुके, तब कोर्सुन्सकी किटी के अनुरोध से उसे उस स्थान पर ले गया, जहाँ रग-बिरंगे वस्त्र पहने हुई स्त्रियो और सुसज्जित पुरुषो की भीड लगी हुई थी। आना भी वहाँ खडी थी, और उसके पास ही व्रान्सकी भी खडा था। जिस दिन उसने लेविन के प्रेम-प्रस्ताव को अस्वीकृत किया था, उस दिन से व्रान्सकी को उसने नही देखा था। आज के उत्सव की भीड में उसे देखते ही उसका सारा शरीर प्रेम के हर्ष से पुलकित हो उठा।

पर आना को देखकर किटी चकित हो रही थी। आना एक काले रंग की बढ़िया मखमली पोशाक पहनकर आई हुई थी। किटी की

नामक उन्मादक नृत्य में व्रान्सकी के साथ नाचेगी, तब निश्चय ही व्रान्सकी उसके प्रति अपना प्रेम प्रकट करके विवाह का प्रस्ताव करेगा।

व्रान्सकी के साथ प्रथम बार नाच चुकने के बाद किटी कुछ और युवकों के साथ भी नाची। नाचती हुई वह एक बार आना के पास तक चली आई। आना के मुख का भाव आज उसे एकदम अपूर्व और निराला लग रहा था। उसकी हर्षोद्दीप्त आँखो से उज्ज्वल पकाश की तीखी किरणें विखरी पडती थी। किटी सोच रही थी कि आना आज इतनी अधिक प्रसन्न क्यो है? उसके मुख का सहज उदास भाव आज कहाँ तिरोहित हो गया? उसके अनुपम सौन्दर्य ने सारे उपस्थित युवक-समाज पर जो एक जादू की-सी मोहनी डाल दी है, क्या अपनी इसी सफलता के कारण उसके मुख पर ऐसा सदीप्त भाव झलक रहा है! अथवा किसी विशेष मनचाहे व्यक्ति पर पूर्ण प्रभाव जमाने के कारण वह इतनी प्रसन्न हो रही है? इस कल्पना से किटी को चैन नही मिल रहा था। वह सोच रही थी कि वह विशेष व्यक्ति कौन है, जिसके हृदय को जीतकर आना विजयिनी रानी के समान उल्लसित हो रही है? कही 'वह' तो नही है?

वास्तव मे जब-जब व्रान्सकी आना से बोलता था, तब-तब उसकी पुलकित पुतलियो में हर्षोन्माद छलक उठता था। और व्रान्सकी को किटी बडे ध्यान से उसे देख रही थी। आना के निकट आते ही उसका मस्तक ऐसे सम्भ्रम और सम्मान से झुक जाता था कि मानो वह उसके चरणो पर लोटना चाहता है। आना की आँखो में उदासीनता का भाव देखते ही वह सहम उठता था और प्रसन्नता की झलक देखते ही स्वय भी अत्यन्त विनम्रतापूर्वक मुसकराने लगता था—ठीक जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक के इशारो पर नाचता है। किटी का हृदय यह सब दृश्य देख-देखकर भयकर वेग से धडकने लगा। आज तक वह व्रान्सकी के मुख मे जो सहज, शान्त और स्थिर भाव देखती आई थी, उसका लेश भी इस समय वर्त्तमान नही था। वह अत्यन्त चञ्चल और अस्थिर दिखाई देता था। आना के साथ जब वह बाते करता था, तब ऐसा जान पडता था, जैसे वह इस मृत्युलोक से उठकर किसी रहस्य-लोक मे पहुँच गया है। किटी एक भयकर आशका से सिहर उठी।

जब 'माजुर्का' नामक नृत्य का समय आया, तब व्रान्सकी को अपने पास आते न देखकर किटी की घबराहट और अधिक बढ गई। इस

आकर्षण प्रतिपल बढता चला जाता था। उसकी सीधी-सादी काले रग की पोशाक, मोतियो का कण्ठहार और घुंघराले बाल मिलकर उसे एक अवर्णनीय सम्मोहक रूप प्रदान कर रहे थे, पर उसकी उस निराली मोहिनी मे किटी को एक निर्मम और आतककारी इन्द्रजाल की शैतानी माया का आभास दिखाई दे रहा था। किटी स्वय उसके रूप पर मुग्ध हो रही थी और साथ ही उसका हृदय एक वज्र-कठिन निराशा के भार से दबता चला जाता था।

दोनो प्रेमोन्माद-ग्रस्त व्यक्ति—आना और व्रान्सकी—स्वप्न-विभोर और समाज तथा ससार से बेसुध-से होकर नाच रहे थे। नाचते-नाचते एक बार दोनो किटी और कोर्सुन्सकी की जोडी से जा भिडे। व्रान्सकी ने मुग्ध मुसकान मुख पर झलकाते हुए किटी से कहा—"आज का नाच बहुत अच्छा जमा है!"

मरे मन से किटी बोली—"जी!"

माजुर्का समाप्त होने पर गृहस्वामी ने आना को रात्रि-भोजन के लिए अनुरोधपूर्वक विवश किया। कोर्सुन्सकी ने उससे फिर एक बार नाचने का प्रस्ताव किया, पर आना बोली—"बस, अब अधिक नही! आपके मास्को में मै एक दिन में जितना नाच चुकी हूँ, पीटर्सबर्ग मे उतना वर्ष भर मे भी नहीं नाच पाती। अब मै थक गई हूँ। यात्रा के पहले मै थोडा-सा आराम चाहती हूँ।"

व्रान्सकी बोला—"तो क्या आप कल निश्चितरूप से चली जावेगी।"

उसके इस प्रश्न की ढिठाई से चकित होकर आना बोली—"जी हाँ, विचार तो यही है।"

व्रान्सकी की ढिठाई इस वार कुछ वढ गई थी। उसने सीधे उसकी आँखो की ओर देखते हुए कहा—"आप अव भी यह पूछना चाहती है कि मैं किस काम से जा रहा हूँ? आपको जानना चाहिए कि अब छाया की तरह आपके पीछे लगे रहने के अतिरिक्त मेरे लिए और कोई चारा नही है।"

तूफानी हवा का वेग वढता चला जाता था और वर्फ चारो ओर से उडकर दोनो के कपडो और मुखो पर पड रही थी। इञ्जिन ने हृदय-विदारक शब्द से सीटी वजाई। सीटी का वह शब्द रात के उस भयङ्कर तूफान के स्वर से ठीक मेल खा रहा था। आना के भीतर भी ठीक उसी प्रकार का तूफान मच रहा था। इसलिए सारा वातावरण उसे वहुत सुन्दर जान पडता था। व्रान्सकी आना की भीतरी दशा का थोडा-वहुत अनुभव कर रहा था। उसने कहा—"यदि मेरी वात मे आपको कष्ट हुआ हो, तो क्षमा करे।"

आना से कुछ उत्तर देते नही वन रहा था। अन्त मे अपने को किसी कदर सँभालकर उसने कहा—"आप यदि वास्तव मे एक सच्चे और भले आदमी है, तो मै आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप इन सव वातो को भूल जावे।"

"आपका एक-एक शब्द, आपकी एक-एक अदा मेरे मन मे वस चुकी है। अव भूलना मेरे लिए असम्भव है।"

"वस! वस! आप मेरे ऊपर वडा अन्याय कर रहे है।"

पर आना के शब्द चाहे कुछ भी कहते हो, उसके मुख का पुलकित भाव व्रान्सकी से कुछ दूसरी ही वात कह रहा था।

रात भर आना ठीक तरह से सो नही पाई। वह इसी उधेड-बुन मे रही कि व्रान्सकी जो उसके पीछे पड गया है, उसका परिणाम क्या होगा। दूसरे दिन जब गाडी पीटर्सबर्ग स्टेशन पर ठहरी, तब सवसे पहले आना की आँखे जिस व्यक्ति पर पडी वह था उसका पति। उसे देखते ही वह मन ही मन कहने लगी—"हे भगवान्! उसके कान इतने लम्बे क्यो है!" वास्तव मे उसे देखकर उसका मन प्रसन्न होने के वदले अत्यन्त खिन्न हो उठा। इसका कारण उस समय कुछ सोच नही पाई। उसने पूछा—"सेरेजा कुशल से तो है?"

उसके पति ने कहा—"वस, तुम केवल अपने लडके की कुशल पूछकर ही रह गई? मेरे वारे मे कुछ पूछना तुमने उचित नहीं समझा? खैर! सेरेजा अच्छी तरह से है, चिन्ता की कोई वात नही है।" वह अपने प्रत्येक शब्द के पीछे मुसकरा रहा था, पर उसकी मुसकान

म आफिस के एक प्रधान कर्मचारी की स्वाभाविक रुखाई, [illegible] व्यंग्य का भाव वर्तमान था।

व्रान्सकी अभी तक जैसे यह बात भूला हुआ था कि आना [illegible] कोई पति भी है! पर ज्यों ही उसने केरेनिन को देखा, त्यों ही [illegible] हृदय में एक निर्मम आघात-सा पहुँचा। साथ ही यह बात समझ[illegible] भी उसे देर न लगी कि आना उस रूखे, अरसिक व्यक्ति से, चा[illegible] कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो, कभी प्रेम नहीं कर स[illegible]

आना ने व्रान्सकी का परिचय अपने पति से कराया। केरेनि[illegible] अपनी स्वाभाविक रूखी और व्यंग्य-भरी मुसकान के साथ [illegible] 'अच्छा! शायद मैंने इन महाशय को पहले देखा है। तुम मा [illegible] गई और बेटे के साथ आई, यह अच्छा ही हुआ।"

व्रान्सकी अपने प्रति इस अवज्ञा से बहुत पीड़ित हुआ, पर [illegible] भी उसने कहा—'मैं आपसे कभी घर पर मिलने की आशा [illegible] हूँ।

केरेनिन ने उसी उदासीनता से उत्तर दिया—"मुझे बड़ी प्रसन्[illegible] होगी। हम लोग सोमवार को घर पर मित्रों से मिला करते हैं।

व्रान्सकी चला गया। आना उसके प्रत्येक पद-शब्द को [illegible] से सुनती रही। इसके बाद वह अपने पति के साथ एक गाड़[illegible] बैठकर घर की ओर चली गई।

१ ३

घर पहुँचने पर सबसे पहले जो व्यक्ति आना से मिला, वह था उसका लडका सेरेजा। अपनी मा को देखते ही वह दौडता हुआ सीढियो से नीचे उतरा और आनन्द तथा उल्लास से प्राय नाचते हुए पुकारने लगा—"अम्मा! अम्मा!" इसके बाद वह आना के गले से लिपट गया और अपनी 'गवर्नेस' से बोला—"मैने कहा था न कि वह निश्चय ही अम्मा है।"

अपने प्यारे लडके को देखते ही आना के हृदय मे आज एक ऐसी नई वेदना जागने लगी, जिसके यथार्थ रूप को वह स्वय नही समझ पाती थी। उसने प्यार से उसका मुँह चूमा और डाली के बच्चो ने उसके लिए जो खिलौने भेजे थे उनको उसके सामने रखती हुई वह बोली—"मास्को मे एक बडी अच्छी लडकी है, जिसका नाम है टान्या। वह पढने-लिखने मे बहुत तेज है, और दूसरे बच्चो को भी सिखा सकती है।"

सेरेजा ने अपनी प्यारी-प्यारी आँखो मे विस्मय और जिज्ञासा का भाव प्रकट करते हुए पूछा—"क्या मै उससे बुरा और कमसमझ हूँ?"

"नही बेटा, मेरे लिए तुम ससार के सब बच्चो से अच्छे हो!" यह कहकर आना ने फिर एक बार उसका मुँह चूमा।

केरेनिन दिन मे आफिस चला गया। आफिस से लौटकर आना से उसने मास्को का समाचार पूछा। केरेनिन ने सब सुनकर इस बात पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की कि आब्लान्सकी और उसकी पत्नी के बीच समझौता कराने मे आना सफल रही। पर साथ ही आब्लान्सकी के सम्बन्ध मे उसने अपनी बडी कडी राय प्रकट की। उसने कहा—"ऐसा व्यक्ति, चाहे वह तुम्हारा भाई क्यो न हो, कभी क्षमा के योग्य नही समझा जा सकता।"

आना जानती थी कि नैतिक विषयो मे उसका पति बहुत स्पष्टवक्ता और कठोर-स्वभाव है। इसे वह एक बडा गुण समझती थी, और इस बात के लिए मन ही मन उसकी प्रशसा करती थी।

ो पूरी आशा उसके मन मे थी। सयोगवश उस दिन व्रान्सकी किसी कारण आ सका। इस बात से आना को ऐसी निराशा हुई कि वह स्वय पने मन के उस भाव से चकित रह गई। तब से वह निश्चित रूप समझ गई कि इतने दिनो तक वह अपने आपको धोखा दे ही थी, और वास्तव मे उसका अन्त करण इस बात से प्रसन्न है क व्रान्सकी उसका पीछा कर रहा है, यदि वह उसका पीछा न करे, ो उसके (आना के) लिए जीवन का कोई अर्थ ही नही रह ायगा।

जिस दिन अपने मन की इस वास्तविक भावना का पता आना को गा, उस दिन वह आतक से सिहर उठी। उसने सोचा कि उसके समान क प्रतिष्ठित और सम्भ्रान्त कुल की विवाहिता महिला, जिसके लडके ी आयु आठ वर्ष की हो चुकी है, अपने सर्वमान्य और सुयोग्य पति ो धोखा देकर एक युवक प्रेमिक के मोह-जाल मे फँसने लगे, इससे बढ-कर अनर्थ की बात और क्या हो सकती है! पर बीच-बीच मे शैतान उसके कानो में यह बात भरता रहता—"तुम्हारा पति चाहे कैसा ही मान्य और योग्य राजनीतिज्ञ क्यो न हो, वह प्रेम करना नही जानता। वह बहुत रूखा और अरसिक है, और तुम्हारे समान अपूर्व सुन्दरी और रसमयी नारी की प्रेम-तृष्णा वह कभी नहीं बुझा सकता। इसलिए जो सुन्दर, प्रेम-कला-प्रवीण युवक तुम्हारे पीछे लगा हुआ है, उसे अपना लो और सुखी बनो!"

इस तरह की बाते सोचते-सोचते आना असह्य मानसिक वेदना से कराह उठती और करुण प्रार्थनापूर्वक मन ही मन कहती—"ओ भगवान्! मुझे बचाओ!"

दलचस्पी लेने लगा और रात-दिन किसानो के बीच में रहकर ससार ो एक सहृदय दार्शनिक की दृष्टि से देखने और समझने की चेष्टा रने लगा। उसके आश्चर्य और प्रसन्नता की सीमा न रही जब उसने खा कि वह किटी को दिन पर दिन अधिकाधिक भूलता जा रहा है। फिर भी उसके हृदय की गहराई मे जो काँटा गडा हुआ था, वह उखडा नही। वह बडी अधीरता के साथ किटी के विवाह का समाचार सुनने की प्रतीक्षा करने लगा। उसे ऐसा विश्वास हो रहा था कि जब उसे यह बात निश्चित रूप मे मालूम हो जायगी कि किटी का विवाह व्रान्सकी से हो चुका है, तब वह ठीक उसी प्रकार आराम का अनुभव करेगा जिस प्रक,र कि फोडा फूट जाने पर व्यथा बहुत कम हो जाती है।

इधर किटी का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता चला जाता था। उसके माता-पिता उसके सम्बन्ध मे बहुत चिन्तित हो उठे थे और मास्को के प्राय सभी नामी डाक्टरो से परीक्षा करा चुके थे। पर दुख की बात यह थी कि रोग के निदान और उपचार के सम्बन्ध मे एक डाक्टर का मत दूसरे से नही मिलता था।

वास्तव मे प्रिन्स और प्रिन्सेस श्चरबैट्सकी जानते थे कि किटी की बीमारी का मूल कारण क्या है। विशेषकर बूढी प्रिन्सेस व्रान्सकी पर विश्वास करके बहुत पछता रही थी। बूढा प्रिन्स पहले से ही जानता था कि वह धोखा देगा, और उसने अपनी पत्नी को उसके सम्बन्ध में सचेत भी कर दिया था, इसलिए वह सारी दुर्घटना के लिए अपनी पत्नी को ही दोषी ठहरा रहा था और उससे बहुत असन्तुष्ट हो उठा था।

किटी के मन की दशा कुछ और ही हो रही थी। जो कोई भी व्रान्सकी की धोखेबाजी के सम्बन्ध मे उसके प्रति समवेदना प्रकट करता उससे वह बेतरह बिगड बैठती। डाली अपनी बहन की मानसिक दशा से भली भाँति परिचित थी, तथापि उसे सान्त्वना देने की चेष्टा किये बिना उसे चैन नही पड़ रहा था।

एक दिन किटी के पास जाकर डाली ने कहा—"बहन किटी, वह व्यक्ति इस योग्य नही है कि उसके लिए तुम अपनी मानसिक शान्ति और शारीरिक स्वास्थ्य नष्ट करो।"

किटी अत्यन्त उत्तेजित होकर बोल उठी—"तुम क्या यह समझती हो कि मै उस व्यक्ति के कारण मरी जा रही हूँ, जिसने अत्यन्त नीचता-पूर्वक मेरे प्रेम को ठुकरा दिया? तुम मेरी बहन होकर ऐसी बात कहती हो! और साथ ही यह ढोंग रचती हो कि तुम मेरे साथ सहानुभूति रखती हो!"

अमंगलकारी धूमकेतु की तरह व्रान्सकी न जाने कहाँ से आकर, उसके सरल, सुन्दर और स्वास्थ्यपूर्ण जीवन का सारा क्रम नष्ट-भ्रष्ट करके चला गया। व्रान्सकी को अब वह हृदय से घृणा करने लगी थी, इसलिए उसके चले जाने से उसे कोई दुःख नहीं था। पर लेविन का प्रेम ठुकराकर जो भयङ्कर भूल उसने की थी, उसके प्रायश्चित्त का कोई उपाय न रह जाने से वह एक पल के लिए भी चैन नहीं पा रही थी।

जब डाक्टरों की चिकित्सा से किटी को कुछ भी लाभ होते न दिखाई दिया, तब अन्त में उसके माता-पिता ने उसे हवा बदलने और इलाज के लिए जर्मनी के स्वास्थ्यकर स्थानों में ले जाने का निश्चय किया।

१५

प्रिन्सेस बेट्सी के यहाँ सम्भ्रान्त-वंशीया महिलाओं की भीड़ लगी हुई थी। विभिन्न विषयों की चर्चा चल रही थी। थियेटर, नाच, गाना, रंग, प्रेम आदि कोई भी विषय छूटने नहीं पाता था। कुछ समय बाद आना और उसके पति की चर्चा चल पड़ी। आना की एक सगिनी ने कहा—"जब से आना मास्को से आई है, तब से उसके रंग-ढंग एकदम बदल गये हैं।"

राजदूत की पत्नी ने कहा—"सबसे मुख्य परिवर्तन यह हुआ है कि वह अपने साथ अलेक्जण्डर व्रान्सकी की छाया ले आई है।"

एक दूसरी महिला बोली—"तो उसमें क्या हुआ! किसी सुन्दर पुरुष की छाया को अपने साथ लिये रहना तो एक सुन्दरी स्त्री के लिए गौरव की बात समझी जानी चाहिए।"

आना की सगिनी ने उत्तर दिया—"पर इस प्रकार की स्त्री गौरव का परिणाम बड़ा बुरा होता है।"

प्रिन्सेस म्याग्काया नाम की एक अधेड़ महिला इस पर बोल उठी—"आना केरेनिना एक बहुत अच्छी स्त्री है। मैं उसके पति को बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती, पर वह स्वयं मुझे बहुत प्यारी लगती है।"

राजदूत की पत्नी ने कहा—"उसके पति से तुम क्यों अप्रसन्न हो? मेरे पति तो कहते हैं कि केरेनिन के जोड़ का राजनीतिज्ञ यूरोप में कोई दूसरा नहीं है।"

"मेरे पति भी ठीक यही बात कहते हैं। पर मैं इस बात पर विश्वास नहीं करती। [illegible] अपने पतियों की [illegible] हो गई है, इसी कारण किसी भी बात का हम [illegible]

इतने मे व्रान्सकी ने भीतर प्रवेश किया। प्रिन्सेस बेट्सी ने उसे स्वागतपूर्वक बिठाया। व्रान्सकी एक नाटक-घर से आया था, और एक फ्रेंच अभिनेत्री की प्रशसा करने लगा था, पर किसी ने बीच ही मे उसे टोक दिया और किसी दूसरे विषय की चर्चा छेड दी।

कुछ ही समय बाद दरवाजे के बाहर किसी के पाँवो की ताल-लय-युक्त ध्वनि सुनाई दी। प्रिन्सेस बेट्सी यह जानकर कि आना आ रही है, व्रान्सकी की ओर कौतूहल के साथ देखने लगे। व्रान्सकी ने जब आना को देखा, तब उसके मुख का प्रमोदपूर्ण उच्छृखल भाव एकदम बदल गया, और पुलक-हर्ष का एक सयत, शान्त और साथ ही कातर भाव व्यक्त हो उठा।

आना अपने साथ सौन्दर्य की बहार लाती हुई और अत्यन्त शालीनता के साथ एक-एक पग आगे बढाती हुई ड्राइग-रूम में आई। उसने अपनी सहज मधुर मुसकान से प्रत्येक परिचित व्यक्ति की ओर देखा। जब उसने व्रान्सकी की ओर देखा, तब व्रान्सकी ने सिर झुका.र उसका अभिवादन किया, और एक कुर्सी उसकी ओर बढा दी। आना व्रान्सकी के इस व्यवहार से सकोच का अनुभव करने लगी, और उसकी भौंहो मे कुछ बल-मे पड गये। व्रान्सकी के प्रति अवज्ञा का-सा भाव दिखाकर वह प्रिन्सेस बेट्सी से बाते करने लगी। उसने कहा—"क्षमा करना, मैं कौन्टेस लीडिया के यहाँ चली गई थी, इसलिए जल्दी न आ सकी। सर जान भी वहाँ आये हुए थे। वे बडे मजे के आदमी है।"

"कौन, वह पादडी ?"

"हाँ वही। वे भारतीय जीवन की बडी विचित्र-विचित्र बातें हमें सुना रहे थे।"

बहुत देर तक उपस्थित महिलाये सर जान के सम्बन्ध में बातें करती रही। इसके बाद प्रेम और विवाह-सम्बन्धी सर्वप्रिय विषय चल पडा। आना ने इस चर्चा में विशेष भाग नही लिया। व्रान्सकी बडी उत्सुकता से उसकी ओर देख रहा था कि वह प्रेम के सम्बन्ध में अपनी क्या राय प्रकट करती है। अन्त मे आना ने अपना मत व्यक्त किया। उसने अपने दस्तानो से खेलते हुए कहा—"मेरा यह विचार है कि जिस प्रकार जितने सिर होते है उतने ही मस्तिष्क भी होते है, उसी प्रकार जितने हृदय होते है उतने ही प्रकार के प्रेम भी होते है।"

व्रान्सकी बोला—"किटी श्चरबेट्स्काया के प्रति मैंने कभी प्रेम का अनुभव नहीं किया। वह केवल एक भूल थी'।"

आना सिहर उठी। उसने कहा—"मैं अनेक बार आपको यह बीभत्स शब्द काम में लाने से मना कर चुकी हूँ!" पर तत्काल वह समझ गई कि मना करने का अर्थ स्पष्ट ही यह है कि वह अभी से व्रान्सकी पर अपना अधिकार-सा समझने लग गई है, जिसके फलस्वरूप वह साहस पाकर प्रेम की चर्चा और अधिक करेगा। पर प्रकट मे वह बोली—"मैं बहुत दिनो से यह बात स्पष्ट शब्दो में कह देना चाहती थी कि इस प्रकार की बातो का अब अन्त हो जाना चाहिए। अब बहुत हो चुका। मुझे जीवन मे आज तक कभी किसी के आगे लज्जित नहीं होना पडा, पर आपको देखते ही मुझे ऐसा जान पडने लगता है, जैसे किसी अपराध मे मेरा भी भाग है।"

व्रान्सकी ने देखा तो ऐसा कहते हुए उसके मुख पर एक अपूर्व आध्यात्मिक ज्योति-सी झलकने लगी थी। उसके उस अनुपम सौन्दर्य को देखकर उसका हृदय पागलो के समान नाचने लगा। अपने को कुछ सँभालकर उसने कहा—"आप मुझसे चाहती क्या है? ठीक-ठीक बताइए।"

"मैं चाहती हूँ कि आप मास्को जाकर किटी से क्षमा माँगें।"

"पर मैं जानता हूँ कि आपकी अन्तरात्मा ऐसा कदापि नही चाहती।"

उसने प्राय फुसफुसाते हुए कहा—"यदि आप मुझसे वास्तव में प्रेम करते हैं, जैसा कि आप कहते है, तो ऐसा उपाय कीजिए जिससे मैं शान्ति से रह सकूँ।"

व्रान्सकी का चित्त आशान्वित हो उठा। उसने कहा—"आप क्या यह नहीं देखती है कि मेरा सारा जीवन ही आप पर अवलंबित है? मैं अब स्वप्न में भी एक पल के लिए इस बात की कल्पना नहीं कर सकता कि आप मुझसे अलग हैं! अपने और तुम्हारे लिए मैं केवल दो बातो की सम्भावना देखता हूँ—या तो अनन्त निराशा या अनन्त सुख! पर यह सब आप पर निर्भर है।"

आना सोचने लगी कि उसे क्या उत्तर देना चाहिए, पर कोई भी शब्द वह मुँह से न निकाल सकी; केवल अपनी दो प्रेम-भरी आँखो से व्रान्सकी की ओर देखती रह गई। उनकी उस प्रेम-[illegible] दृष्टि से व्रान्सकी की आशा का दीपक और अधिक जगमगा उठा।

पत्नी से घर चलने का प्रस्ताव किया। पर आना ने कहा कि वह रात्रि-भोजन करके लौटेगी। केरेनिन को अकेले ही जाना पडा।

रात में जब आना बेट्सी के यहाँ भोजन कर चुकी, तब उसके लिए बाहर गाडी तैयार खडी थी। व्रान्सकी उसे नीचे तक पहुँचाने गया और चलते हुए उसने फिर एक बार व्याकुल उत्सुकता से अपना प्रेम निवेदित किया। आना ने कहा—"प्रेम! आप जानते हैं, मैं इस शब्द से क्यों इतना घबराती हूँ? इसलिए कि मेरे लिए उसका अर्थ इतना गहन और गभीर है कि आप अनुमान नही लगा सकते!" यह कहकर उसने एक बार मार्मिक दृष्टि से व्रान्सकी की ओर देखा और फिर तत्काल गाडी के भीतर जा बैठी। जाने से पहले उसने अपना हाथ व्रान्सकी की ओर बढाया। व्रान्सकी ने अपनी हथेली से उसकी हथेली का स्पर्श करते हुए ऐसा अनुभव किया, जैसे उसका हाथ प्रेम की जलन से जल रहा हो। आज उसके हृदय मे आशा का ज्वार जोर मार रहा था। उसे पूरा विश्वास हो रहा था कि अब सफलता में अधिक देर नही है।

किसी के सीढियों से होकर ऊपर आने का शब्द सुनाई दिया। इसी बीच केरेनिन ने मन ही मन वह व्याख्यान तैयार कर लिया था जो वह आना को सुनाना चाहता था। आना ने द्रुत गति में भीतर प्रवेश किया। केरेनिन ने देखा कि उसके मुख पर एक उज्ज्वल दीप्ति प्रभासित हो रही है। पर वास्तव मे वह आनन्द की दीप्ति नही थी, एक गहन अन्धकारमयी रात्रि मे भयकर अग्निकाण्ड हो जाने से जो प्रज्वलित प्रकाश चारो ओर व्याप्त हो जाता है उसका आभास आना के मुख पर झलक रहा था।

अपने पति को देखकर आना बोली—"तुम अभी सोये नहीं ? आश्चर्य है !" यह कहकर उसने अपनी टोपी उतारकर फेंक दी। इसके बाद अपने कमरे मे प्रवेश करती हुई दरवाजे पर से वह बोली—"अलेक्से, काफी देर हो चुकी है, जाकर सो रहो !"

पर केरेनिन ने कहा—"आना, मैं तुम्हारे साथ एक आवश्यक बात करना चाहता हूँ।"

"मुझसे ? क्या बात करना चाहते हो ?" कुछ विस्मय का भाव दिखाती हुई आना एक कुर्सी पर बैठ गई।

"आना, मैं तुम्हे सावधान कर देना अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

मुख पर सहज मुसकान का भाव झलकाने की चेष्टा करते हुए आना ने कहा—"क्यों, क्या बात हो गई ?"

"मैं तुम्हे इस सम्बन्ध में सावधान करना चाहता हूँ कि अपनी लापरवाही के कारण तुम लोगो की चर्चा का विषय बनने लगी हो, जिसे मैं अनुचित समझता हूँ। आज कौन्ट व्रान्सकी के साथ तुम जो उल्लासपूर्ण बाते कर रही थी, उसके कारण सबका ध्यान तुम्हारी ओर आकर्षित हो रहा था।"

केरेनिन यद्यपि आन्तरिक गम्भीरता के साथ बोल रहा था, तथापि आना अपनी मुसकराती हुई आँखों से जैसे उसके एक-एक शब्द का परिहास कर रही थी। अपनी पत्नी के इस नये व्यवहार से केरेनिन आतक से सिहर उठा। इतने दिनों से वह जिस सहृदय और समवेदनाशील आना को जानता आया था, आज जैसे उसका अस्तित्व ही नही रह गया था। आज कोई दूसरी ही नारी आना का वेष बनाकर उसके साथ निष्ठुर व्यग्य करने आई हुई थी। केवल एक ही दिन मे ऐसा भयङ्कर परिवर्तन उसमे हो गया था !

आना ने अपने स्वर मे स्वाभाविकता लाते हुए कहा—"तुम सदा इसी प्रकार की बातें करते हो ! कभी तुम इस बात के लिए असन्तोष

पत्नी का प्रेम खोने की अपेक्षा उसे इस बात का अधिक ध्यान था कि समाज में उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे। पर आना और ब्रान्सकी की गतिविधि किसी से छिपने नही पाती थी, और न वे उसे छिपाना ही चाहते थे।

प्रारम्भ मे आना के मन मे जो भिभक वर्त्तमान थी, उसका कारण सामाजिक निन्दा का भय कदापि नही था। उसका कारण उसकी आत्मा की गहराई मे छिपा हुआ था। उसकी आत्मा उसे अपने पति को धोखा देने से बार-बार रोक रही थी। पर वास्तव मे उसने अपने अन्तस्तल से अपने पति को कभी नही चाहा था। फिर भी वह आज तक निर्विकार और निर्विचित्र गृहस्थ-जीवन बिताकर वह अपने को सन्तुष्ट समझा करती थी। अपने प्यारे लडके सेरेजा के स्नेह मे मग्न रहकर वह अपने नीरस-स्वभाव पति की उदासीनता को बिना किसी शिकायत के सहन करती आ रही थी। पर जिस दिन मास्को स्टेशन मे सहसा ब्रान्सकी से उसकी भेंट हो गई, उस दिन उसे ऐसा अनुभव हुआ कि ससार का रग ही कुछ निराला है, जिसे आज तक अपने गृहस्थ-जीवन के कैदखाने मे बन्द पडी रहने के कारण जान ही न पाई थी। तब से किस प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व उसके भीतर चलने लगा उससे पाठक परिचित हो चुके हैं।

अन्त में एक दिन आना और ब्रान्सकी का प्रेम प्रथम बार वास्तविक मिलन के रूप मे परिणत हुआ। जिस चरम आकाक्षा के लिए ब्रान्सकी प्राय एक वर्ष से आना का पीछा कर रहा था, जिसकी कल्पना से आना भयकर रूप से घबराई हुई थी, और साथ ही जिसे वह एक असम्भव और अपूर्व सुख-स्वप्न समझती आई थी, वह अन्त मे जब चरितार्थ हो गया, तब वह विह्वल अन्तर्वेदना से सिहरने और सिसकने लगी। ब्रान्सकी विभ्रान्त-सा होकर बार-बार उसे सान्त्वना देने की चेष्टा करते हुए कहने लगा—"आना ! आना ! भगवान् के लिए ऐसा न करो! शान्त होओ।"

पर वह ज्यो-ज्यो उसे ढाढस देने का प्रयास करता, त्यो-त्यों आना म्लान मस्तक को अतिशय लज्जा और ग्लानि के कारण नीचे झुकाती जाती थी—उस मस्तक को जो इतने दिनो तक गर्वोन्नत और गृहस्थ-धर्म की उज्ज्वल महिमा से प्रदीप्त था। उसके पाँव लडखडा रहे थे, और वह नीचे फर्श पर गिर पड़ी होती, यदि ब्रान्सकी ने उसे न पकड़ लिया होता।

व्रान्सकी के वक्षस्थल में अपना कलंकित मुंह छिपाते हुए वह [illegible] हुई आवाज में बोली—"हे भगवान्! मुझे क्षमा करो!" [illegible] अन्तरात्मा अपने को भयङ्कर रूप से दोषी समझने लगी थी। पर [illegible] ही वह यह भी जानती थी कि व्रान्सकी के अतिरिक्त संसार में उसका अपना कहने को अब कोई नहीं रह गया, इसलिए भगवान् [illegible] प्रार्थना के लिए सम्बोधित करती हुई जैसे वह व्रान्सकी को ईश्वर समझकर सम्बोधित कर रही थी।

व्रान्सकी को उसे उस करुण अवस्था में देखकर ठीक वैसा ही अनुभव हो रहा था जैसे किसी हत्याकारी को अपने आगे अपने हाथ से मार डाले गये व्यक्ति की लाश को देखकर होता है। उसे ऐसा [illegible] पड़ता था कि उन दोनों के बीच इतने दिनों तक जो अलौकिक [illegible] आध्यात्मिक प्रेम चल रहा था, आज उसकी साकार मूर्ति की उसने निर्मम हत्या कर डाली है। पर जिस प्रकार हत्याकारी विकल और [illegible] होने पर भी लाश को छिपाने के लिए उसके टुकड़े-टुकड़े कर [illegible] है और मृत व्यक्ति से जो कुछ भी प्राप्त हो सके उसे लेकर सन्तोष [illegible] करना चाहता है, उसी प्रकार व्रान्सकी भी सिसकती हुई आना की [illegible] पर हाथ फेरते हुए उसे चुमकारने और पुचकारने लगा। आना कुछ देर तक कल्पित वेदना से पुलकित और साथ ही मर्म-ग्लानि से [illegible] अवस्था में व्रान्सकी की दोनों बांहों से जकड़ी रही, और अन्त में [illegible] बार विभ्रान्त और विह्वल दृष्टि से अपने प्रेमिक की ओर देख[illegible] वहाँ से चली गई। अपनी इस नई परिस्थिति पर सोच-विचार [illegible] लिए वह [illegible] रही थी, पर सामर्थ्य? भर और [illegible] वह कुछ सोच न पाई।

१७

किटी ने लेविन के विवाह-प्रस्ताव को अस्वीकृत करके उसका जो अपमान किया था, उसकी वेदना को वह किसी प्रकार भूल नहीं पाता था। उसने सोचा था कि घर लौटने पर जब वह एकान्त शान्तिपूर्ण ग्राम्य-जीवन विताने लगेगा, तब उस अपमान का कोई चिह्न उसके हृदय में शेष न रहेगा। पर तीन महीने बीत चुके थे, फिर भी वह इस वेदना के प्रति किसी प्रकार भी उदासीन नहीं हो पाता था। इसके अतिरिक्त बार-बार यह भावना उसे विकल करने लगी थी कि उसका एकाकी जीवन विताना अस्वाभाविक और अनुचित है। केवल वही नहीं, उसके आस-पास के सभी लोगो की भी यही धारणा थी। उसे याद आया कि मास्को जाने से पहले उसने अपने सहृदय ग्वाले से कहा था—"निकोलस, मैं विवाह करने के विचार से मास्को जा रहा हूँ।" इस पर निकोलस ने तत्काल उत्तर दिया था—"ठीक है, कान्स्टेन्टिन डिमिट्रिच, आपको अवश्य ही शीघ्र विवाह कर लेना चाहिए।" पर मास्को जाकर उसे अपना-सा मुंह लेकर लौटना पडा था, यह वात निकोलस भी जान गया था और दूसरे व्यक्ति भी समझ गये थे। रह-रहकर किटी की स्मृति उसके मन मे तीखे काँटे की तरह बिंध रही थी। उस विकलता को भूलने के लिए वह फिर एक बार पूर्ण मनोयोग के साथ कृषि-सम्बन्धी कामों में जुट गया। कृषि में क्या-क्या सुधार किये जा सकते हैं, इस विषय मे वह एक पुस्तक लिखने लगा। जब जाडा विलकुल बीत चुका और वर्फ पिघलकर साफ हो गई, तब वह हल जोतने और अनाज बोने के कामो मे अपने असामियो का साथ देने लगा। इस प्रकार वह कुछ समय तक किटी को बहुत-कुछ भूला रहा।

पर एक दिन आब्लान्सकी अकस्मात् लेविन के 'स्टेट' मे पहुँच गया। लेविन ने उसकी बडी आव-भगत की, उसे खूब खिलाया, बढ़िया-बढिया शरावें पिलाईं और जगल में जाकर शिकार करने में भी उसका साथ दिया। यद्यपि लेविन को यह पूरा विश्वास था कि किटी का विवाह हो चुका होगा, तथापि इस सम्बन्ध में कोई भी प्रश्न आब्लान्सकी से करने में वह बडी घबराहट का अनुभव कर रहा था। वह डर रहा था कि कही आब्लान्सकी सचमुच यह न कह बैठे कि "हाँ, किटी का विवाह हो चुका और वह बहुत प्रसन्न है।" पर आब्लान्सकी यद्यपि स्वभावत बहुत वातूनी था, तथापि उसने किटी के सम्बन्ध में एक शब्द भी मुंह से नहीं निकाला, और सब समय जमाने भर की व्यर्थ की वातें करता रहा।

दस्तावेज़ लिखकर उसे दिया। मास्को वापस जाकर, आब्लान्सकी ने जितने भी रुपये नकद पाये थे वे सब राग-रग और घुडदौड में शीघ्र ही फूँक दिये। इधर शहर मे रहने मे डाली का पारिवारिक व्यय बहुत बढ रहा था। उसने अपने पिता की दान की हुई छोटी-मी ज़मीदारी एर्गुशेवो में बच्चो को साथ लेकर रहने का पक्का विचार कर लिया, और कुछ समय बाद वह वहाँ चली भी गई।

एर्गुशेवो की स्टेट लेविन की जमीदारी से प्राय पैंतीस मील की दूरी पर थी। प्रारम्भ मे कुछ दिनो तक डाली देहात मे आकर बडे कष्ट में रही। 'स्टेट' इतने दिनो तक अव्यवस्थित अवस्था में एक अयोग्य व्यक्ति के प्रबन्ध मे छोड दी गई थी। डाली को बच्चो के लिए न नियमित रूप से दूध मिल पाता था न अण्डे। मकान भी बेमरम्मत पडा हुआ था। नौकर-चाकरो का भी ठीक प्रबन्ध नही था। तात्पर्य यह कि छोटी मे छोटी बात से लेकर बडी से बडी बात तक किसी भी विषय में कोई भी ठीक सुविधा डाली को प्राप्त नही हो पाती थी। पर धीरे-धीरे उसने कठोर प्रयत्नो से सब कठिनाइयो को यथासम्भव सुलझा लिया।

एक दिन अकस्मात् लेविन उसके पास आ पहुँचा। लेविन को देखकर डाली के आश्चर्य और प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। डाली वास्तव में लेविन के प्रति सगे भाई का-सा स्नेह रखती थी। उसने उल्लास के साथ कहा—"आपको देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है!"

लेविन बोला—"आपको प्रसन्नता तो हुई है, पर आपने आज तक मुझे इस बात की सूचना देने की कृपा नहीं की कि आप यहाँ आई हुई हैं। स्टीवा का पत्र न आया होता, तो मैं कुछ जान ही न पाता। उसने लिखा है कि आपको देहाती जीवन का अनुभव न होने से यहाँ बहुत-सी कठिनाइयो का सामना करना पड रहा होगा। इसलिए मैं यह जानने आया हूँ कि मेरी सहायता की कोई आवश्यकता आपको है या नही। मै सब समय आपकी सेवा के लिए तैयार हूँ।"

डाली ने कहा—"प्रारम्भ मे अवश्य मुझे बहुत कष्ट हुआ था, पर अब किसी बात की असुविधा नही रही।"

डाली के बच्चे लेविन को बहुत प्यारे लग रहे थे। वह उनके साथ खेल-कूद और दौड़-धूप करने का प्रलोभन न त्याग सका। बच्चे प्रथम बार देखने से ही उससे हिलमिल गये थे, और उसके साथ में बहुत प्रसन्न हो रहे थे। डाली को भी लेविन का बच्चो के साथ बच्चा बन जाने का स्वभाव बहुत पसन्द आ रहा था।

ख केवल इस कारण है कि आपके आत्माभिमान को धक्का पहुँचा, पर उस बेचारी का दुःख अकथनीय और अत्यन्त भयकर है। अब सब बाते समझ रही हूँ।"

लेविन डाली की प्रत्येक बात को अत्यन्त ध्यानपूर्वक सुन रहा था। डाली कहती चली गई—"आप लोग पुरुष है, इसलिए नारी-हृदय की उलझनो को सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से समझने मे असमर्थ है। आप लोगो को इस बात की पूरी स्वाधीनता रहती है कि किसी लडकी से निरन्तर मिलते-जुलते रहे, और उसके शील-स्वभाव और हृदय की विशेषताओ की परख करके यह निश्चय कर ले कि वह आपके विवाह-योग्य है या नही। पर एक लडकी की स्थिति पर विचार कीजिए, जो अपने स्वाभाविक सकोच के कारण आप लोगो के स्वभाव की यथार्थता और हृदय की भावनाओ की वास्तविकता का ठीक-ठीक परिचय प्राप्त कर सकने मे एकदम असमर्थ रहती है। ऐसी दशा मे यदि कोई लडकी दो प्रतिद्वन्द्वियो मे से किसी एक को वरण करने मे भूल कर बैठे, तो क्या उसकी वह भूल अक्षम्य समझी जानी चाहिए? किटी ब्रान्सकी को दूर ही से जानती थी। इसके अतिरिक्त उसे जीवन का अनुभव नही था। उसके स्थान मे यदि मैं होती, तो कदापि इस तरह की भूल न करती। मैं प्रारम्भ से ही ब्रान्सकी को पसन्द नही करती थी। पर किटी धोखे मे आगई। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आपके प्रति किटी का सम्मान और स्नेह ब्रान्सकी से तनिक भी कम नही रहा। पर चूँकि आपने बीच मे मेरे मायकेवालो के यहाँ आना-जाना छोड दिया, और ब्रान्सकी ने उसे घेर लिया, इसलिए यह सारा अनर्थ खडा हो गया।"

ये सब बाते सुनकर लेविन ने एक लम्बी साँस ली और अन्त में कहा—"नही डार्या अलेग्जेण्ड्रोवना, अब आपकी ये सब बाते व्यर्थ है। आपकी बहन को दो में से एक को चुनना था, सो उसने चुन लिया, और उसका फल चाहे कुछ भी हुआ हो। जो बात हो चुकी, उसके सुधार का अब कोई उपचार नही हो सकता।"

"तो आप क्या किटी से अब मिलेगे ही नही?"

"मैं कतराऊँगा तो नही, पर हाँ, यथाशक्ति इस बात की चेष्टा करूँगा कि हम दोनो एक दूसरे से अलग ही रहे।"

उसी दिन लेविन अपने घर को लौट चला।

व्रान्सकी को घुडदौड का बहुत शौक था। शीघ्र ही अफसरो के बीच एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घुडदौड होनेवाली थी, जिसमे स्वय सम्राट् (जार) उपस्थित होनेवाले थे। व्रान्सकी ने उसमें सम्मिलित होने के लिए अपना नाम दे दिया था और एक बहुत अच्छी जात की अँगरेजी घोडी खरीद ली थी, जिसे एक अँगरेज विशेषज्ञ-द्वारा 'ट्रेनिग' दिलाई जा रही थी।

इधर कुछ दिनो से आना पीटर्सबर्ग की गर्मी से बचने के लिए शहर से कुछ दूर देहात में एक बँगले में रहने लगी थी। गर्मियो में केरेनिन-परिवार सदा वही रहता था। व्रान्सकी के 'क्वार्टरो' से उसका बँगला बहुत दूर नही था। व्रान्सकी जानता था कि केरेनिन अभी शहर से लौटकर नही आया है। इसलिए घुडदौड से पहले एक बार आना से मिल लेना उसने आवश्यक समझा।

घोडागाडी में सवार होकर जब वह आना के बँगले पर पहुँचा, तब आना उस समय ऊपरवाले बरामदे मे एक फूलो के गमले के पास खडी थी। सौभाग्य से आना का लडका सेरेजा भी उस समय घर पर नही था। सेरेजा यद्यपि अभी केवल आठ-नौ वर्ष का बच्चा था, फिर भी वह बहुत बुद्धिमान् था। वह यह बात ताड गया था कि उसकी मा और उसके पिता के बीच किसी कारण से अनबन हो गई है, और व्रान्सकी के साथ उसकी मा का कोई रहस्यमय सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। व्रान्सकी के आने पर वह अत्यन्त विस्मय और कौतूहल से भरी हुई दृष्टि से उसकी ओर देखता था। उसकी वह जिज्ञासु दृष्टि दोनो को अत्यन्त असहनीय जान पडती थी। इसलिए उसकी उपस्थिति में वे कोई विशेष बात नही करते थे।

कुछ भी हो आना को अकेले पाकर व्रान्सकी को प्रसन्नता हुई। आना ने जब उसे देखा, तब उसके मुख पर विस्मय, भय और आनन्द के भाव एक साथ झलक उठे। व्रान्सकी ने देखा कि वह वास्तव में बहुत चिन्तित और उदास है। उसने पूछा कि उसके आने के पहले वह किस बात की चिन्ता कर रही थी। आना के मुख के भाव से ऐसा जान पडता था कि वह कोई विशेष बात कहना चाहती है, पर कह नही पाती। व्रान्सकी के प्रश्न को टालकर उसने घुडदौड की तैयारी के सम्बन्ध की बातें उससे पूछी। व्रान्सकी ने कुछ उत्साह के साथ सब बातें उसे विस्तारपूर्वक समझाई। आना मन ही मन कहने लगी—"उसे असली बात की सूचना दूँ या नही? घुड़दौड को लेकर वह इतना

व्रान्सकी ने अत्यन्त विकल होकर स्नेहपूर्ण स्वर मे कहा—"आना! आना! तुम इस तरह की बाते करती हो।"

"मैं तुम्हारे स्वभाव की सचाई से भली भाँति परिचित हूँ और यह भी जानती हूँ कि तुम्हे किसी प्रकार की भी लुका-छिपी पसन्द नही है। पर तुम मेरी परिस्थिति की यथार्थता अभी तक ठीक तरह से नही समझ पाये हो। फिर भी तुमने मेरी खातिर अपना जीवन बरबाद कर डाला है, यह बात मुझसे छिपी नही है।"

"नही, आना!"—व्रान्सकी ने सकरुण और कृतज्ञ दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए कहा—"तुमने मेरे लिए जो महान् आत्म-त्याग किया है उसकी तुलना में मेरा त्याग अत्यन्त तुच्छ है। मेरे साथ सम्बन्ध स्थापित करके तुम कितने दुःख का अनुभव कर रही हो, यह बात मैं भली भाँति देख रहा हूँ।"

आना के मुख में आनन्द की एक दीप्ति झलक गई। उसने कहा—"मैं दुःखी? जानते हो, मैं एक ऐसे भूखे व्यक्ति के समान हूँ, जिसके आगे भरपूर भोजन रख दिया गया है। भले ही वह जाडे से ठिठुर रहा हो, फटे-पुराने कपडे पहने हो, अपनी दुर्दशा के लिए लज्जित हो, पर वह कभी दुःखी नही हो सकता। मैं भी—" सहसा अपने लडके के आने का शब्द सुनकर वह थम गई।

व्रान्सकी उससे विदा होकर बाहर अपनी गाड़ी में सवार हुआ और वहाँ से चल पड़ा।

को कठिन से कठिन रुकावटो को पार करती हुई आगे बढती चली गई, और 'ग्लेडियेटर' को छोडकर शेष सब घोडो को उसने अपने पीछे छोड दिया। कुछ समय बाद वह 'ग्लेडियेटर' से भी आगे बढ गई। चारो ओर से व्रान्सकी को शाबासियाँ मिलने लगी। अन्त मे केवल एक छोटी-सी खाई पार करने को रह गई थी। 'फ्रू-फ्रू' यद्यपि उन्मत्त वेग से दौडी चली जा रही थी, और उसकी शक्ति चरम सीमा को पहुँचने पर थी, फिर भी व्रान्सकी यह निश्चित रूप से जानता था कि वह अन्तिम खाई को सहज ही मे लाँघ जायगी। किन्तु ज्यो ही घोडी खाई के पास पहुँची, त्यो ही व्रान्सकी ने यह भयङ्कर भूल की कि लगाम खीचकर घोडी का मुँह ऊपर को करके स्वय पीछे की ओर दब गया। घोडी पीठ के बल ऐसे भयङ्कर वेग से गिर पडी कि लाख चेष्टा करने पर भी फिर उठ न सकी। उसकी पीठ टूट गई थी। व्रान्सकी सिर धुन-धुनकर अपनी अ..म्य भूल के लिए पछताने लगा। ऐसा पश्चात्ताप उसे अपने जीवन मे शायद ही किसी काम के लिए कभी हुआ हो।

× × ×

आना अन्यान्य सभ्रान्त स्त्री-पुरुषो के साथ एक विशेष सायवान मे बैठी हुई व्रान्सकी की प्रत्येक गति-विधि को अत्यन्त ध्यानपूर्वक देख रही थी। पास ही उसका पति बैठा था और कुछ व्यक्तियो से किसी विशेष विषय पर वाद-विवाद कर रहा था। आना यद्यपि उसकी ओर नही देख रही थी, तथापि उसका प्रत्येक शब्द एक नुकीली परेग की तरह उसके कानो मे गडता था। वह मन ही मन कहती थी—"झूठ! झूठ! उसकी प्रत्येक बात, प्रत्येक शब्द झूठ से भरा हुआ है। उसका सारा व्यक्तित्व, सारा जीवन असत्य से पूर्ण है। वह जानता है कि अलेक्से (व्रान्सकी) से मेरा प्रेम है, फिर भी समाज मे यह भाव जताना चाहता है, जैसे मै उसकी परम पति-परायणा स्त्री हूँ। यदि वह ईर्ष्या से पागल होकर मुझे मार डालता या व्रान्सकी की हत्या कर डालता, तो म वास्तव मे उसका सम्मान करती। पर चूँकि उसने मुझसे कभी प्रेम नही किया, और सामाजिक प्रतिष्ठा को ही वह सदा सबसे अधिक महत्त्व देता रहा है, इसलिए वह ऐसा कर ही नही सकता—उसकी झूठी आत्मा मे इतना नैतिक साहस आ ही नही सकता!"

जब व्रान्सकी की घोडी बडी तेज रफ्तार से दौडी चली जा रही थी तब आना अपने छोटे-से दूरबीन की सहायता से अत्यन्त

दिखाई दे रहा था। जिस सायवान मे आना थी ठीक उसी के पास ही जार का सायवान था। एक अफसर तेजी से अपने घोडे को दौडाते हुए जार के पास पहुँचा और उसे कोई विशेष सवाद सुनाने लगा। आना उस ओर कान लगाकर सुनने की चेष्टा करने लगी, पर कुछ सुनाई न दिया। इसके बाद उसने पास ही बैठे हुए अपने भाई को पुकारा—"स्टीवा! स्टीवा!"

केरेनिन ने फिर अत्यन्त नम्रतापूर्वक उससे चलने का प्रस्ताव किया। पर आना ने घृणा के कारण उसकी ओर देखा तक नही। इतने में उसने देखा कि एक अफसर व्रान्सकी के पास से दौडा चला आ रहा है। बेट्सी ने उसकी ओर रूमाल हिलाकर उसे बुलाया। अफसर ने आकर कहा—"घुडसवार को कोई चोट नही पहुँची, पर घोडी की पीठ टूट गई है।" यह सुनते ही आना ने पखे से अपना मुँह ढक लिया और सिसक-सिसककर रोने लगी। जो क्रन्दनावेग इतनी देर से उसके भीतर उमड रहा था, उसका बाँध टूट गया था। केरेनिन ने देखा कि बडी ज्यादती हो रही है। उसने फिर कहा—"मै तीसरी बार तुमसे अपने साथ चलने का प्रस्ताव करता हूँ।"

बेट्सी बोली—"अलेक्से अलेग्जेण्ड्रोविच आना को मै अपने साथ लाई हूँ, और मैंने उसे घर वापस पहुँचाने का वचन दिया है।"

केरेनिन बोला—"क्षमा कीजिएगा, प्रिन्सेस, मै देख रहा हूँ कि मेरी स्त्री की तबीअत खराब है, इसलिए मै उसे अपने साथ अभी ले जाना चाहता हूँ।"

उसके कण्ठस्वर की दृढता से आना चौकी, और चुपचाप उठ खडी हुई। बेट्सी ने उसके कान मे कहा—"मै व्रान्सकी का हाल मालूम करके तुम्हे सूचित कर दूँगी।"

अपने पति के साथ गाडी मे सवार होने पर आना केवल व्रान्सकी की ही बात सोचती रही—उसे कितनी चोट आई है? उससे आज रात भेंट होगी या नही? अपने पति के अस्तित्व तक का अनुभव उसे नही हो रहा था।

सहसा केरेनिन ने कहा—"तुम्हारा आज का व्यवहार बहुत ही अनुचित और निन्दनीय था।"

आना पहले से ही जानती थी कि उसका पति ठीक यही बात, इसी ढग से इन्ही शब्दो मे कहेगा। उसने पूछा—"क्यो, मेरा व्यवहार क्यो अनुचित था।"

२०

जर्मनी के जिस स्वास्थ्योपकारी स्थान मे किटी के माता-पिता उसे ले गये, वहाँ वास्तव मे किटी का स्वास्थ्य धीरे-धीरे अच्छा होने लगा। इसका कारण, उस स्थान की जलवायु उतना नही थी, जितना वारेङ्का नाम की एक म ।र-स्वभाव की रूसी लडकी का सग। वारेङ्का के अपने मा-बाप नही थे। वह मादाम स्ताल नाम की एक भद्र महिला की पालिता लडकी थी। मादाम स्ताल का स्वास्थ्य अच्छा न रहने के कारण वह भी वारेङ्का को साथ लेकर वही आई हुई थी, जहाँ श्चरवंट्सकी-परिवार गया हुआ था।

किटी का ध्यान इस बात पर गया कि वारेङ्का केवल अपनी धर्ममाता की ही सेवा-शुश्रूषा नही करती, वरन् जितने भी दीन-हीन, असहाय, अथवा अनाथ रोगी दूर-दूर से वहाँ आये हुए है, वह उन सबकी यथासाध्य परिचर्या करती रहती हैं। उसके स्वभाव में सबसे अधिक प्रशसनीय बात यह थी कि वह दिखावे के लिए कोई भी काम नही करती थी। जब वह किसी व्यक्ति को किसी भी बात के लिए अपनी प्रशसा करते सुनती, तब उसके मुख के भाव से यह बात स्पष्ट हो जाती कि वह उस प्रशसा से तनिक भी प्रसन्न नही हुई है।

एक दिन किसी एक बात के सिलसिले में किटी ने यह जान लिया कि वारेङ्का को भी उसी के समान भग्न प्रेम का अनुभव हुआ है। वह एक व्यक्ति से प्रेम करती थी और वह भी उसे बहुत चाहता था। पर उस व्यक्ति की मा अपने बेटे के इस प्रेम-सम्बन्ध को पसन्द नही करती थी, इससे उसने अपनी मा के कहने पर एक दूसरी लडकी से विवाह कर लिया। किटी ने उस व्यक्ति को हृदयहीन बताकर उसकी निन्दा की। पर वारेङ्का ने कहा—"नही, वह बहुत अच्छा आदमी है। उसका कोई दोष नही है; उसने केवल अपनी मा के प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया है। इसके अतिरिक्त, मुझे उस बात का कोई दुख नही है। मैंने दूसरे कामो मे लगकर अपने मन को समझा लिया है, और मैं सुखी हूँ।"

किटी ने जब पूछा कि उस अपमान की वेदना को वह कैसे भूलने मे समर्थ हुई है, तब उसने उत्तर दिया—"उसमे अपमान की कोई बात

उसने निश्चय किया कि वह कुछ दिन डाली के पास एर्गुशोवो में जाकर बितावेगी।

× × × ×

इधर लेविन किसानो के बीच मे रहकर उनकी जीवन-धारा का ऐसा प्रशसक बन गया था कि किसी किसान की लडकी के साथ विवाह करके शान्तिपूर्ण जीवन बिताने की बात सोचने लगा था। एक दिन वह अपनी बहन के गाँव मे गया हुआ था। वहाँ किसानो के नाच-गान के बीच में सूखी घास की एक गञ्जी के ऊपर लेटकर उसने सारी रात बिताई। प्रात काल उठकर वह जब किसानो के आदर्श जीवन की काव्यमयी कल्पना मे मग्न हो रहा था, तब सहसा उसे एक घोडागाडी की घटियाँ बजती हु सुनाई दी। कौन आ रहा है, यह जानने का कौतूहल उसे हुआ। जब गाडी उसके पास आई, तब उसने देखा कि गाडी के ऊपर सामान लदा हुआ है, भीतर एक बुढिया ऊँघ रही है और उसके पास बैठी हुई एक सुन्दरी नवयुवती अभी सोकर उठी है। नवयुवती ने ज्यो ही लेविन की ओर मुख फेरा त्यो ही लेविन का मुख विस्मय और आनन्द से प्रदीप्त हो उठा। वह तत्काल उसे पहचान गया। वे दो सुन्दर, सरस, स्नेहपूर्ण आँखे उसकी चिर-परिचित थी। उन्हे पहचानने में वह कभी भूल नही कर सकता था। वे किटी की आँखें थी। वह उस रास्ते से होकर एर्गुशोवो जा रही थी। उसे देखते ही किसानो के सुखमय जीवन का सारा स्वप्न लेविन को अत्यन्त तुच्छ और घृणित जान पडने लगा। एक किसान लडकी से विवाह करने की कल्पना उसके मन को अरुचि और ग्लानि से जर्जरित करने लगी। गाडी शीघ्र गति से उसे छोडकर आगे बढ गई, पर इतनी ही देर में उसके भीतर एक भयङ्कर तूफान मचा गई।

कुछ देर तक स्तब्ध और अन्यमनस्क रहकर अन्त में लेविन ने अपने मन मे कहा—"नही! यह सरल और शान्त कृषक-जीवन चाहे कैसा ही सुन्दर क्यो न हो, पर यह मेरे लिए नही है, क्योंकि मैं जिसे सारी आत्मा से, समस्त प्राणो से चाहता हूँ, वह इस जीवन से कोसो दूर रहती है!"

उसने किसी प्रकार भी निमंत्रण स्वीकार नहीं करना चाहा; पर आब्लान्सकी के स्नेहपूर्ण हठ और नम्र निवेदन में ऐसा जादू भरा था कि अन्त में उसे स्वीकार करना ही पड़ा।

किटी भी उन दिनों मास्को में ही थी। उसे भी आब्लान्सकी ने निमंत्रित कर रक्खा था। सन्ध्या को एक-एक करके निमंत्रित व्यक्ति आकर आब्लान्सकी के ड्राइंग-रूम में एकत्रित होने लगे। किटी भी पहुँच गई थी। उसे मालूम था कि लेविन आया हुआ है और उसे आब्लान्सकी ने निमंत्रण दे रक्खा है। वह अत्यन्त उत्सुक दृष्टि से दरवाजे की ओर देखती जाती थी, साथ ही लेविन से मिलने पर उससे बातें करने का साहस भी अपने भीतर बटोरती जाती थी।

और सब लोग आ चुके थे, केवल दो व्यक्ति रह गये थे—एक स्वयं घर का मालिक, दूसरा लेविन। आब्लान्सकी को किसी कारण से देर हो गई थी। उसके न आने से गोष्ठी-जमघट का रंग जमने नहीं पा रहा था। थोड़ी देर बाद वह आ पहुँचा, और परस्पर अपरिचित व्यक्तियों का परिचय एक-दूसरे से कराके, ऐसा रंग जमा दिया कि सब लोग बड़े उत्साह के साथ एक-दूसरे से बातें करने लगे।

लेविन सबसे अन्त में आया। दरवाजे पर जब आब्लान्सकी उससे मिला, तब उसने कहा—"मैं सोचता हूँ कि ठीक समय पर ही आया हूँ?"

"तुम कभी कहीं भी ठीक समय से आते हो, जो आज आते!"

लेविन ने धीरे से पूछा—"कौन-कौन आये हुए हैं?"

"सभी हमारे अपने ही व्यक्ति हैं। किटी भी आई है। चलो, मैं केरेनिन से तुम्हारा परिचय करा दूँ।"

सब लोग भोजन कर चुके तो स्त्रियाँ उठकर ड्राइंग-रूम मे चली गई, और पुरुष वही बैठकर वाद-विवाद करते हुए 'सिगार' पीने लगे। लेविन के मन मे यह इच्छा बहुत ही प्रबल होती जा रही थी कि वह भी किटी का अनुसरण करते हुए ड्राइंग-रूम में चला जावे। पर इस विचार से कि इस प्रकार उसका पीछा करने से लोगो की दृष्टि में वह कही हास्यास्पद न बन जाय, वह कुछ देर तक पुरुषो के साथ ही ठहरकर वाद-विवाद मे दिलचस्पी लेने लगा।

पर किटी के बिना उसका जी उचाट हो गया था, इसलिए अधिक समय तक उससे रहा न गया और वह ड्राइंग-रूम मे चला आया। किटी ताश खेलने के एक टेबिल के पास जाकर अकेली बैठ गई थी, और टेबिल के ऊपर बिछे हुए हरे रग के नये कपडे पर खड़िया-मिट्टी के एक टुकडे से कुछ गोलाकार चित्र खीच रही थी। लेविन उसके पास जाकर ससकोच खडा हो गया। किटी की आँखो मे एक सरस, स्निग्ध और सुकोमल मुसकान झलक रही थी, जिसे देख-देखकर लेविन आनन्द से उन्मत्त हो रहा था।

अकस्मात् किटी जैसे एक स्वप्न मे जाग पडी। उसने कहा—"अरे, मैंने तो सारी मेज को लिखकर भर दिया है!" यह कहकर वह उठने की तैयारी करने लगी। पर लेविन ने धडकते हुए कलेजे से कहा—"जरा रुक जाइए!" यह कहकर वह किटी के पास बैठ गया और बोला—"मैं बहुत दिनो से आपसे एक बात कहने की इच्छा रखता था!"

"कहिए, क्या बात है।"

"यह देखिए!" यह कहकर लेविन ने खड़िया-मिट्टी उठाकर मेज पर ये अक्षर लिखे—आ, ज, क, था, ऐ, न, हो, स, तो, व, बा, के, त, के, लि, थी, या, स, के, लि? इन प्राथमिक अक्षरो से बननेवाला जो पूरा वाक्य लेविन के मन मे था वह इस प्रकार था—"आपने जब कहा था कि ऐसा नही हो सकता, तो वह बात केवल तब के लिए थी, या सदा के लिए?"

किटी के लिए केवल इन अक्षरो से असली बात समझ लेना एक प्रकार से असम्भव-सा ही था, पर लेविन उसकी ओर ऐसी दृष्टि मे देख रहा था जैसे उसके जीवन-मरण की सारी समस्या केवल इस बात पर निर्भर करती हो कि किटी उस वाक्य का अर्थ ठीक-ठीक समझ पाती है या नहीं।

किटी सिर पर हाथ रखकर काफी देर तक अत्यन्त मनोनिवेश-पूर्वक उस रहस्यपूर्ण वाक्य का आशय समझने की चेष्टा करती रही।

२२

भोज के अवसर पर डाली को केरेनिन के साथ आना के सम्बन्ध में बातें करने का सुयोग प्राप्त हुआ था। डाली ने जब से सुना था कि अपने पति के साथ आना का मनमुटाव हो गया है, तब से वह बहुत बेचैन थी। वह आना को बडी श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी और उसे इस बात पर किसी प्रकार भी विश्वास नहीं होता था कि आना कोई पाप, दुष्कर्म या किसी प्रकार का अनुचित कार्य कर सकती है। डाली ने केरेनिन से बातें करने पर जब यह मालूम किया कि वह आना से भयङ्कर रूप से असन्तुष्ट है और उसे तलाक देने की बात सोच रहा है, तब वह बहुत घबराई। उसने कातर प्रार्थना के स्वर में कहा—"अलेक्से अलेग्जेण्ड्रोविच, आप एक धर्मप्राण ईसाई हैं, भगवान् के लिए ऐसा न कीजिए, नही तो वह बेचारी कही की न रहेगी।"

केरेनिन ने उत्तर दिया—"मैंने कोई भी बात उसे रास्ते पर लाने में उठा नहीं रक्खी, डार्या अलेग्जेण्ड्रोवना! मैं बराबर उसकी ज्यादतियो के प्रति अवज्ञा का भाव दिखाता रहा। मैं किसी हालत में भी नहीं चाहता था कि उसे तलाक देकर मैं आठ वर्ष के विवाहित जीवन को मिट्टी मे मिला दूँ। मैंने उससे यहाँ तक कहा कि वह जैसा जी चाहे करे, पर बाह्य शिष्टाचार और सामाजिकता का ध्यान रक्खे। उसने मेरे इतने से अनुरोध को भी घृणापूर्वक ठुकरा दिया! ऐसी विकृत-स्वभाव, चरित्र-भ्रष्ट और निर्लज्ज स्त्री के साथ मैं कब तक समझौता किये रहूँ?" डाली अत्यन्त दुःखित होकर म्लान दृष्टि से केरेनिन की ओर देखकर बार-बार केवल यही कहती रही कि आना निर्दोष है और उसके प्रति अन्याय नही होना चाहिए। पर केरेनिन के हृदय पर उसकी इन सब बातो का कोई प्रभाव नहीं पडा।

वास्तव में केरेनिन ने आना को व्रान्सकी से प्रेम करने की पूरी सुविधा दे रक्खी थी, पर केवल एक शर्त उसने उसके आगे रक्खी थी। वह यह कि व्रान्सकी उसके घर पर आना से मिलने न आवे, ताकि लोगो को किसी प्रकार का सन्देह करने का अवसर न मिले। वह कट्टर ईसाई होने के कारण तलाक को धर्म-विरुद्ध समझता था। इसके अतिरिक्त जो बात विशेष महत्त्वपूर्ण थी, वह यह थी कि वह

२३

जब केरेनिन आब्लान्सकी की डिनर-पार्टी से लौटकर अपने होटल में पहुँचा, तब उसके बैरा ने उसे दो तार दिये। पहला तार उसके आफिस से सम्बन्ध रखता था। पर दूसरा तार खोलकर जब उसने पढा, तब वह चकित रह गया। उस तार के नीचे आना का नाम था। उसमें लिखा था—"मैं मर रही हूँ। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम शीघ्र वापस चले आओ। मरने के पहले मैं तुम्हारी क्षमा पाना चाहती हूँ।" केरेनिन को उस तार की सचाई पर विश्वास नही होता था। वह अपने मन में कहने लगा—"यह एक अच्छा ढकोसला है।"

फिर भी उसने उसी दम पीटर्सबर्ग को लौट चलने का निश्चय किया। कौन कह सकता है, कही उस भ्रष्टा नारी के हृदय में सचमुच पश्चात्ताप का भाव उत्पन्न हो गया हो। दूसरे दिन जब वह घर पहुँचा, तब पहले चौकीदार को देखते ही उससे उसने पूछा—"तुम्हारी मालकिन कैसी है?"

"कल उन्होंने एक लडकी को जन्म दिया है। पर उनकी दशा चिन्ताजनक है।"

"भीतर कौन-कौन है?"

"डाक्टर, दाई और कौन्ट व्रान्सकी।"

केरेनिन भीतर गया। ड्राइग-रूम में उसे दाई मिली। दाई ने कहा—"ईश्वर को धन्यवाद है कि आप आगये। आपकी पत्नी सब समय केवल आपके ही सम्बन्ध में बडबडाती जाती हैं।"

भीतर जाकर केरेनिन ने देखा कि व्रान्सकी एक कमरे में बैठा हुआ अपना मुँह दोनो हाथों से ढककर रो रहा है। भीतर डाक्टर को किसी बात से चिल्लाते सुनकर जब उसने सिर ऊपर को उठाया, तब केरेनिन को देखकर वह चौंक पडा। वह उठा और फिर सिर नीचा करके बैठ गया। पर कुछ देर बाद फिर उठ खडा हुआ और बोला—"वह मर रही है। डाक्टर लोग उसके जीने की कोई सम्भावना नही देखते। मैं इस समय पूर्णरूप से आपके वश में हूँ। मैं आपसे प्रार्थना

के पहले मैंने दोनो मे मेल देख लिया है। अब मैं शान्तिपूर्वक मर सकूंगी। उफ, डाक्टर, बडा कष्ट हो रहा है। मुझे मार्फिया दो।"

आना उस दिन दिन भर और रात भर ज्वर से भयङ्कर रूप से पीडित और सन्निपात-ग्रस्त रही। व्रान्सकी रात मे अपने घर चला गया था, पर सुबह होते ही वह फिर केरेनिन के यहाँ आ पहुँचा। केरेनिन उससे आना के बगलवाले कमरे मे मिला। उसने भराई हुई आवाज में व्रान्सकी से कहा—"आप यही रहिए, वह किसी भी समय आपको बुला सकती है।"

तीसरे दिन आना के लक्षण कुछ अच्छे दिखाई दिये। उस दिन व्रान्सकी जब उसके कमरे के पास एक दूसरे कमरे मे बैठा हुआ था, तो केरेनिन भी उसके पास आकर बैठ गया, और उसने भीतर से किवाड बन्द कर दिये। व्रान्सकी ने समझा कि वह उसे अपने अपमान का बदला लेने की सूचना देने आया है। उसने कहा—"अलेक्से अलेग्ज़ेण्ड्रोविच, मैं इस समय इतना दुखी हूँ कि कुछ सोचने-समझने की शक्ति मुझमे नही रह गई है। मैं जानता हूँ कि आप भी दुखी है, पर मेरी दशा आपसे भी भयङ्कर है। इसलिए मैं वर्तमान विषय मे कुछ कहने या सुनने में असमर्थ हूँ।" यह कहकर वह उठने लगा था, पर केरेनिन ने उसे रोका और कहा—"मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी बात ध्यान से सुन लीजिए। मेरे मन में इस विषय मे जो भावना उत्पन्न हुई है उसमे आपको परिचित करा देना मैं आवश्यक समझता हूँ। मेरा हृदय इस समय क्षमा की भावना से लबालब भरा हुआ है। उसमें किसी के प्रति वैर या विद्वेष का लेश भी वर्त्तमान नही रहा है। आप मुझे कीच में ढकेलकर कुचल सकते है, मुझे सारे ससार की दृष्टि मे हास्यास्पद बना सकते है, पर फिर भी मैं अब अपनी पत्नी को कदापि नही त्यागूंगा, और आपसे तिरस्कार के रूप मे कभी एक शब्द भी नही कहूँगा।" यह कहकर वह आँखो मे आँसू भरकर उठ खडा हुआ। व्रान्सकी स्तब्ध और विभ्रान्त होकर देखता रह गया। वह ठीक तरह से केरेनिन की बात का महत्त्व नही समझ पाया, पर फिर भी उसे ऐसा लगा कि वास्तव में केरेनिन एक अत्यन्त उच्च आदर्श से प्रेरित हुआ है, और उसकी तुलना मे वह अत्यन्त हीन और तुच्छ हो गया है।

उसे इस बात का दुःख हुआ कि ज्यों ही वह आना की आत्मा की गहराई में परिचित होकर उसके साथ सच्चे और स्थायी प्रेम के बन्धन में बँधने की आशा करने लगा था, त्यों ही वह पति से क्षमा माँगकर उससे सदा के लिए अलग होने का भाव दिखाने लगी। दुःख लज्जा और ग्लानि के कारण उसे अपना सारा जीवन भार-स्वरूप जान पड़ने लगा। सैनिक जीवन में अपनी योग्यता-द्वारा विशिष्ट पद, यश और कीर्ति प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा उसे तुच्छ जान पड़ने लगी। वह समझ गया कि आना के बिना उसका जीना व्यर्थ है। यह सोचकर उसने पिस्तौल से आत्महत्या करने का प्रयत्न किया। उसे चोट आई, पर वह मरा नहीं। घाव अच्छा हो गया और वह बच गया। अपनी शोचनीय मानसिक तथा शारीरिक स्थिति से जब वह कुछ सँभला, तब उसने पीटर्सबर्ग तथा मास्को के परिचित समाज से बहुत दूर जाकर रहने का निश्चय कर लिया। ताशकन्द में एक सैनिक पद स्वीकार करके वह वहाँ जाने की तैयारी करने लगा। पर इसके पहले वह एक बार आना से मिल लेना चाहता था। इधर केरेनिन नहीं चाहता था कि जिस व्यक्ति के कारण उसके पारिवारिक जीवन की सारी शान्ति और शृंखला नष्ट हो गई है, वह फिर उसके घर में आकर एक नई अशान्ति उत्पन्न करे। आना को भी वह उससे मिलने की आज्ञा नहीं दे रहा था।

आना को बेट्सी से यह सूचना मिल चुकी थी कि व्रान्सकी ने उसके कारण आत्महत्या करने की चेष्टा की थी और अब वह ताशकन्द जाने की तैयारी कर रहा है। वह बहुत दिनों से उससे मिलने के लिए यों ही अधीर हो रही थी, तिस पर जब उसने पूर्वोक्त संवाद सुना तब वह और अधिक व्याकुल हो उठी। पर इस सम्बन्ध में अपने पति से अनुरोध करना वह अपने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझने लगी थी। उसकी तरफ से बेट्सी ने केरेनिन से प्रार्थना की कि वह व्रान्सकी को आना से मिलने की आज्ञा देने की कृपा करे। पर केरेनिन ने उसकी बात टाल दी।

इसी बीच आब्लान्सकी पीटर्सबर्ग आया और आना से मिला। वह अपनी बहन की परिस्थिति को भली भाँति समझे हुए था, और उससे पूर्ण सहानुभूति रखता था। आब्लान्सकी को देखते ही आना विह्वल होकर रो पड़ी। वह बिलख-बिलखकर कहने लगी—"स्टीवा, अब मृत्यु को छोड़कर मेरे लिए और कोई चारा नहीं है!" आब्लान्सकी ने उसे दिलासा देते हुए कहा—"घबराओ नहीं, आना! भगवान्

व्रान्सकी ने कहा—"आना, इन सब बातो की चिन्ता मत करो, हम दोनो के लिए संसार में केवल एक बात महत्त्वपूर्ण है, वह यह कि हम और तुम एक-दूसरे को तन से, मन से, आत्मा से चाहते है। शेष सब बातें व्यर्थ हैं। मैंने निश्चय किया है कि हम दोनो कुछ समय के लिए इटली जाकर रहे। वहाँ तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा हो जायगा, और चित्त भी शान्ति पावेगा।"

ताशकन्द में व्रान्सकी को जो एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त हो रहा था, उसे उसने आना के प्रेम के खातिर अस्वीकार कर दिया; और एक महीने बाद वह आना को साथ लेकर इटली चला गया। सेरेज़ा अपनी मा से बिछुडकर अपने पिता के साथ रहने लगा।

इसके बाद विवाह की चर्चा चली। बूढी प्रिन्सेस ने अपने पति से कहा—"सगाई का दिन निश्चित हो जाना चाहिए और यह भी तय हो जाना चाहिए कि विवाह कब होगा।"

बूढे प्रिन्स ने लेविन की ओर सकेत करके कहा—"जो व्यक्ति प्रधानरूप से सम्बन्धित है, उसी से यह प्रश्न किया जाना चाहिए।"

लेविन बोल उठा—"यदि आप लोग मुझसे पूछते है, तो मेरी राय यह है कि सगाई आज ही हो जाय और विवाह कल।"

"कैसी विचित्र बात करते हो। विवाह के पहले कितना आयोजन करना पडता है, इसकी भी कुछ खबर है।"

लेविन ने कहा—"मुझे और किसी बात की खबर नही है, मैं इतना प्रसन्न हूँ कि अब विवाह मे एक दिन की भी देर मुझे सह्य नही होगी।"

अन्त मे यह तय हुआ कि इस सम्बन्ध मे यथा-सम्भव शीघ्रता की जायगी। पर बहुत शीघ्रता करने पर भी आयोजन मे प्राय पाँच सप्ताह लग ही गये। लेविन के उत्साह का अन्त नही था। अपनी जिस कामना को वह एक स्वर्गीय स्वप्न समझता था और जिसकी चरितार्थता की आशा वह एकदम छोड चुका था, वह जब इतने सुन्दर रूप से सफल होने को आया, तब वह वास्तव मे अपने को सप्तम स्वर्ग के निकट पहुँचा हुआ समझने लगा।

विवाह का विराट् आयोजन किया गया था और मास्को तथा पीटर्सबर्ग के सभी प्रतिष्ठित तथा सभ्रान्त व्यक्ति उसमे सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रित किये गये थे। गिर्जे मे जब प्रधान पादडी दोनो वर-वधू के जीवन को एकरूप मे मिलाने का मत्र पढ रहा था, तब लेविन के हृदय मे एक अव्यक्त आध्यात्मिक तरग किटी के प्रति उसके प्रेमभाव के साथ मिलकर उसे एक अपूर्व चैतन्य, एक अनिर्वचनीय प्रेरणा प्रदान कर रही थी। विवाह के सब कर्मों मे भाग लेते हुए वह ऐसा अनुभव कर रहा था, जैसे वे सब बातें स्वप्न मे हो रही है। आनन्द, उल्लास, भावोन्माद और आत्म-विस्मृति से वह विभोर हो रहा था। किटी भी अत्यन्त पुलकाकुल और हर्षित हो रही थी। पर वह लेविन की तरह भावोन्माद-ग्रस्त होकर आत्म-विस्मृत नहीं हो रही थी। वह भी स्वप्न देख रही थी। पर उसका स्वप्न अपने भावी विवाहित जीवन की आदर्शपूर्ण वास्तविकता से सम्बन्ध रखता था।

विवाह हो जाने के बाद लेविन ने यह प्रस्ताव किया कि 'हनीमून' रूस के बाहर भ्रमण करके मनाया जाय। पर किटी ने देहात में—

लेविन के घर जाकर 'सुहाग' मनाने की इच्छा प्रगट की। लेविन को विवश होकर उसकी यह बात माननी पड़ी।

अपनी नव-विवाहिता सुन्दरी पत्नी को लेकर जब लेविन घर पहुँचा तो उसकी बूढ़ी दाई आगाथा मिखेलोवना से लेकर छोटे-से नौकर-चाकर तक सभी प्रसन्नता के कारण परम पुलकित थे। आगाथा मिखेलोवना लेविन की मा के स्थान में थी और घर का सारा कारोबार उसी के हाथ में था। उसे तो यही आशा न थी कि लेविन विवाह करेगा। इसलिए जब उसने देखा कि वह केवल विवाह करके ही नहीं आया, बल्कि उसकी स्त्री बड़ी सुन्दर और मधुर स्वभाव की है, तब वह स्नेह-भाव से गद्गद हो उठी।

री-खोटी बात सुनाकर रोने लगती । इससे लेविन का क्रोध शान्त
होता, पर वह बलपूर्वक उसे पी जाने की चेष्टा करता। कुछ देर
क कहा-सुनी होने के बाद फिर उनमे पहले से भी अधिक मेल
जाता और दोनो प्रेमपूर्वक एक-दूसरे के गले मिलते। इस प्रकार
ी घटनाओं से उनके पारस्परिक प्रेम-सम्बन्ध मे कोई अन्तर नही
ाया, बल्कि उसकी भित्ति और भी दृढ हो गई। लेवि- की कोरी
ावुकता हट गई और उसे जीवन की वास्तविकता का अनुभव
ोने लगा ।

सहारा भी कहीं हाथ से चला गया, तो फिर उसकी क्या गति होगी इस बात की कल्पना भी ऐसी भयावह थी कि वह आतंक से सिहर उठती। इसलिए भूत और भविष्य की सब चिन्ताओं को बरबस अन्तर के अतल गह्वर में ढकेलकर वह वर्त्तमान के अपूर्व मनोमोहक राग-रंग में अपने को पूर्णरूप से निमग्न किये रहती।

व्रान्सकी आना को सब प्रकार से प्रसन्न रखने में कोई बात उठा न रखता। आना स्वभाव से ही कलाप्रिय थी, और व्रान्सकी भी चित्रकला में रुचि रखता था। इसलिए इटली के कलात्मक वातावरण में व्रान्सकी एक चित्रकार का परिचय प्राप्त करके उसके संसर्ग से अपने को और आना को ठीक उसी प्रकार प्रसन्न रखने की चेष्टा करने लगा, जिस प्रकार निकम्मे लोगों को समय काटना दूभर मालूम होने से वे ताश खेलकर अपना जी बहलाने का प्रयत्न करते हैं। व्रान्सकी आना से द'ढ़ प्रेम करता था, और इटली के उस एकान्त वातावरण में उसके प्रेम में कोई विशेष कमी नहीं आई। पर फिर भी बीच-बीच में आना के अत्यधिक प्रेम-प्रदर्शन से वह उकता जाता, और अपने को एक ऐसे बन्धन से जकड़ा हुआ महसूस करता, जो सुन्दर, सुकोमल और सुखकर होने पर भी आखिर बन्धन ही था!

कुछ समय तक इटली में रहने के बाद अकस्मात् व्रान्सकी वहाँ की निर्जन शान्ति से उकता गया। उसने रूस को लौट चलने का प्रस्ताव किया। उसका विचार कुछ समय पीटर्सवर्ग में रहकर फिर देहात में अपनी 'स्टेट' में आना के साथ जाकर जमकर रहने का था।

× × × ×

पीटर्सबर्ग में आकर वे लोग एक होटल में रहने लगे। आना अपने लड़के के विछोह से बहुत व्याकुल हो उठी थी। उससे मिलने की प्रबल आकांक्षा उसके मन में दिन पर दिन बढ़ती चली जाती थी। पर कोई उपाय उसे नहीं सूझता था। वह जानती थी कि उसका पति कभी उसे सेरेजा से मिलने नहीं देगा, प्रतिहिंसा की भावना उसे कभी इस बात के लिए राजी नहीं होने देगी।

बहुत सोच-विचार के बाद अन्त में उसने केरेनिन की एक महिला-मित्र, कौण्टेस लीडिया आइवानोवना को एक पत्र फ्रेंच भाषा में लिखा, जिसका आशय इस प्रकार था —

"कौण्टेस महोदया! मैं आपकी धर्मप्राणता से परिचित होने के कारण आपको यह पत्र लिखने का साहस कर रही हूँ। मैं अपने पुत्र से बिछुड़ने के कारण बहुत ही दुःखी हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ

पहुँचेगा। इसलिए आपको अपने पुत्र की आध्यात्मिक उन्नति को ध्यान मे रखकर उससे न मिलने का त्याग स्वीकार कर लेना चाहिए। भगवान आपको सुमति दें।—कौन्टेस लीडिया।"

वास्तव मे कौन्टेस लीडिया का उद्देश्य धार्मिकता की आड मे आना को अत्यन्त निष्ठुर, मार्मिक चोट पहुँचाने का था, और इसमे उसे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। आना उस पत्र को पढकर अत्यन्त मर्माहत हुई। धर्म के नाम पर जो व्यक्ति दूसरे को ऐसी हृदयहीन पीडा पहुँचा सकता है उसकी निर्ममता कैसी भयङ्कर है, इस बात का अनुमान वह अच्छी तरह लगा सकती थी। उसने अपने मन म कहा—"मै इन लोगो से अच्छी हूँ, मै कम से कम झूठ तो नही बोलती!"

दूसरे ही दिन सेरेजा का जन्मदिन था। आना ने निश्चय किया कि वह हर हालत मे कल सेरेजा से मिलेगी—फिर चाहे इस दुस्साहस के लिए उसे कैसी ही विकट कठिनाइयो का सामना क्यो न करना पड़े। वह एक खिलौने की दूकान में गई। वहाँ उसने बहुत-से सुन्दर-सुन्दर खिलौने खरीदे। इसके बाद उसने यह तय किया कि वह किस उपाय से किस समय और किस रूप मे सेरेजा से मिलेगी। उसने सोचा कि बडे सवेरे ही जाना ठीक होगा, तब केरेनिन सोया हुआ होगा। चौकीदार तथा दूसरे नौकरो की मुट्ठी गरम करने से वे उसे अन्दर जाने से नही रोकेंगे। वह बुर्का पहनकर जायगी, और बुर्के को नही हटावेगी।

इधर सेरेजा अपने पिता के कडे शासन मे बहुत दुखी और उदास रहने लगा। वह अपनी मा को तनिक भी नही भूला था। उसे यह विश्वास दिलाने की चेष्टा की गई थी कि उसकी मा मर चुकी है, फिर भी उसकी अन्तरात्मा इस बात को सत्य मानने के लिए तैयार न थी। पर सबसे भयङ्कर बात उसके लिए यह थी कि अपनी मा के सम्बन्ध में घर के किसी भी व्यक्ति से कोई प्रश्न करने की आज्ञा उसे नही थी। प्रश्न करते ही उस पर फटकार पड़ने लगती थी।

आना दूसरे दिन तडके ही केरेनिन के दरवाजे पर पहुँच गई। उसने गाडी पर से उतरकर सामनेवाले दरवाजे की घटी बजाई। चौकीदार ने अपने एक सहायक छोकरे को यह जानने के लिए भेजा कि कौन आया हुआ है। छोकरे ने ज्यो ही दरवाजा खोला, त्यो ही आना ने चुपके से एक तीन रूबल का नोट उसके हवाले कर दिया। "मै सेरेजा—सर्जे

आना ने देखा कि उसके लाडले लडके का मुख पहले की अपेक्षा बहुत मलिन हो गया है। वह निर्निमेष आखो से उसे देख रही थी, और एक व्याकुल, उच्छल-क्रन्दन उसके हृदय के अतल मे उठकर उसके सारे तन-मन को प्लावित कर रहा था। उसकी आंखे डबडबा आई थीं और गला रुँध गया था। सेरेजा ने पूछा—"अम्मा, तुम क्यो रो रही हो? अम्मा, तुम्हें क्या हो गया है?"

तत्काल सँभलकर आना ने कहा—"कुछ नही हुआ बेटा, मै प्रसन्नता के कारण रो रही हूँ। इतने दिनो बाद तुम्हे देखा है न, इसलिए। अब उठो। अब तुम्हारे कपडे पहनने का समय हो गया है। मेरे बिना तुम कपडे कैसे पहन लेते हो, लल्ला। मेरे बिना—"वह सहज, स्वाभाविक स्वर मे बोलने की चेष्टा कर रही थी, पर उसका कण्ठ भर-भर आता था। उसे फिर रुलाई आ रही थी, इसलिए उसने अपना मुँह फेर लिया।

सेरेजा बोला—"अम्मा, अब मै ठण्डे पानी से नही नहाता। पिता जी ने मना किया है। तुमने मेरे मास्टर, वैसिली ल्यूकिच को नही देखा है? वह अभी आता ही होगा। और तुम मेरे कपडो के ऊपर बैठी हो।" यह कहकर वह खिलखिलाकर हँस पडा और फिर एक बार उसके गले मे अपनी बाँहें डालकर उसने लिपटते हुए बोला—"अम्मा, अम्मा।"

इधर वैसिली ल्यूकिच दरवाजे के बाहर खडा था। उसने आना को देख लिया था, और वह दोनो की स्नेह-भरी बाते सुन रहा था। वह आना के चले जाने का इन्तजार कर रहा था। उधर नौकरो में बडी हडबडी मच गई थी। सब जानते थे कि यदि उनके मालिक को उनकी पिछली मालकिन के आने की बात मालूम हो जायगी, तब बहुत बुरा परिणाम होगा। अन्त मे सबने मिलकर पुरानी दाई को आना के पास भेजने का निश्चय किया। दाई ने भीतर जाकर कहा—"सरकार।" और यह कहकर वह उसके हाथो को बडे स्नेह के साथ चूमने लगी। आना उसे देखकर बोली—"ओह, दाई तुम क्या यही हो। मुझे मालूम नही था।"

दाई ने कहा—"मैं यहाँ नही रहती। मै अपनी बहन के यहाँ हूँ।" और सहसा वह रो पडी, और बार-बार आना का हाथ चूमने लगी। आना को वह बहुत चाहती थी और उसके चले जाने से वह बहुत दु:खित थी। अन्त मे उसने आना के कानो मे कुछ कहा। आना

२७

व्रान्सकी जब आना को साथ लेकर इटली से लौटकर पीटर्सबर्ग आया, तब उसने सारे समाज का रुख अपने प्रति बदला हुआ पाया। एक ऐसी विवाहिता महिला को, जिसे पति ने तलाक नही दिया है, अपने पास पत्नी के रूप मे रखना समाज की दृष्टि म अत्यन्त निन्दनीय था। जब आना अपने पति के घर मे रहती थी, और व्रान्सकी का प्रेम-सम्बन्ध उसके साथ पूर्ण रूप से चल रहा था, तब समाज के बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्तियो की दृष्टि मे वे दोनो (व्रान्सकी और आना) बहुत ऊँचे स्तर पर उठ गये थे। पर जब आना पति को त्याग कर व्रान्सकी के साथ रहने लगी, तब समाज के लिए उसका यह अपराध अक्षम्य हो गया। व्रान्सकी समाज के इस ढोंग से जल उठा। उसकी मा आना से इसलिए जली-भुनी थी कि उसने उसके बेटे की पदवृद्धि मे घोर विघ्न डालकर उसका जीवन नष्ट कर दिया। उसकी भावज ने स्पष्ट शब्दो में कह दिया कि वह आना को अपने घर पर नहीं बुला सकती, न उसके यहाँ जा सकती है क्योंकि ऐसा करने से समाज उसे भी बहिष्कृत कर देगा। आना की सगिनी बेट्सी ने एक दिन आना को अपने यहाँ आने के लिए कहला भेजा, पर उसने जानबूझकर ऐसा समय निश्चित किया जब किसी भी दूसरे व्यक्ति के उसके यहाँ आने की सम्भावना नही थी। वह नही चाहती थी कि समाज उसे आना के साथ देखकर उसे भी हेय समझे। आना उसका उद्देश्य समझ गई और उसने उससे मिलना अस्वीकार कर दिया।

व्रान्सकी ने अत्यन्त दुःखित होकर देखा कि ऐसी दशा मे आना को साथ लेकर पीटर्सबर्ग में अधिक समय तक रहना असम्भव है। आना बेट्सी के यहाँ नही गई, पर उसने निश्चय किया कि उसी दिन सध्या को वह थियेटर में जायगी। व्रान्सकी उसके इस विचार ने बहुत घबरा उठा। वह जानता था कि थियेटर मे समाज की बहुत-सी प्रतिष्ठित महिलायें आवेगी और आना को देखकर उस पर तीखे ताने व्यग्य कसेगी। उसने आना को रोकना चाहा, पर वह अपने हठ पर अड़ी रही, बार-बार समझाने पर भी उसने न माना, तब व्रान्सकी मन ही मन क्षुब्ध हो उठा।

के अशिक्षित लडको को शिक्षित बनाने के उद्देश्य से उसने स्कूल खोला और सार्वजनिक चिकित्सा के लिए एक बहुत बडे अस्पताल की इमारत भी वह तैयार करवाने लगा। इन सब विषयो में वह बीच-बीच मे आना की भी राय लेता और आना जो सम्मति देती उसे भरसक मानता था । अपनी 'रियासत' के सुधार और उन्नति के कामो मे जुटे रहने से व्रान्सकी देहाती जीवन की निर्विघ्न शान्ति और एकरसता से उकताता नही था।

आना भरसक उन सब कामो मे दिलचस्पी लेने का प्रयत्न करती रहती, पर बीच-बीच मे उसका जी बहुत उचाट हो जाता। व्रान्सकी का प्रेम पाकर वह अपने को बहुत सुखी समझती थी, और अपनी छोटी लडकी एनी ('आना' का छोटा रूप) को प्यार करके सेरेज़ा से बिछुडने का दुख भूलने की चेष्टा करती रहती। पर दो बातो का खटका उसके मन मे जान मे या अनजान में, सब समय लगा रहता; एक तो व्रान्सकी के उससे उकता जाने की आशका और दूसरे सेरेज़ा से फिर कभी न मिल सकने की निराशा। इसके अतिरिक्त एक और दुख उसके पीछे लगा हुआ था। अपने जिस पति से वह हृदय से घृणा करने लगी थी, जिसके कारण अपना घर और अपने प्यारे लडके को त्यागकर वह व्रान्सकी के पास चली आई थी, उसकी स्मृति का चिह्न मन मे शेष न रखने की चेष्टा करने पर भी वह सफल नही हो पाती थी। कारण यह था कि तलाक का प्रश्न हल न हो सकने के कारण उसकी लडकी, जिसका पिता वास्तव में व्रान्सकी था, अभी तक 'केरेनिना' ही कही जाती थी। इन सब कारणो से आना बीच-बीच मे चिन्तागस्त हो जाती थी।

"मैं इसलिए जा रहा हूँ कि मेरा भाई मरने पर है, पर तुम्हे जाने की कौन-सी आवश्यकता आ पडी है?"

"क्यो? जिस कारण से तुम जा रहे हो, उसी कारण से मैं भी जाना चाहती हूँ।"

"नही, यह असभव है।"

"असभव नही है। मैं अवश्य चलूँगी, अवश्य!"—किटी ने खीझकर कहा।

लेविन बोला—"तुम्हे मालूम है कि मेरा भाई किस श्रेणी की स्त्री के साथ रहता है? ऐसी स्त्री से तुम्हारा मिलना मै उचित नही समझता।"

किटी ने कहा—"मैं और कुछ नही जानती, केवल इतना ही जानती हूँ कि मेरे पति का भाई बीमार है और उसकी सेवा-शुश्रूषा करना मेरे पति की ही तरह मेरा भी कर्त्तव्य है। बस!"

"मैं समझ गया। असली बात यह है कि तुम अकेले रहना पसन्द नहीं करती।"

इस बात पर किटी बहुत बिगड उठी। वह यह बात सहन न कर सकी कि उसका पति उसे स्वार्थी समझता है। बहुत देर तक झगडते रहने के बाद अन्त में पति-पत्नी मे फिर मेल हो गया और लेविन ने किटी को अपने साथ ले चलने का निश्चय किया।

निकोलस एक छोटे-से शहर के एक होटल में बीमार पडा हुआ था। लेविन किटी को बाहर के कमरे मे छोडकर स्वय भीतर अपने भाई के कमरे की ओर गया। दरवाजे मे उसे निकोलस की रखेली मैरी निकोलेवना मिली। लेविन ने उससे पूछा—"क्या हाल है?" उसने घबराई हुई आवाज मे उत्तर दिया—"अवस्था बहुत चिन्ताजनक है। वे सब समय आपको याद करते हैं। आप—आप क्या अपनी पत्नी के साथ आये है?" वह वास्तव मे इस बात के लिए बहुत सकोच का अनुभव कर रही थी कि किटी के समान एक सभ्रान्त महिला उसके समान एक साधारण बाजारू स्त्री के पास आई है। पर लेविन के उत्तर देने के पहले ही बाहर के कमरे से किटी वहाँ आ खडी हुई। लेविन इस बात से मन ही मन किटी से बहुत असन्तुष्ट हुआ और लज्जा का अनुभव करने लगा। मैरी निकोलेवना उससे भी अधिक लज्जित और सकुचित हुई और घबराहट के कारण उसकी आँखो से आँसू निकल आये थे। पर किटी ने निस्सकोच भाव से उससे पूछा—"रोगी की तबीअत कैसी है?"

साथ ले चलो, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। मेरे जाने से कोई हानि न होगी, मैं तुम्हे विश्वास दिलाती हूँ।"

पत्नी के बहुत अनुरोध करने पर अन्त में लेविन विवश होकर उसे रोगी के कमरे में ले गया। किटी ने जाते ही निकोलस से ऐसी स्नेहपूर्ण मीठी-मीठी बाते की कि उसका शीर्ण मुख एक बार खिल उठा। लेविन दुःख और भय के कारण उस कमरे में अधिक समय तक न रह सका, और किसी बहाने से बाहर चला गया। इस बीच में किटी ने होटल के नौकर-चाकरो की सहायता से सारा कमरा साफ़ करवाया और बिस्तर को झड़वाकर ठीक तरह से बिछवाया, और एक नई चादर ऊपर से फैला दी। तकियो के पुराने गिलाफ उतारकर नये गिलाफ लगवाये और अपने सामान में से नये तौलिये तथा नई कमीजें निकलवाई। पीकदान को साफ करवाया और गिलास तथा दूसरे बर्तनो को धुलवाया। इसके बाद एक अच्छे डाक्टर को बुलवाया, और दवा के लिये एक आदमी को 'केमिस्ट' के यहाँ भेजा।

लेविन जब कुछ समय बाद रोगी के कमरे में फिर आया, तब उसने कमरे का और रोगी का रूप ही कुछ दूसरा पाया। दुर्गंध के स्थान में सारे कमरो से इत्र की सुगंध आ रही थी, जिसे किटी ने छिड़क दिया था। पलँग के नीचे एक बढ़ियाँ चटाई बिछी थी। एक सुन्दर और साफ-सुथरे टेबिल के ऊपर दवा की शीशियाँ सजाकर रखी हुई थी। किटी ने स्वयं रोगी को नहला-धुलाकर और साफ कपड़े पहनाकर उसका रूप-रंग ही बदल डाला था। रोगी के मुख पर सन्तोष और आशा का एक क्षीण प्रकाश दिखाई देने लगा था।

लेविन को स्वप्न में भी यह आशा नही थी कि किटी किसी मरणासन्न रोगी की परिचर्या ऐसे सुन्दर ढंग से कर सकती है। वह मन ही मन ईश्वर को इस बात के लिए धन्यवाद देने लगा कि किटी उसके साथ चली आई। रोगी क्षीण स्वर में किटी से बोला—"मुझे इस समय बहुत आराम मालूम हो रहा है। यदि मैं तुम्हारे साथ होता, तो कभी अच्छा हो गया होता।"

पर वास्तव में उसका रोग अब चरमावस्था को पहुँच चुका था, और किसी प्रकार की परिचर्या तथा चिकित्सा से उसका स्वस्थ होना असम्भव था। उसकी दुर्बलता अत्यन्त शीघ्र गति से बढ़ती

२६

गली गर्मियों में किटी के यहाँ आकर रहने लगी। अपनी छोटी-सी 'स्टेट' में उसका जो मकान था, वह काफी पुराना हो चला था और उसकी मरम्मत की आवश्यकता थी। इसलिए लेविन और किटी ने उससे यह अनुरोध किया था कि वह इस बार गर्मियों में उन्हीं के यहाँ रहे। डाली ने अपने पति की सलाह से उन लोगों की बात मान ली थी।

डाली के मन में बहुत दिनों से आना से मिलने की तीव्र इच्छा वर्तमान थी। इस बार उसने निश्चय किया कि वह अवश्य ही व्रान्सकी के 'स्टेट' में जाकर आना से मिलेगी। लेविन और किटी को स्वभावतः उसके व्रान्सकी के यहाँ जाने की बात पसन्द नहीं आ सकती थी। फिर भी लेविन ने उसकी यात्रा का पूरा प्रबन्ध कर दिया। लेविन की गाड़ी पर चढ़कर डाली रवाना हो गई। रास्ते में वह अपने उच्छृंखल-स्वभाव के पति के कारण अपने आर्थिक कष्ट और बच्चों के पालन-पोषण की कठिनाइयों के सम्बन्ध में चिन्ता करती रही। अपने पति के आचरण के सम्बन्ध में चिन्ता करते-करते उसे उस दिन की याद आई, जब आना ने उसे समझा-बुझाकर स्टीवा को क्षमा कर देने के लिए राजी किया था। आना के कहने पर ही उसने ऐसे पति से मेल कर लिया, नहीं तो वह क्या किसी भले घर की स्त्री के प्रेम के योग्य था? वह मन ही मन कहने लगी—"न जाने आना को लोग दोष क्यों देते हैं। कम से कम मैं तो उसे कोई दोष नहीं दे सकती। क्या मैं उससे अच्छी हूँ? उसमें और मुझमें केवल यही अन्तर है कि मैं एक ऐसे पति से प्रेम करती हूँ जो वास्तव में प्रेम के योग्य नहीं है, और आना अपने पति से घृणा करती है। पर यदि आना अपने पति को नहीं चाहती, तो इसमें उसके पति का ही दोष है, उसका नहीं। उसका हृदय सरस है और वह प्रेम की प्यासी है। उसका पति अपने रूखे स्वभाव के कारण उसकी वह प्यास नहीं मिटा सका। कोई भी स्त्री प्रेम के बिना जीवित नहीं रह सकती। यदि मैं आना की स्थिति में होती, तो बहुत सम्भव है मैं भी वैसा ही करती। कौन कह सकता है कि उस समय आना का कहना मानकर मैंने भूल नहीं की? मुझे चाहिए था कि मैं भी अपने पति को छोड़ देती और एक नया जीवन बिताती। मैं उस समय किसी

बाद वह बोली—"मुझे कितना हर्ष हुआ है, मैं इसका वर्णन नही कर सकती।"

व्रान्सकी भी घोडे पर से उतरकर वहाँ आ पहुँचा था। आना ने उससे कहा—"अलेक्से ! डाली आई है। कैसे आनन्द की बात है।"

व्रान्सकी ने अपनी टोपी उतारकर डाली का अभिवादन किया और बोला—"आपके आने से हम लोग वास्तव मे हृदय से प्रसन्न है।"

आना और व्रान्सकी के अन्य मित्रो ने भी आकर डाली का अभिवादन किया। इसके बाद व्रान्सकी के मकान तक पहुँचने के लिए आना और डाली एक ही गाडी मे बैठ गई। शेष सब लोग उनके पीछे-पीछे घोडो पर चले जा रहे थे।

आना डाली की विस्मित दृष्टि का अनुमान लगाते हुए बोली—"तुम्हे निश्चय ही यह देखकर आश्चर्य हो रहा होगा कि मै अपनी वर्तमान स्थिति में इतनी स्वस्थ और प्रसन्न क्यो हूँ। क्या करूँ डाली, मैं वास्तव मे आजकल बहुत प्रसन्न हूँ। बीच-बीच मे गहन चिन्ताओ के जाल में जकड जाती हूँ, इसमे सन्देह नही, पर फिर भी अलेक्से के साथ देहात की एकान्त शान्ति मे स्वतन्त्रतापूर्वक रहने से मैं बहुत सुखी हूँ।"

डाली ने कहा—"तुम्हें सुखी देखकर मुझे सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई है। इतने दिनो तक तुमने मुझे अपने सम्बन्ध मे एक भी पत्र नही भेजा, इसका कारण क्या है ?"

मुझे साहस नही हुआ, डाली, नही तो भला मैं तुम्हे क्यो पत्र न भेजती। तुम जानती हो, समाज इस समय मुझे किस दृष्टि से देखता है ?"

"तुम नही जानती हो, आना कि मै तुम्हे किस दृष्टि से देखती । मैं तुम्हारे सम्बन्ध मे क्या सोचती हूँ, जानती हो ? मैं तुम्हें—तुमसे प्रेम करती हूँ, आना ! इससे अधिक और मै कुछ नही जानती।" डाली जो बात कहने जा रही थी, उसे कुछ सोचकर टाल गई।

रास्ते मे दूर-दूर तक फैली हुई बडी-बडी इमारतें देखकर डाली ने कहा—"यहाँ तो एक पूरा शहर बसा दिया गया है।"

आना अन्यमनस्क होकर कुछ सोच रही थी। वह कुछ न बोली। जब वे लोग मकान पर पहुँचे, तब डाली को बहुत बढ़िया फार्नीचर से सुसज्जित एक ठाठदार कमरा दिया गया। कुछ समय बाद आना अपने कपडे बदलकर फिर डाली के पास आई और उसे अपनी

डाली ने उत्तर दिया—"किटी तुम्हारे प्रति वैर-भाव नही
रखती। वह बहुत प्रसन्न है। उसको जैसा सुन्दर और गुणवान्
पति मिला है, वैसा शायद ही किसी को मिल सके।"
"शायद ही किसी को मिल सके। ठीक है। ठीक है। अच्छा
बताओ, डाली, अलेक्से के साथ तुम्हारी क्या बातें हुई?"
डाली ने आना के मुख के व्यस्त और उत्तेजित भाव पर ध्यान
देते हुए कहा—"उसने तलाक की आवश्यकता पर जोर दिया है।
उसका कहना है तुम कानून के अनुसार उसके साथ विवाह करके उसकी
पत्नी बन जाओ। यह तभी हो सकता है जब तुम तलाक के लिए अपने
पूर्व पति से अनुरोध करो। वर्त्तमान स्थिति मे तुम्हारे जो भी बच्चे
होंगे, वे सब नाजायज ठहराये जावेंगे और वे व्रान्सकी की सम्पत्ति
के उत्तराधिकारी नही हो सकेंगे।"
आना ने अपनी आँखें एक विचित्र ढग से मीचते हुए अनमने भाव
से उत्तर दिया—"ठीक है। पर मैं तलाक के लिए कभी अनुरोध नही
करूँगी। यह असम्भव है। साथ ही यह भी जान लो कि अब
भविष्य में मेरे कोई बच्चा उत्पन्न नही होगा। मैंने इस सम्बन्ध में
डाक्टरो से सलाह . "
पर डाली के मुख पर अत्यन्त विस्मय का भाव देखकर वह चुप
हो गई। वास्तव में आना के समान सहृदय नारी गर्भ-निरोध के
अप्राकृतिक और अमानुषिक उपाय काम में ला सकती है, यह बात
इसके पहले डाली के लिए कल्पनातीत थी।
आना ने डाली के जिज्ञासुभाव को सन्तुष्ट करने के लिए कहा—
"तुम जानती हो, डाली, मेरी वर्त्तमान परिस्थिति में मेरे लिए सबसे
अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मैं अपने प्रति अपने पति का—
वास्तव में वह मेरा पति ही है—प्रेम किसी हालत में भी कम
न होने दूँ। यदि मैं गर्भवती होती रहूँगी तो निश्चय ही मेरा
सौन्दर्य और यौवन नष्ट हो जायगा, और—और तुम पुरुषो की
प्रकृति से परिचित ही हो, वे किसी भी नष्ट-यौवना स्त्री के साथ
अधिक समय तक प्रेम-सम्बन्ध नहीं निभा सकते।"
डाली आना के मुख से इस प्रकार की बात सुनकर आतङ्क से
काँप उठी। वह सोचने लगी कि आना अब क्या से क्या हो गई। वह
यह भी जानती थी कि आना का अन्तस्तल कभी इस प्रकार की
बातो को पसन्द नहीं कर सकता, पर जिस असाधारण परिस्थिति
में भाग्य ने उसे डाल दिया है, उसके कारण वह शारीरिक, नैतिक

३०

ब्रान्सकी देहात में उकताने लगा था। यद्यपि दोनो ने यह निश्चय कर लिया था कि वे बराबर देहात मे ही जीवन बिताया करेंगे, शहर में नही जावेगे; पर इस प्रतिज्ञा का निभाना ब्रान्सकी के लिए बहुत कठिन हो उठा। वह किसी बहाने से कुछ समय के लिए देहाती जीवन की एकरसता से मुक्ति पाना चाहता था। जिला-कौंसिलो के चुनाव के सिलसिले में उसने मास्को जाने का निश्चय किया। आना को स्वभावत यह बात बहुत नागवार मालूम हुई कि वह उसे अकेली छोडकर सैर-सपाटे के लिए जा रहा है। पर अपने क्रोध को मन ही मन पीकर उसने शान्त भाव दिखाया। ब्रान्सकी उसका रुख देखकर समझ गया कि वह भीतर मे बहुत असन्तुष्ट हो उठी है। पर उसने अपने मन को यह कहकर समझाया—"मैं उसके लिए सब-कुछ त्याग कर सकता हूँ, पर अपनी स्वतन्त्रता का बलिदान नही कर सकता।"

ब्रान्सकी के चले जाने पर आना जब अकेली रह गई, तब तरह-तरह की कल्पनाये उसके मन मे उदित होने लगी। उसके मन मे यह विश्वास जमने लगा कि निश्चय ही अब ब्रान्सकी उससे उकताने लगा है। इस कल्पना से वह आतङ्कित होकर सिहर उठी। ब्रान्सकी की अनुपस्थिति मे एक भी दिन व्यतीत करना उसके लिए दूभर हो गया। रात मे तरह-तरह की भयानक चिन्ताओ से उसे नीद नहीं आ पाती थी, इसलिए उसने 'मार्फिया' खाना आरम्भ कर दिया। उसे विश्वास था कि ब्रान्सकी पाँचवें दिन अवश्य ही लौट आवेगा। पर जब वह छठे दिन भी न आया, तब वह अत्यन्त व्याकुल, चञ्चल और उत्तेजित हो उठी। इसी बीच उसकी लडकी की तबीअत कुछ खराब हो गई। उसे बहाना मिल गया, और उसने ब्रान्सकी को एक पत्र भेजा, जिसमे लिखा था कि एनी सख्त बीमार है, और साथ ही यह उलटी बात भी लिख दी कि वह (आना) ब्रान्सकी के बिना बेचैन है, और उससे मिलने मास्को आना चाहती है। पर एनी उसी दिन चगी हो गई थी।

बहुत बढ़ गई थी। वह सोचती कि जिस व्यक्ति के लिए उसने इतना त्याग किया है, घर छोड़ा, वार छोड़ा और अपने प्यारे पुत्र तक को त्याग दिया, अन्त में वह उसे धोखा देने पर तुला हुआ है। इस तरह की बात सोचते-सोचते उसका मस्तिष्क इस कदर उत्तेजित हो उठता कि वह पागल-सी बन जाती।

इस प्रकार की भयङ्कर कल्पना से मुक्ति पाने के लिए आना अपनी चिन्ता की धारा वदलने की चेष्टा करने लगती, और मन ही मन कहती—"नही, नही, ऐसा नही हो सकता। यह सब मेरा भ्रम है, मेरे उत्तेजित मस्तिष्क की कल्पना है। वह बहुत सच्चा और सहृदय है। वह मुझसे प्रेम करता है। मैं भी उससे प्रेम करती हूँ। कुछ ही दिनो बाद जब मुझे तलाक मिल जायगा, तब फिर हम दोनो बहुत सुखपूर्वक रहेगे। मैं व्यर्थ ही बात-बात मे अलेक्से से बिगड़ बैठती हूँ, यह मेरा ही दोष है। मैं इसके लिए उससे क्षमा माँग लूँगी।"

पर व्रान्सकी से बातें होते ही, उसकी रुखाई से परिचित होने पर आना का चित्त फिर उत्तेजित हो उठता और वह फिर उससे उलझने लगती। उस दिन व्रान्सकी दिन भर बाहर रहने के बाद जब रात को लौटा, तब आना ने उससे प्रस्ताव किया कि परसो देहात को वापस चला जाय। व्रान्सकी ने उस प्रस्ताव को टालना चाहा। उसने कहा—"परसो रविवार है, और उस दिन मुझे एक आवश्यक काम से मा से मिलना है।"

इतने दिनो तक व्रान्सकी अपनी मा के प्रति उदासीन था, यह बात आना खूब अच्छी तरह से जानती थी, इसलिए अकस्मात् उसके मन मे मातृभक्ति का भाव उमडने का कारण क्या है, इस बात का अनुमान लगाने पर उसे तत्काल प्रिन्सेस सोरोकिना की याद आगई। वह व्रान्सकी की मा के साथ मास्को के निकट रहती थी। निश्चय ही व्रान्सकी उस नौजवान छोकरी के फेर मे पड गया है। ईर्ष्या की धधकती हुई ज्वाला आना के हृदय को अत्यन्त निष्ठुरता के साथ जलाने लगी। फिर भी अपने को यथाशक्ति सँभालते हुए उसने कहा—"तुम वहाँ कल जाकर वापस आ सकते हो।"

"नही, यह असम्भव है। जिस काम के लिए मैं जाना चाहता हूँ वह परसो ही हो सकता है।"

"तुम झूठे हो।"

"आना, प्रत्येक बात की एक सीमा होती है!"

३१

लेविन और किटी को मास्को आये दो मास हो गये थे। लेविन इस बात पर ध्यान दे रहा था कि किटी के स्वभाव से नवयौवन की चञ्चलता धीरे-धीरे हटती चली जाती थी, और उसके स्थान में एक सुन्दर सुमधुर और शान्त गंभीरता का आभास दिखाई देने लगा था। निकोलस की मृत्यु के पूर्व किटी ने उसकी जो सेवा की थी, उन के घातक रोग के भयंकर वातावरण में तनिक भी विचलित न होकर उसने जिस धीरता के साथ अपना कर्तव्य निभाया था, उसे देखकर लेविन के मन में उसके प्रति दिन पर दिन श्रद्धा का भाव बढ़ता चला जाता था। मास्को में एक और विशेष बात पर लेविन ने ध्यान दिया। वह यह कि पहले जिन छोटी-छोटी बातों के लिए किटी के और उसके बीच में व्यर्थ का वाद-विवाद उठ खड़ा होता था, अब वैसा नहीं होता था। दोनों एक दूसरे की सलाह और सम्मति का आदर करने लगे थे।

केवल एक बात इस बीच ऐसी आ पड़ी जिससे दोनों, पति-पत्नी, के मन में क्षणिक असन्तोष का भाव जाग पड़ा। आना और व्रान्सकी मास्को आये हुए हैं, यह बात दोनों को मालूम हो चुकी थी। लेविन नहीं चाहता था कि व्रान्सकी से किटी की भेंट हो। किटी भी यही चाहती थी। पर एक दिन संयोग से किटी की धर्म-माता, प्रिन्सेस बोरिसोवना के यहाँ व्रान्सकी से किटी की भेंट हो गई। व्रान्सकी को देखते ही किटी के मन में क्षणकाल के लिए पूर्व वेदना जाग पड़ी और उसके मुख पर लालिमा छा गई। पर शीघ्र ही उसने अपने को सँभाल लिया, और उसके प्रति उसने न तो आक्रोश का भाव प्रकट होने दिया, न लज्जा का और न किसी प्रकार की वेदना का। व्रान्सकी जब प्रिन्सेस बोरिसोवना से बातें कर रहा था, तब वह सहजभाव से उसकी बातें सुन रही थी और परिहास की बातों पर शिष्टाचारपूर्वक मुसकरा भी देती थी। अन्त में जब व्रान्सकी ने जाते समय सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया, तब किटी ने सहज शान्त रूप से उसकी ओर देखा। देखा केवल इसलिए कि न देखने से अशिष्टता प्रकट होती।

लगा। सामने दीवार पर आना का जीवनाकार चित्र जो कि एक प्रसिद्ध कलाकार-द्वारा अंकित किया गया था, टँगा था। लेविन कभी उस चित्र को विस्मय-विमुग्ध दृष्टि से देखता था और कभी अपने सामने बैठी हुई उसकी सजीव प्रतिमूर्त्ति को। आना को उसके इस चकित भाव से बडी प्रसन्नता हो रही थी। अपने चित्र मे लेविन की दिलचस्पी देखकर आना ने चित्रकला की चर्चा चला दी। एक विशेष चित्रकार की कला को लेकर वाद-विवाद प्रारम्भ हुआ और उसके बाद चित्रकला और साहित्य के विभिन्न रूपो और विशेषताओ पर विचारो का आदान-प्रदान होने लगा। विभिन्न विषयो मे आना की विशेषज्ञता का परिचय पाकर उसके सम्बन्ध मे लेविन का आश्चर्य और अधिक बढा। आना सब समय सहज, शान्त और मधुर स्वर मे बाते करती रही। लेविन उससे मिलने के पहले उसे एक भ्रष्टा नारी के अतिरिक्त और कुछ नही समझता था। पर आज उससे मिलने पर उसके शील-स्वभाव, रग-ढग और बात-व्यवहार का ऐसा प्रभाव उस पर पडा कि उसकी धारणा ही मूलत बदल गई। उसके प्रति एक करुणा-मिश्रित श्रद्धा का भाव लेविन के मन मे जाग पडा।

जब लेविन जाने लगा, तब आना ने बडे स्नेह से उसका हाथ पकडकर मोह-मधुर मुसकान से उसकी ओर देखते हुए कहा—"आपने बातें करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। अपनी पत्नी से कह दीजिएगा कि मै प्रारम्भ से ही उसे स्नेह-दृष्टि से देखती आई हूँ और देखती रहूँगी। यदि वह मेरी वर्तमान परिस्थिति मे मुझे क्षमा नही कर सकती, तो मै चाहती हूँ कि वह मुझे कभी क्षमा न करे। कारण यह है कि मुझे क्षमा करने के लिए उसे उन सब अनुभवो को पार करना होगा, जो मुझे पार करने पड रहे है। भगवान् उसे उन अनुभवो से बचाये, मै केवल इतना ही कह सकती हूँ।" यह कहते हुए आना के मुख की मुसकान एक प्रगाढ विषाद की छाया मे बदल गई थी।

लेविन से कुछ उत्तर देते न बना। उसने सकुचित भाव से कहा—"मै अवश्य ही उससे कहूँगा।"

लौटते समय रास्ते मे उसने आब्लान्सकी से कहा—"वास्तव मे तुम्हारी बहन एक असाधारण नारी है। मै केवल उसकी बुद्धि के लिए ही यह बात नही कह रहा हूँ, बल्कि उसकी सहृदयता मे भी एक अपूर्व विशेषता मैने पाई है। पर वह स्वय भीतर ही भीतर बहुत भयङ्कर रूप से दुख पा रही है, ऐसा जान पडता है।"

के युगों की कठिन साधना आज साकार रूप से सफल हो उठी थी। वह वास्तव में ऐसा अनुभव कर रही थी कि उसके नारीत्व के चरम उद्देश्य की पूर्ति हो गई है। उसके पुलकप्रद आनन्द का घड़ा आकण्ठ भरा हुआ था, और उस घड़े के छलकने की कोई आशंका नहीं दिखाई देती थी।

लेविन के अन्तर मे जो एक निराली अनुभूति जागरित हो रही थी, उसका ठीक-ठीक स्वरूप वह स्वय नही समझ पा रहा था। केवल इतना वह जान गया था कि अपने भाई, निकोलस, की मृत्यु के समय जिस प्रकार का आध्यात्मिक अनुभव उसे हुआ था, बच्चे के जन्म ने उसी से मिलती-जुलती अनुभूति को जगाया है। अन्तर केवल यह था कि पहली अनुभूति शोकमूलक थी और दूसरी हर्षोत्पादिनी। पर दोनो अनुभूतियाँ रात-दिन की साधारण अनुभूतियों से एकदम परे, बहुत ऊँची अथवा बहुत गहरी सतह से उत्थित हुई थी।

पुत्र-जन्म का उत्सव मनाने मे लेविन के सभी सगे-सम्बन्धियो तथा मित्रो ने सहयोग दिया। किटी एक ओर अपने नवजात शिशु के लालन-पोषण मे रत रहकर और दूसरी ओर अपने प्रेम-परायण पति के सुन्दर और सुखद स्नेह-सम्बन्ध से जीवन की सरसता प्राप्त करते हुए स्निग्ध और सुमगल शान्ति के साथ अपना जीवन बिताने लगी। लेविन दिन पर दिन जीवन के गहन मर्म को समझकर पारिवारिक जीवन की शान्ति और शृखला को निभाते हुए, विश्व-जीवन के मूल मे निहित आध्यात्मिकता का महत्त्व समझने की चेष्टा करता चला गया।

"जब तक हम दोनो के बीच में प्रेम बना रहेगा, तब तक मेरी स्थिति निश्चित और व्यवस्थित रहेगी।"

'प्रेम' का उल्लेख होते ही व्रान्सकी मन ही मन कुढ उठा। अब वह इस शब्द से घबराने लगा था। उसने कहा—"तुम्हारी बात मैं मानता हूँ, पर तुम्हारे और भविष्य मे होनेवाले तुम्हारे बच्चो के स्वार्थ के लिए तलाक की आवश्यकता है।"

"इस सम्बन्ध मे तुम निश्चिन्त रहो। भविष्य मे मेरे कोई बच्चा उत्पन्न नहीं होगा। तुम्हे मेरे बच्चों का इतना खयाल है, पर मेरे सम्बन्ध मे तुम कुछ भी नहा सोचते।" वह यह बात भूल गई कि व्रान्सकी ने "तुम्हारे और तुम्हारे बच्चो के लिए" कहा था।

"मुझे सबसे पहले तुम्हारे स्वार्थ का खयाल है। यह बात मैं पहले ही कह चुका हूँ। तुम्हारे हित के लिए ही मैं कहता हूँ कि तुम्हारी वर्तमान अनिश्चित स्थिति किसी प्रकार भी ठीक नही है।"

"हुँह! मेरी 'अनिश्चित स्थिति!' अनिश्चित क्यो? जब तक मेरे प्रति तुम्हारा भाव निष्कपट और सहृदय है, तब तक मेरी स्थिति कभी अनिश्चित नही हो सकती।"

"तुम यह सोचती हो कि मै स्वतन्त्र हूँ।"

"मैं समझी! तुम्हारे ऊपर तुम्हारी मा का बन्धन है, यही न! पर इस सम्बन्ध मे भी तुम निश्चिन्त रहो। मुझे अब इस बात की तनिक भी परवा नही है कि तुम्हारी मा तुम्हारा विवाह किससे करना चाहती है और किससे नहीं। किसी हृदयहीन स्त्री से, चाहे वह तुम्हारी माता हो, चाहे कोई और, मैं किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहती।"

"देखो आना, मैं इस सम्बन्ध में तुमसे यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि मेरी मा के सम्बन्ध मे तुम अनादरसूचक शब्दो को काम में न लाया करो।"

"जिस स्त्री को अपने पुत्र के सुख और मान-मर्यादा का कोई खयाल नहीं है, उसे मैं हृदयहीन के अतिरिक्त और कुछ नही कह सकती।"

"मै फिर तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरी मा के सम्बन्ध में इस तरह की बाते न किया करो!"

"मै अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम अपनी मा के प्रति कितनी श्रद्धा रखते हो! परन्तु तुम्हारी जो कुछ श्रद्धा या प्रेम है, वह केवल

के प्रेम का सुख ही क्या है। कल हम दोनो में फिर मेल हो जावेगा और फिर हम दोनो सुख, शान्ति और प्रेम-पूर्वक रहगे।" सोचते-सोचते आना के मन में उसी क्षण व्रान्सकी से मिलने की प्रबल आकाक्षा जाग पडी।

वह व्रान्सकी के लिखने-पढने के कमरे मे गई। व्रान्सकी निश्चिन्त होकर सो रहा था। आना मोमबत्ती को उसके मुख के पास ले गई। कैसा सुन्दर और प्यारा उसका वह मुख था! वह गद्गद हो उठी और प्रेम के आँसू उसके गालो से होकर अविरल गति से नीचे को बहने लगे। कुछ समय तक वह स्थिर भाव से उसके मुख की ओर देखती रही। फिर उसे बिना जगाये चुपचाप अपने कमरे में वापस चली गई।

बहुत देर बाद आना की आँखें लगी। पर एक भयकर दु स्वप्न देखकर वह कुछ ही समय बाद धडकते हुए हृदय से जाग पडी। सवेरा हो गया था। आना ने निश्चय किया कि व्रान्सकी के पास जाकर उससे मिलकर झगडा समाप्त करे।

पर ज्यो ही वह उसके पास जाने लगी, त्यो ही एक शानदार गाडी दरवाजे पर आकर ठहरी। एक सुन्दरी नवयुवती ने गाडी की खिडकी में से अपना मुख बाहर निकालकर अपने चोबदार को कुछ आदेश दिया। चोबदार ने सामने के दरवाजे की घटी बजाई। आना यह सब दृश्य देख रही थी। थोडी देर बाद उसने देखा कि व्रान्सकी नीचे उतरकर लडकी के पास गया। लडकी ने उसके हाथ में एक पार्सल दिया। व्रान्सकी ने उससे कुछ कहा और मुसकराने लगा। इसके बाद गाडी वापस चली गई। व्रान्सकी ऊपर चला आया।

यह दृश्य देखकर आना की आँखो के आगे से पर्दा साफ अलग हट गया। उसकी मानसिक उत्तेजना फिर एक बार तीव्र हो उठी। कल रात में व्रान्सकी के प्रति जो उत्कट ममता उसके मन में जाग पडी थी वह एकदम तिरोहित हो गई। उसे इस बात पर आश्चर्य होने लगा कि कल वह दिन भर ऐसे व्यक्ति के साथ एक ही घर में क्यो रही! उसी दम वह व्रान्सकी के कमरे में उसे अपने निश्चय की सूचना देने के लिए गई।

उसे देखते ही व्रान्सकी ने कहा—"वह प्रिन्सेस सोरोकिना थी। मा ने उसके हाथ कुछ जरूरी कागज और रुपये भेजे हैं। तुम्हारे सिर का दर्द कैसा है?"

३३

ती कल्पनाओ की भौतिक भयकरता से आतकित होकर मन मन ही मन कहा—"नही, ऐसा नही हो सकता। मैने जो निश्चय किया है, वह ऐसा भयानक है कि उसे पूरा करना मेरे लिए असम्भव है।" यह सोचकर उसने बडे जोर मे घटी बजाई। पर अकेलेपन से वह ऐसी भीत हो उठी थी कि नौकर के आने की प्रतीक्षा न करके स्वय उसके पास चली गई। उसने कहा—'कौन्ट (व्रान्सकी) को "ढूँढो, वह जहाँ कही भी हो।"

नौकर ने उत्तर दिया कि कौन्ट घोडो के अड्डे मे गया हुआ है। आना ने तत्काल एक 'नोट' लिखा, जो इस प्रकार था—"दोष मेरा ही था। शीघ्र वापस चले आओ—मै बहुत घबराई हुई हूँ।" नौकर के हाथ मे उसे देते हुए आना ने कहा—"शीघ्र किसी आदमी को कौन्ट के पास भेजकर यह 'नोट' उसे देने को कहो।"

जब आदमी चला गया, तब आना सोचने लगी—"मेरा पत्र पहुँचने पर वह दौडा चला आवेगा। पर उस छोकरी से बातें करते समय वह जो प्रेमपूर्वक मुसकराया था उसका क्या कारण वह बता सकता है? वह यदि कोई झूठमूठ की बात बनाकर भी मेरे मन को समझा दे, तो ठीक है, पर यदि वह मुझे विश्वास न दिला सके, अथवा स्पष्ट शब्दो मे यह स्वीकार कर बैठे कि वह उस छोकरी को चाहता है, तो उस दशा मे क्या होगा। उस दशा म मेरे लिए केवल एक ही बात करने को रह जायगी, जिससे मै बहुत डरती हूँ।"

उसने घडी में समय देखा और देखकर अपने मन मे कहने लगी—"वह अब आता ही होगा। पर यदि वह न आया? नही, ऐसा कभी नही हो सकता। रोने मे मेरी आँखें सूज उठी है और लाल हो गई है, उन्हे धो लेना चाहिए, जिससे वह मुझे देखकर दुखित न होकर प्रसन्न हो उठे। मैने आज अपने बाल सँवारे है या नही?" अपने सिर पर हाथ लगाकर उसने देखा। "हाँ, हाँ, मैने कघी-चोटी अवश्य की होगी। पर किस समय की? मुझे तो कुछ याद ही नही आता। जरा शीशे मे देखूँ तो सही।"

कपडे पहनकर जब वह जाने को तैयार हुई, तब उसने अपने सामने अपनी नौकरानी अनुश्का को खडी देखा। अनुश्का की आँखो मे अत्यन्त करुणा और समवेदना छलक रही थी। आना रह न सकी। उसके हृदय का रुद्ध क्रन्दन उमड पडा और वह सिसकियाँ भरती हुई बोली—"अनुश्का! तुम्ही बताओ, अब मैं क्या करूँ!" यह कहकर वह हताशभाव से एक आरामकुर्सी पर बैठ गई।

"आप क्यो इस कदर घबराई हुई है आना आर्कडेवना, बहुत जल्दी सब बाते ठीक रास्ते पर आ जावेगी।"

"ठीक है, ठीक है, तुम ठीक कहती हो। मैं जाती हूँ, डाली से मिलने।" यह कहकर वह बाहर चली गई और गाडी मे सवार होकर, उसने कोचवान से आब्लान्सकी के यहाँ चलने को कहा।

मौसम बहुत सुहावना था। सुबह कुछ बूंदाबांदी होने के बाद धूप निकल आई थी। गाडी मे बैठे-बैठे आना का हृदय कुछ हलका हो गया। मृत्यु की भयकर कल्पना, जो इस समय तक उसकी आत्मा को प्रेत की तरह जकडे थी, अब उसे उतनी विकट नही मालूम हो रही थी। वह अब कुछ शान्ति के साथ अपनी परिस्थिति पर विचार करने लगी। वह सोचने लगी—"मैने उसे लिख दिया है कि दोष मेरा ही है, और वह मुझे क्षमा कर दे। क्यो? मैने अपने आत्म-सम्मान को क्यो इस हद तक गिरा दिया? क्या मैं सचमुच उसके बिना जी नही सकती?" यह सोचते हुए वह दूकानो के 'साइनबोर्डों' को पढने लगी—"आफिस और स्टोर्स . दाँत का सर्जन। ठीक है, मैं डाली से सब बाते साफ-साफ कह दूँगी। वह व्रान्सकी से घृणा करती है। मै उससे परामर्श करूँगी कि मुझे क्या करना चाहिए। 'फिलिपोव—रोटीवाला।' मास्को मे केक अच्छे बनते है।" उसे अपने बचपन की याद आई जब वह 'केक' बहुत पसन्द करती थी। "तब मेरा जीवन कितना सुन्दर, सुखद और चिन्ताहीन था। और अब? मुझे तब क्या पता था कि एक दिन मुझे इस हद तक पतित होना पडेगा। वार्निश की दुर्गंध आ रही है। ये लोग क्यो सब समय मकानो में रग पोतते रहते है? इस दूकान में बढ़िया सिलाई होती है।' वह एक बहुत बढ़िया कपड़ा मेरे गाउन के लिए लाया था। उसे सिलाना था। पर उसके लाये कपडे से मुझे क्या वास्ता?" इतने में एक आदमी ने उसे देखकर सिर झुकाकर उसके प्रति सम्मान किया। वह अनुश्का का पति था। वह सोचने लगी—"व्रान्सकी उसे 'हमारा उपग्रह' कहा करता है। पर हमारा' क्यो? मैं अब उसकी क्या होती हूँ! पर डाली अपने मन

डाली ने कहा—"क्यों? अभी से निराश होने का कोई कारण नहीं है।"

"पर मेरे लिए आशा और निराशा सब समान है। कुछ भी हो; अच्छा, यह तो बताओ, किटी मुझे देखकर क्यों छिप गई है?"

"नहीं, नहीं, यह बात नहीं है। उसका बच्चा भी उसके साथ है, इसलिए वह अभी आती ही होगी। यह देखो वह आ पहुँची है।"

डाली भीतर जाकर किटी को समझा-बुझाकर आना से मिलने के लिए राजी कर आई थी। किटी अत्यन्त सकुचित भाव से आना के पास गई, और उसकी ओर उसने अपना हाथ बढ़ाया। उसने लजाते हुए कहा—"मुझे बहुत प्रसन्नता हुई—" वास्तव में आना का सुन्दर, गंभीर और विषाद-म्लान मुख देखकर किटी उसके प्रति अपना सारा विद्वेष भूल गई।

आना बोली—"तुम मुझसे मिलना नहीं चाहती थीं, मैं जानती हूँ। इस बात से मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। अब किसी भी बात से बुरा मानने की आदत मेरी नहीं रही। पर तुम सुस्त जान पड़ती हो। तुम्हारा स्वास्थ्य शायद इस बीच अच्छा नहीं रहा।" इस पर डाली ने किटी की बीमारी और उसके बच्चे की चर्चा चला दी। पर आना इन सब बातों में किसी प्रकार की दिलचस्पी नहीं ले रही थी। रास्ते में उसने सोचा था कि वह डाली से हृदय की सब बातें खोलकर कहेगी, पर अब एक भी बात कहने की इच्छा उसके मन में नहीं रह गई थी। उसे ध्रुव विश्वास हो गया था कि उसके भीतर की दशा की यथार्थता को कोई समझ नहीं सकता, इसलिए इस सम्बन्ध में कोई भी बात मुँह से निकालना व्यर्थ है।

जब वह लौट चलने के विचार से उठ खड़ी हुई, तो उसने किटी की ओर देखकर कहा—"तुमसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। तुम्हारे विषय में मैं बहुत-से व्यक्तियों से बहुत कुछ सुन चुकी हूँ। तुम्हारे पति ने भी मुझसे तुम्हारी चर्चा की थी। वे मुझसे मिलने आये थे। मैं उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रसन्न हुई। वे आज-कल हैं कहाँ?"

किटी को यह ताड़ने में देर न लगी कि आना उसके हृदय को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से ही इस प्रकार की बातें कर रही है। फिर भी उसने शान्त भाव से उत्तर दिया—"वे आजकल देहात गये हुए हैं।"

"उन्हें मेरी याद दिलाना। अवश्य! भूलना मत!"

३४

लाना गाडी मे बैठकर जब वापस जाने लगी, तब उसका चित्त पहले से अधिक उदास हो गया था। डाली के यहाँ आने पर किटी ने उसने मुँह चुराना चाहा था, इस बात से उसके हृदय मे अपमान का काँटा नये सिरे से चुभने लगा था। वह सोचने लगी—"डाली और किटी, दोनो मुझे इस तरह देख रही थी जैसे मै कोई घृणित कीट होऊँ। और यह आदमी दूसरे आदमी से इस प्रकार घुलकर बाते करने में क्या सुख पा रहा है? अपने मन की बात दूसरे को समझा सकना क्या सम्भव है? अच्छा हुआ जो डाली से मैने अपने विषय की कोई बात नही कही। सब व्यर्थ है। मेरी दुर्गति से परिचित होकर वह मन ही मन प्रसन्न होती और मेरी हँसी उडाती। किटी और भी अधिक आनन्दित होती। वह मुझसे ईर्ष्या करती है और घृणा भी। मुझे वह एक बाजारू स्त्री समझने लगी है। यदि मै ऐसी होती, तो उसके पति को फाँसने मे मुझे देर न लगती। मै अभी चाहूँ तो ऐसा कर सकती हूँ, और वह टापती रह जायगी। पर वास्तव मे मै इस हद तक पतित नहीं हूँ, फिर भी व्रान्सकी के कारण मेरा घोर नैतिक पतन हो चुका है। यह कौन है जो मुझे देखकर सिर पर से टोपी उतार रहा है? वह मुझे कोई दूसरी स्त्री समझकर भ्रम में पड गया है। उसने सोचा था कि वह मुझे जानता है। सच बात तो यह है कि मुझे ससार मे कोई भी नही जानता। मै स्वय अपने को नही जान पाई हूँ। और ये दो लडके इस गन्दे 'आइस-क्रीम' को खाते हुए इतने प्रसन्न क्यो हो रहे हैं? ठीक है, ससार मे प्रत्येक व्यक्ति कुछ मीठी या चटपटी चीज चाहता है। चाकलेट की मिठाई न मिले, तो गन्दा 'आइस-क्रीम' ही सही। किटी का भी यही हाल रहा। उसे व्रान्सकी न मिल सका, तो लेविन से ही सतोष करना पडा। ससार के सब लोग एक-दूसरे से घृणा करते है, दूसरे की दुर्दशा या विनाश देखकर प्रसन्न होते है। यह देखा, ये गाडीवाले किस तरह एक दूसरे को गालियाँ दे रहे है। यही दशा हम सबकी है। गिर्जे की घटी बज रही है। क्यो? लोग प्रार्थना के लिए गिर्जे में जावेंगे? प्रार्थना के लिए! हुँ! सब झूठे और

बात की खबर नही है कि इस व्यक्ति ने किटी को किस प्रकार धोखा दिया, और—और—मेरे साथ कैसा व्यवहार किया।"

रेलगाडी का समय हो चला था। भोजन तैयार था, पर उसने उसे अच्छी तरह से सूँघा तक नही। हडवडी के साथ उसने अपने 'हैण्डवेग' मे यात्रा के लिए आवश्यक कुछ चीजें रख ली। उसके मन मे अस्पष्ट रूप से यह विश्वास जम गया था कि अव वह मास्को लौटकर नही आवेगी। व्रान्सकी की मा के यहाँ जाकर व्रान्सकी की सब बातो की पोल खोलने के बाद वह कहाँ जावेगी, यह वह स्वय नहीं जानती थी।

बाहर गाडी तैयार थी। आना उस पर सवार हुई। उसके मना करने पर भी पीटर नाम का एक नौकर भी गाडी के 'बाक्स' मे बैठकर उसके साथ हो लिया। कोचवान गाडी को तेज चाल से हाँकता हुआ ले चला। रास्ते में एक शराबी को पकडकर पुलिस के दो सिपाही लिये चले जा रहे थे। शराबी धक्के खा रहा था और ठीक तरह से खडा नहीं हो पाता था। आना सोचने लगी—"इस शराबी ने शराब पीने के पहले अवश्य ही यह सोचा होगा कि वह सब दु खो को भूलकर एक अपूर्व मधुमय सुख का अनुभव करेगा। यही भूल व्रान्सकी ने और मैंने की थी जब हम दोनो एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होकर प्रेम-रस पान करने के लिए अत्यन्त अधीर और उतावले हो उठे थे। वह क्यो मुझ पर आसक्त हुआ था? क्यो मेरे नियमित जीवन से घसीटकर उसने मुझे इस दलदल में फँसाया? सच बात यह थी कि वह प्रेम से उतना प्रेरित नही हुआ था, जितना अपने अहभाव की तृप्ति के लिए उत्सुक हुआ था। वह एक अच्छे कुल-शील और मान-मर्यादावाली विवाहिता नारी को अपने वश में करके विजयी बनने के लिए इच्छुक था, और उसकी इस इच्छा में उसे पूरी सफलता मिल गई। उसके हृदय में प्रेम का भाव अवश्य था, नहीं तो मैं क्यो आकर्षित होती! पर प्रेम की पिपासा की अपेक्षा अपने अहभाव की तृप्ति की आकाक्षा उसके मन मे अधिक प्रबल थी। वह इस बात के लिए गर्व का अनुभव किया करता था और लोगो के आगे शेखी बघारता था कि मेरे समान नारी पूर्णरूप से उसके वश में हो गई है। अब यह भूतकाल की बात हो गई है। अब उसका वह गर्व समाप्त हो चला है। अब वह मुझसे उकता गया है। अब भी मेरे प्रति उसके हृदय मे प्रेम का भाव अवशिष्ट अवश्य है, पर जैसा कि अँगरेज लोग कहा करते हैं, The zest is gone! प्रेम का सारा मजा

भाव से चलने लगी। भीतर जाकर वह एक कोच पर बैठ गई। तरह-तरह की चिन्तायें उसके मस्तिष्क में छाया चित्रो के समान मँडरा रही थीं। वेटिंग-रूम के भीतर आने-जानेवाले व्यक्तियो को देखकर वह मन ही मन खीझ उठती थी। स्टेशन का प्रत्येक व्यक्ति उसे छाया-मूर्त्ति के समान लगता था।

बीच-बीच में गहन मानसिक अन्धकार में भी उसे आशा की झलक दिखाई देती थी। अब भी जीवन नये रूप मे, सुन्दर ढग से चल सकता है, व्रान्सकी अपनी पिछली भूलें स्वीकार करके उसे नये सिरे से प्यार कर सकता है, इस कल्पना पर विश्वास करने की इच्छा उसके मन मे अस्पष्ट रूप से जाग पडती थी। टिमटिमाते हुए दीये की तरह कभी उसकी आशा का प्रदीप एकदम मन्द पड जाता था और कभी पूर्ण ज्योति से जल उठता था। पर उसका अन्तर्मन कह रहा था कि दीये का तेल अब समाप्ति पर है, और समय रहते नया तेल मिलने की सभावना नही के बराबर है।

जब गाडी दूसरे स्टेशन पर ठहरी, तब आना उतर पडी। प्लेट-फार्म पर यात्रियो की भीड से इस प्रकार बच-बचकर वह चलने लगी, जैसे वे सब कोढी हो। युवकगण सतृष्ण आँखो से उसकी ओर देख रहे थे। आना यह स्मरण करने की चेष्टा करने लगी कि वह उस स्टेशन मे क्यो उतरी है। काफी देर बाद उसे याद आया कि वह यह जानने के लिए उतरी है कि व्रान्सकी ने उसके 'नोट' का कोई उत्तर भेजा है या नही। यदि उत्तर न भेजा हो, तो उसे फिर गाडी में सवार होकर चली जाना होगा, यह सोचकर उसने एक कुली को रोका और उससे पूछा कि उस स्टेशन मे कौन्ट व्रान्सकी के पास से कोई आदमी एक पत्र लेकर आया है या नहीं।

"कौन्ट व्रान्सकी ? हाँ, ठीक तो है, अभी उनका एक आदमी यहाँ प्रिन्सेस मोरोकिना से मिलने के लिए आया तो था। उस आदमी की सूरत-शक्ल किस तरह की थी, यह क्या आप बता सकती है ?"

इतने मे वह आदमी आना को दिखाई दिया, जिसे आना ने व्रान्सकी के पास भेजा था। आना को देखकर वह परम प्रसन्नता से मुसकराता हुआ दौडकर उसके पास आ पहुँचा, और उसने उसके हाथ में एक पत्र दिया। आना ने काँपते हुए हाथो से पत्र खोलकर पढा। उसमें लिखा था—"मुझे बहुत खेद है कि तुम्हारा नोट समय पर मुझे नही मिला। अब मैं दस बजे लौटकर आऊँगा।"

आना ने एक विकृत मुसकान अपने मुख पर झलकाते हुए मन मे कहा—"ठीक है। मैं जानती थी।" इसके बाद पत्र लानेवाले आदमी को लक्ष्य करके उसने कहा—"अच्छी बात है, तुम घर को वापस चले जाओ।" और यह कहकर वह प्लेटफार्म से होकर सीधे आगे को चली गई। कुछ मनचले युवको ने अभी तक उसका पीछा करना नही छोडा था। वे उसकी ओर देखते हुए हँसते-बोलते और रग-रसपूर्ण परिहास की बाते करते चले जा रहे थे। दो मजदूरश्रेणी की स्त्रियाँ बडे गौर से उसकी ओर देख रही थी और उसके कपडे मे लगे हुए चमकदार गोटे को देखकर आपस में कह रही थी—"यह असली है!" पर आना का ध्यान न किसी व्यक्ति की ओर था न किसी की बात की ओर। स्टेशनमास्टर सामने की ओर से चला आ रहा था। उसने आना को देखकर पूछा कि वह उसी गाडी से जाना चाहती है या नही। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह आगे को बढती चली गई। जब वह काफी दूर चली गई, तब उसने अपने मन में

उसे फिर नीचे गिरा दिया। वह समझ गई कि अब बचने की चेष्टा एकदम निष्फल है। कोई उपाय न देखकर उसने कहा—"भगवान्, मुझे मेरे सब कर्मों के लिए क्षमा कर!" . अपने प्राणों के जिस प्रदीप के प्रकाश मे वह आज तक चिन्ता, कपट, विश्वासघात और दुःख के पन्नो से पूर्ण जीवन-रूपी पुस्तक को पढ रही थी वह अकस्मात् अत्यन्त उज्ज्वल रूप में जगमगा उठा, और सारे जीवन में जो बातें उसके लिए धुंधली रह गई थी वे एक बार स्पष्ट रूप से प्रभासित हो उठी। इसके बाद शीघ्र ही वह दीपक मन्द पड़ गया, टिमटिमाने लगा और फिर सदा के लिए बुझ गया।

'। माता मास्को आप लोगो को आशीर्वाद देती है। जय हो।
य हो।"

दूसरी घटी बजी और फिर तीसरी। गाडी चलने लगी। दूसरे
शन पर जब गाडी ठहरी, तब काज़्निशेव बाहर निकलकर प्लेटफार्म
र टहलने लगा। व्रान्सकी के डिब्बे के पास पहुँचने पर उसने देखा कि
न्टेस व्रान्सकाया (व्रान्सकी की मा) खिडकी से बाहर झाँक रही
कौन्टेस ने उँगली के सकेत से उसे अपने पास बुलाया। व्रान्सकी उस
य वहाँ नही था। कौन्टेस ने कहा—"आप जानते है, मैं कुर्स्क
अपने बेटे को पहुँचाने जा रही हूँ?"

"जी हाँ, मैने सुना है। आपको और आपके बेटे को मैं बधाई देता
सचमुच आपके लडके ने इस युद्ध मे भाग लेने की इच्छा प्रकट
के बडा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।"

"ठीक है। पर जो विपत्ति उस पर टूट पडी थी, उसके बाद इसके
रिक्त वह और कर ही क्या सकता था?"

"वास्तव में वह दुर्घटना बहुत भयकर थी!"

"आप नही जानते कि मुझे कितना कष्ट सहन करना पडा है। पर
भीतर आ जाइए।" काज़्निशेव जब भीतर आकर कौन्टेस की
में बैठ गया, तब कौन्टेस ने फिर कहा—"छ सप्ताह तक मेरा
ा किसी से एक शब्द भी न बोला। कुछ दिनो तक उसने कुछ
तक नही। उसके पास के सब अस्त्र छीनकर रख लिये गये
ाकि वह आत्म-हत्या न करने पावे। उसके पहले एक बार वह
दुष्टा स्त्री की खातिर आत्महत्या करने की चेष्टा कर चुका था।
तभागिनी नारी जैसी नीच थी, वैसा ही निन्द्य उपाय भी उसने
मृत्यु के लिए चुना।"

"पर कौन्टेस, क्षमा कीजिएगा, इस विषय पर विचार करने का
ो और हमको कोई अधिकार नही है। फिर भी मैं आपके
का अनुभव कर सकता हूँ।"

"कुछ कहने की बात नही है। मैं अपने 'स्टेट' मे थी और
लडका मेरे यहाँ आया हुआ था। एक आदमी उसके पास एक
कर आया। उसने उसका उत्तर लिख भेजा। हम लोगो को
त की तनिक भी खबर नही थी कि वह स्वय स्टेशन पर आई
है। सध्या को ज्यो ही मैं अपने कमरे के भीतर गई, त्यों
ी नौकरानी ने मुझसे क [illegible] ने कटकर
त्या कर ली है। [illegible] गई कि

हैं। माता मास्को आप लोगो को आशीर्वाद देती है। जय हो! जय हो!"

दूसरी घटी बजी और फिर तीसरी। गाडी चलने लगी। दूसरे स्टेशन पर जब गाडी ठहरी, तब काज़्निशेव बाहर निकलकर प्लेटफार्म पर टहलने लगा। व्रान्सकी के डिब्बे के पास पहुँचने पर उसने देखा कि कौन्टेस व्रान्सकाया (व्रान्सकी की मा) खिडकी से बाहर झाँक रही है। कौन्टेस ने उँगली के सकेत से उसे अपने पास बुलाया। व्रान्सकी उस समय वहाँ नही था। कौन्टेस ने कहा—"आप जानते है, मैं कुर्स्क तक अपने बेटे को पहुँचाने जा रही हूँ?"

"जी हाँ, मैंने सुना है। आपको और आपके बेटे को मैं बधाई देता हूँ। सचमुच आपके लडके ने इस युद्ध मे भाग लेने की इच्छा प्रकट करके बडा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।"

"ठीक है। पर जो विपत्ति उस पर टूट पडी थी, उसके बाद इसके अतिरिक्त वह और कर ही क्या सकता था?"

"वास्तव मे वह दुर्घटना बहुत भयकर थी!"

"आप नही जानते कि मुझे कितना कष्ट सहन करना पडा है! पर आप भीतर आ जाइए।" काज़्निशेव जब भीतर आकर कौन्टेस की बगल मे बैठ गया, तब कौन्टेस ने फिर कहा—"छ सप्ताह तक मेरा लडका किसी से एक शब्द भी न बोला। कुछ दिनो तक उसने कुछ खाया तक नही। उसके पास के सब अस्त्र छीनकर रख लिये गये थे, ताकि वह आत्म-हत्या न करने पावे। उसके पहले एक बार वह उस दुष्टा स्त्री की खातिर आत्महत्या करने की चेष्टा कर चुका था। वह हतभागिनी नारी जैसी नीच थी, वैसा ही निन्द्य उपाय भी उसने अपनी मृत्यु के लिए चुना।"

"पर कौन्टेस, क्षमा कीजिएगा, इस विषय पर विचार करने का आपको और हमको कोई अधिकार नही है। फिर भी मैं आपके कष्ट का अनुभव कर सकता हूँ।"

"कुछ कहने की बात नही है। मैं अपने 'स्टेट' मे थी और मेरा लड़का मेरे यहाँ आया हुआ था। एक आदमी उसके पास एक पत्र लेकर आया। उसने उसका उत्तर लिख भेजा। हम लोगों को इस बात की तनिक भी खबर नहीं थी कि वह स्वय स्टेशन पर आई हुई है। सध्या को ज्यो ही मैं अपने कमरे के भीतर गई, त्यो ही मेरी नौकरानी ने मुझसे कहा कि एक स्त्री ने रेलगाडी से कटकर आत्महत्या कर ली है। विश्वास मानिए, मैं तत्काल समझ गई कि

ऐसा है जिसके लिए जीना या मरना दोनो श्रेयस्कर है। भगवान् आपको सफलता प्रदान करें, मैं हृदय से यह प्रार्थना करता हूँ।"

व्रान्सकी ने शान्त स्वर मे कहा—"ठीक है। मैं एक साधन के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकता हूँ। पर एक मनुष्य के रूप मे अब मेरी कोई सत्ता नही रही। मैं अब नष्ट हो चुका हूँ।"

व्रान्सकी के किसी एक दाँत मे तीव्र वेदना हो रही थी, इसलिए वह अधिक बोल नही पाता था। काजनिवेश के चले जाने पर वह कुछ समय तक एकटक रेल की पटरियो को देखता रहा। सहसा वह अपने दाँत की पीडा को भूल गया और एक दूसरी ही पीडा उसके मन मे जाग पडी। पटरियो को देखकर अकस्मात् आना की स्मृति फिर एक बार उसके मन मे अत्यन्त तीव्रता से उमड उठी। उसे वह दृश्य याद आया जब रेलवे शेड में एक मेज पर आना की लाश सैकडो अपरिचित व्यक्तियो की दृष्टि के सामने बेपर्दा पडी हुई थी। उसके सिर पर कोई चोट नही आई थी। उसकी निश्चल आँखो और स्थिर ओठो पर एक करुण और साथ ही भयावह भाव व्यक्त हो रहा था, जैसे वह व्रान्सकी के आगे यह वाक्य फिर दुहराने को तैयार हो—"तुम्हे पछताना होगा!" उन दोनो के बीच जो अन्तिम झगडा हुआ था, उसकी याद उसके हृदय में हथौडे मारने लगी। वह उस दिन की सुखद स्मृति को मन मे उभाडने की चेष्टा करने लगा, जब रेलवे स्टेशन में प्रथम बार आना का अपरूप सौन्दर्य और अपूर्व रहस्यमय रूप देखकर वह आत्मविभोर हो उठा था। पर वह सुखद स्मृति अब सदा के लिए विषमय हो चुकी थी, और उसकी मानसिक आँखो के आगे आना का निष्करुण और घोर प्रतिहिंसा-परायण रूप ही नाच रहा था, जिसने उसे विजयिनी बना दिया था और व्रान्सकी को चिर-जीवन के लिए निष्फल पश्चात्ताप और व्यर्थ विलाप के लिए एकाकी छोड़ दिया था। व्रान्सकी अपने को सँभाल न सका, वह रो पडा।

थोडी देर बाद गाड़ी स्टेशन से चल पडी।

समाप्त

ऐसा है जिसके लिए जीना या मरना दोनो श्रेयस्कर है। भगवान् आपको सफलता प्रदान करें, मैं हृदय से यह प्रार्थना करता हूँ।"

व्रान्सकी ने शान्त स्वर मे कहा—"ठीक है। मैं एक साधन के रूप मे उपयोगी सिद्ध हो सकता हूँ। पर एक मनुष्य के रूप मे अब मेरी कोई सत्ता नही रही। मैं अब नष्ट हो चुका हूँ।"

व्रान्सकी के किसी एक दाँत में तीव्र वेदना हो रही थी, इसलिए वह अधिक बोल नही पाता था। काज़्निवेश के चले जाने पर वह कुछ समय तक एकटक रेल की पटरियो को देखता रहा। सहसा वह अपने दाँत की पीडा को भूल गया और एक दूसरी ही पीडा उसके मन में जाग पडी। पटरियो को देखकर अकस्मात् आना की स्मृति फिर एक बार उसके मन में अत्यन्त तीव्रता से उमड उठी। उसे वह दृश्य याद आया जब रेलवे शेड में एक मेज़ पर आना की लाश सैंकडो अपरिचित व्यक्तियो की दृष्टि के सामने बेपर्दा पडी हुई थी। उसके सिर पर कोई चोट नही आई थी। उसकी निश्चल आँखो और स्थिर ओठो पर एक करुण और साथ ही भयावह भाव व्यक्त हो रहा था, जैसे वह व्रान्सकी के आगे यह वाक्य फिर दुहराने को तैयार हो—"तुम्हे पछताना होगा!" उन दोनो के बीच जो अन्तिम झगडा हुआ था, उसकी याद उसके हृदय में हथौडे मारने लगी। वह उस दिन की सुखद स्मृति को मन मे उभाडने की चेष्टा करने लगा, जब रेलवे स्टेशन में प्रथम बार आना का अपरूप सौन्दय और अपूर्व रहस्यमय रूप देखकर वह आत्मविभोर हो उठा था। पर वह सुखद स्मृति अब सदा के लिए विषमय हो चुकी थी, और उसकी मानसिक आँखो के आगे आना का निष्करुण और घोर प्रतिहिंसा-परायण रूप ही नाच रहा था, जिसने उसे विजयिनी बना दिया था और व्रान्सकी को चिर-जीवन के लिए निष्फल पश्चात्ताप और व्यर्थ विलाप के लिए एकाकी छोड दिया था। व्रान्सकी अपने को सँभाल न सका, वह रो पडा।

थोडी देर बाद गाड़ी स्टेशन से चल पडी।

समाप्त

बुभुक्षा

इस पुस्तक के लेखक है— नोबेल-पुरस्कार-विजेता जोहन बोवर। मनुष्य किस प्रकार आध्यात्मिक आनंद पर विजय प्राप्त कर सकता है, इसी का निदर्शन इस उपन्यास मे हुआ है। इसका नायक परिस्थितियो की प्रतिकूलता और भाग्य के विपर्यय से युद्ध करता हुआ अन्त मे सच्चे आध्यात्मिक आनंद की खोज करने मे सफल होता है। उसके मार्ग मे कठिन से कठिन बाधायें आती है, यहाँ तक कि उसकी प्रिय पुत्री की दु:खद मृत्यु हो जाती है, तब भी वह अपने पथ से विचलित नहीं होता। अन्ततोगत्वा वह जीवन और मृत्यु तथा मानव-जीवन मे घटित होनेवाली घटनाओ को स्वायत्त कर सकने में समर्थ हो जाता है। अध्यात्म और उपन्यास का मणि-कांचन-संयोग विश्व-साहित्य मे इस प्रकार का शायद ही कहीं दृष्टिगोचर हो।